



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 25]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 2, 2012/माघ 13, 1933

No. 25]

NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 2, 2012/MAGHA 13, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 2 फरवरी, 2012

अंतिम जांच परिणाम

विषय : इस्त्राइल तथा ताइवान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "सभी ग्रेडों एवं सभी सांद्रणों के फास्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/44/2010-डीजीएडी.—यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) एवं यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति-निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए; इस्त्राइल तथा ताइवान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "सभी ग्रेडों एवं सभी सांद्रणों के फास्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" के आयातों पर 25 अक्टूबर, 2011 की अधिसूचना और दिसम्बर, 2011 के उसके शुद्धि-पत्र के तहत पाटनरोधी शुल्क को लगाने की सिफारिश की थी ।

2. उक्त अधिनियम तथा पाटनरोधी नियमावली को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतद्वारा प्राधिकारी कहा गया है) को पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत इस्त्राइल तथा ताइवान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "सभी ग्रेडों एवं सभी सांद्रणों के फास्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए मैसर्स गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि., बड़ौदा (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ ।

3. और यतः आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने कथित पाटन की मौजूदगी, सीमा तथा प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की संस्तुति करने, जिसे यदि लगाया जाता है तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी, के उद्देश्य से सम्बद्ध देशों के मूल से अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए दिनांक 4 फरवरी, 2011 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था ।

हुए दिनांक 4 फरवरी, 2011 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था ।

4. प्राधिकारी ने इस्राइल तथा ताइवान के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "सभी ग्रेडों एवं सभी सांद्रणों के फास्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" के आयातों पर 25 अक्टूबर, 2011 की अधिसूचना और 20 दिसंबर, 2011 के उसके शुद्धिपत्र के तहत अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की ।

ख. प्रक्रिया

5. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:—

- i. प्राधिकारी ने दिनांक 4 फरवरी, 2011 की जांच शुरुआत अधिसूचना की प्रति भारत में सम्बद्ध देशों के दूतावास/आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों, सम्बद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को भिजवाई थी और उनसे जांच शुरुआत अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित में भिजवाने का अनुरोध किया था ।
- ii. उपर्युक्त नियमावली के नियम 6(3) के अनुसरण में प्राधिकारी ने आवेदन के अगोपनीय पाठ की प्रति ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में सम्बद्ध देशों के दूतावास/आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र को उपलब्ध कराई थी ।
- iii. उपर्युक्त नियमावली के नियम 6(2) के अनुसरण में भारत में सम्बद्ध देशों के दूतावास/आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र को जांच के शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे अपने-अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समयसीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत करने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भिजवाए गए पत्र एवं प्रश्नावली की एक-एक प्रति भी उन्हें ज्ञात निर्यातकों के नाम तथा पत्रों के साथ भिजवाई गई थी ।
- iv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसरण में प्राधिकारी ने प्रासंगिक सूचना प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली की प्रतियां सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित निर्यातकों को भिजवाई थी :

| क्र.सं. | उत्पादक / निर्यातक का नाम |
|---------|---|
| 1 | मेसर्स ग्वोहुआ केमिकल ताइवान, |
| 2 | मेसर्स ताइवान एलम केमिकल इंडस्ट्रीज कं. लि0, ताइवान |
| 3 | मेसर्स ग्रीन माउंटेन कं., ताइवान |
| 4 | मेसर्स यिहैर केम एवं हौर्ट कं. लि0, ताइवान |

| | |
|---|---|
| 5 | मेसर्स साउथ फ्लावर ट्रेडिंग कं. लि०, ताइवान |
| 6 | मेसर्स कोर केमिकल इंक., ताइवान |
| 7 | मेसर्स इस्राइल केमिकल्स लि०, इस्राइल |

v. उपर्युक्त सूचना के उत्तर में सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों/एसोसिएशनों ने उत्तर प्रस्तुत किए हैं :

1. मेसर्स येओऊ एफए केमिकल कं. लि०, ताइवान
2. मेसर्स इस्राइल केमिकल्स लि०., इस्राइल
3. मेसर्स हाइफोर्स केमिकल्स कारपोरेशन, ताइवान ।

vi. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसरण में आवश्यक सूचना प्रदान करने का अनुरोध करते हुए भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावली की प्रतियां भिजवाई गई थीं :

| क्र. सं. | निर्यातकों/आयातकों के नाम |
|----------|--|
| 1 | मेसर्स अल्ब्राइट एंड विल्सन केमिकल्स लि०, मुम्बई |
| 2 | मेसर्स भविता केमिकल्स प्रा. लि०, महाराष्ट्र |
| 3 | मेसर्स सी जे शाह एंड कं., मुम्बई |
| 4 | मेसर्स जयदीप एजेंसीज, मुम्बई |
| 5 | मेसर्स फार्माकेम ट्रेडर्स प्रा. लि०, प० बंगाल |
| 6 | मेसर्स बेट्ज्डीयरबोर्न इंडिया प्रा. लि०, कर्नाटक |
| 7 | मेसर्स फटीलाइजर्स एंड केमिकल्स, केरल |
| 8 | मेसर्स मद्रास फटीलाइजर्स लि०, मनाली मद्रास |
| 9 | मेसर्स एक्सेल इंडस्ट्रीज लि०, महाराष्ट्र |
| 10 | मेसर्स हिंद लीवर केमिकल्स लि०, पंजाब |
| 11 | मेसर्स रिलायंस इंडस्ट्रीज लि०, महाराष्ट्र |
| 12 | मेसर्स कारबोरेण्डम यूनिवर्सल लि०, चेन्नै |
| 13 | मेसर्स टोनिरा फार्मा लि०, बड़ौदा |
| 14 | मेसर्स बर्जर आटो एंड इंडस्ट्रियल कोट, न्यू दिल्ली |
| 15 | मेसर्स एलजी इलेक्ट्रॉनिक इंडिया प्रा. लि०, न्यू दिल्ली |
| 16 | मेसर्स सुदीप फार्मा लि०, बड़ौदा |
| 17 | मेसर्स मंगलोर केमिकल्स एंड फटीलाइजर्स लि०, कर्नाटक |
| 18 | मेसर्स आईसीआई इंडिया लि०, मद्रास |
| 19 | मेसर्स भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि०, न्यू दिल्ली |
| 20 | मेसर्स तोसिफ सिल्कटेक्स, कोलकाता |

| | |
|----|---|
| 21 | मेसर्स टोरेट फार्मास्यूटिकल्स लि०, बॉम्बे |
| 22 | मेसर्स स्टार केमिकल्स प्रा. लि०, मुम्बई |
| 23 | मेसर्स पंजाब केम एंड क्राफ प्रोटेक्शन लि०, मुम्बई |
| 24 | मेसर्स सोलारिस केमटेक लि०, कर्नाटक |

vii. कुछेक हितबद्ध पक्षकारों से प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत करने हेतु समय बढ़ाने का अनुरोध किया गया था । अधिकारी ने समयसीमा को ध्यान में रखते हुए समय बढ़ाने हेतु स्वीकृति प्रदान की थी ।

viii. भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित आयातकों से आयातक प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त हुए हैं :

1. मेसर्स केम टॉल राय इंडिया लि०

ix. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में हितबद्ध पक्षकारों को निरीक्षणार्थ उपलब्ध कराया था ।

x. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के दौरान सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों का ब्यौरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था ।

xi. यह अभिनिश्चित करने के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने हेतु पर्याप्त होगा, सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर आवेदक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के विनिर्माण की इष्टतम लागत एवं बिक्री की लागत ज्ञात की गई ।

xii. जांच दिनांक 1 अप्रैल, 2009 से 30 जून, 2010 (15 माह) (पीओआई) की अवधि हेतु की गई । क्षति के विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच हेतु अप्रैल 2006 – मार्च 2007, अप्रैल 2007–मार्च 2008, अप्रैल 2008–मार्च 2009 की अवधि तथा जांच अवधि को शामिल किया गया ।

xiii. अधिनियम एवं पाटनरोधी नियमावली को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने 25 अक्टूबर, 2011 की अधिसूचना सं. 14/44/2010-डी जी ए डी और 20 दिसंबर, 2011 के उसके शुद्धिपत्र के तहत संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की ।

xiv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने 30 नवंबर, 2011 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान किया। जिन पक्षकारों ने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार व्यक्त किए थे, उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का अनुरोध किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों को विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों का उत्तर प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया गया था।

xv. हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर इस अंतिम जांच परिणाम में, जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।

xvi. घरेलू उद्योग तथा सहयोगी उत्पादक/निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना/आंकड़ों के संबंध में आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया था।

xvii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा विचारित आवश्यक तथ्यों का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर इस अंतिम जांच परिणाम में, जहां संगत पाया गया है, विधिवत विचार किया गया है।

xviii. जहां तक गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता का संबंध है, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना की जांच की गई थी संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां आवश्यक था, गोपनीयता के दावे को स्वीकार किया और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और इसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया गया। जहां कहीं संभव था, गोपनीय आधार पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकार से गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था।

xix. जहां कहीं किसी हितबद्ध पक्षकार ने जांच के दौरान आवश्यक सूचना प्रस्तुत करने से मना किया अथवा उसे अन्यथा प्रस्तुत नहीं किया अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली, वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज किए हैं।

xx. इस अधिसूचना में *** एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना है और इसे प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत गोपनीय माना है।

ग. प्रकटन विवरण के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

6. प्रकटन विवरण जारी होने के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने संक्षेप में निम्नलिखित टिप्पणियां की हैं:

प्रकटन विवरण के पश्चात टिप्पणियां

मै. आई सी एल-रोटेम की ओर से टिप्पणियां

मै. आई सी एल-रोटेम ने संक्षेप में निम्नलिखित टिप्पणियां की हैं :-

प्रक्रिया

- मै. जी ए सी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है, परंतु माननीय प्राधिकारी ने जी ए सी एल की फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करने की अक्षमता के बारे में उपर्युक्त तर्कों पर विचार नहीं किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राधिकारी ने केवल "तथाकथित" फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन के बारे में पी सी सी पी एल द्वारा दिए गए विवरणों पर ही भरोसा किया है। यदि कोई सूचना है तो पी सी सी पी एल द्वारा विनिर्देशन प्रस्तुत किया गया है जिसकी भागीदारी आई सी एल-रोटेम के साथ नहीं की गई है ताकि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन के उनके दावे का पर्याप्त खंडन किया जा सके।
- प्राधिकारी ने फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के बारे में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा निर्धारित मानकों पर भी विचार नहीं किया है जो फॉस्फोरिक एसिड उक्त बी आई एस मानकों के अनुरूप नहीं होता है उसे फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के रूप में श्रेणीबद्ध नहीं किया जा सकता और परिणामतः उसकी खपत और उपयोग खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य तेल निष्कर्षण अथवा भेषज उद्योग में नहीं हो सकता।
- आयातकों के पास फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात करने के अलावा, कोई विकल्प नहीं है।
- प्राधिकारी यह नोट करें कि आई सी एल-रोटेम के फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात और उपयोग केवल तब तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के स्थान पर होता है जहां जी ए सी एल का तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड खपत योग्य उपयुक्त नहीं पाया गया हो। आई सी एल-रोटेम द्वारा निर्यातित फॉस्फोरिक एसिड की गुणवत्ता (तकनीकी ग्रेड लेबल के अंतर्गत) फॉस्फोरिक एसिड के ऐसे उपभोक्ताओं के लिए नगण्य है और यह जी ए सी एल द्वारा उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के साथ किसी भी रूप में प्रतिस्पर्धा नहीं करता है।
- जिस उत्पाद का घरेलू उद्योग उत्पादन नहीं करता है वह कारणात्मक संबंध के अभाव में किसी पाटनरोधी जांच का भाग नहीं बन सकता। आई सी एल-रोटेम क्षति, प्रारंभिक जांच परिणामों के उत्तर, सार्वजनिक सुनवाई पर लिखित अनुरोधों और इस संबंध में उत्तर संबंधी अनुरोधों पर भरोसा करती है। संक्षिप्तता की वजह से इन्हें दोहराया नहीं जा रहा है। अतः यह निष्कर्ष निकालना त्रुटिपूर्ण है कि यदि जी ए सी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है तो प्राधिकारी इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य नहीं है कि क्या फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की मांग जी ए सी एल द्वारा पूरी की जाएगी।

विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु (विस्तारित उत्पाद क्षेत्र)

- जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना और प्रारंभिक जांच परिणाम दोनों में विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र काफी अधिक है और इसे इतना अधिक व्यापक रूप में परिभाषित किया गया है ताकि दो अलग-अलग ग्रेडों के दो पूर्णतः भिन्न उत्पादों को शामिल किया जा सके ।
- "समान उत्पाद" का अर्थ इस बात पर निर्भर रहते हुए अलग-अलग होता है कि क्या इसका उपयोग पाटन निर्धारण अथवा क्षति निर्धारण के लिए किया गया है । दोनों की मामलों में दोनों उत्पादों को समनुरूप होना चाहिए । यह तर्क दिया गया है कि जो उत्पाद मात्र प्रतिस्पर्धा करते हैं वे "समान उत्पाद" नहीं हो सकते । अतः आई सी एल-रोटेम द्वारा उत्पादित और निर्यातित फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं करता है और इसलिए इसे समान उत्पादों की परिभाषा से अलग रखा जाना चाहिए भले ही वे प्रतिस्थापनीयता के आधार पर भौतिक रूप से समान हों ?
- मात्र शोधन से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं हो सकता । फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन मात्र शोधन है । फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तथा तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उत्पादन प्रक्रिया, तकनीकी विनिर्देशन, तारीख, अंतिम उपयोग उपभोक्ता अवधारणा आदि में अंतर है और इन पर विचार किया जाना चाहिए ।

घरेलू उद्योग का क्षेत्र और आधार

- सादर निवेदन है कि जैसा कि जी ए सी एल/घरेलू उद्योग ने पैरा 35 में उल्लेख किया है कि जी ए सी एल ने आई सी एल समूह की कंपनी/सहायक कंपनी के साथ कोई करार नहीं किया है, पूर्णतः झूठा और निराधार है खासकर तब जब यह तथ्य देखा जाए कि करार के प्रति (प्रौद्योगिकी लाइसेंस) प्राधिकारी को पूर्व में "गोपनीय" रूपांतरण में प्रस्तुत की गई है । हमारा मानना है कि प्राधिकारी ने इसका खंडन नहीं किया है ।
- आई एम आई टी ए एम आई का विचाराधीन उत्पाद (तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड) हेतु जी ए सी एल की उत्पादन क्षमता पर अनन्य और पूर्ण नियंत्रण है । इस आधार पर प्राधिकारी का यह निष्कर्ष गलत है कि "आई सी एल समूह की कंपनी का मै. जी ए सी एल पर कोई प्रत्यक्ष विधिक या प्रचालनात्मक नियंत्रण नहीं है" । संविदा के अनुसार आई एम आई टी ए एम आई के पास लाइसेंस संविदा जारी रहने के दौरान किसी समय जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन संयंत्र का निरीक्षण करने और जी ए सी एल के संयंत्र में उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की मात्रा का सत्यापन करने का अधिकार है । अतः विचाराधीन उत्पाद हेतु जी ए सी एल पर कोई प्रचालनात्मक नियंत्रण होने से इंकार करना स्वीकार्य नहीं है ।
- कानून में यह सुस्थापित सिद्धांत है कि "शोधन" को किसी भी रूप में "विनिर्माण" नहीं माना जा सकता । अतः "शोधन" कार्यकलाप "विनिर्माण" न माने जाने की स्थिति में पी सी सी पी

एल को फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के रूप में विचार न करने की जरूरत होगी ।

- घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में यह नोट किया है कि मै. एस टी एस कैमिकल्स के उत्पादन को घरेलू उद्योग के आधार का निर्धारण करते समय शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि वे मूलभूत चरण से संबद्ध वस्तु का उत्पादन नहीं कर रहे हैं और आवेदकों से तकनीकी ग्रेड में संबद्ध वस्तु की खरीद कर रहे हैं और इसे फूड ग्रेड में परिवर्तित कर रहे हैं । उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए वर्तमान जांच में पी सी सी पी एल और उसके उत्पादों को शामिल करना त्रुटिपूर्ण और कानूनन दोषपूर्ण होगा ।
- आई सी एल-रोटेम द्वारा उत्पादित फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का शोधन नहीं है । वस्तुतः आई सी एल-रोटेम तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन ही नहीं करती है और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन हेतु आई सी एल-रोटेम द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया (फूड ग्रेड कच्ची सामग्री का उपयोग करते हुए) घरेलू उद्योग की प्रक्रिया से किसी भी रूप में समान नहीं है ।
- पैरा 39 के अनुसार प्राधिकारी ने यह मत व्यक्त किया है कि पी सी सी पी एल ने क्षति मापदंडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है । अनुरोध है कि यदि ऐसी कोई सूचना पी सी सी पी एल ने दायर की थी तो प्राधिकारी ने पी सी सी पी एल द्वारा आई सी एल-रोटेम को इस प्रकार से प्रस्तुत गोपनीय सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध न करा कर नियम 7 का उल्लंघन किया है ।

सामान्य मूल्य का गलत निर्धारण

- प्राधिकारी ने किसी उचित तीसरे देश को निर्यात देश या क्षेत्र से निर्यात किए जाने पर समान उत्पाद की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत पर विचार न कर आई सी एल-रोटेम के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण में त्रुटि की है । परिणामतः सामान्य मूल्य का गलत निर्धारण हुआ है ।

क्षति एवं कारणात्मक संबंध

- प्राधिकारी ने पैरा 60 में कैमटाल राय द्वारा दिए गए तर्कों पर कोई मत व्यक्त नहीं किया है । जहां तक पैरा 62 में प्राधिकारी के मत का संबंध है, यह दोहराया जाता है कि उक्त विवरण को जी ए सी एल की वार्षिक रिपोर्ट से उद्धृत किया गया है और इसलिए प्राधिकारी का मत गलत है ।
- पैरा 87 में प्राधिकारी का मत गलत है । पी सी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की विनिर्माता नहीं है और इसलिए इसे वर्तमान जांच से अलग रखा जाना चाहिए ।
- यह भी अनुरोध है कि इजरायल से आयात की पहुंच कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से कम है क्योंकि आई सी एल-रोटेम की उत्पादन लागत विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्री कीमत में पर्याप्त अंतर होने के कारण घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम है ।
- वर्ष 2008-09 के साथ तुलना से उचित और प्रभावी तुलना नहीं होगी क्योंकि वह मंदी से प्रभावित थी । इसके अलावा, प्राधिकारी ने पैरा 68 में पूर्ववर्ती वर्ष अर्थात् 2008-09 में मंदी

को स्वीकार किया है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने वर्ष 2008-09 के लिए किसी दावे का विरोध/इंकार किया है क्योंकि यह जांच अवधि से पूर्व की अवधि से संबंधित है । तथापि, उपर्युक्त पैरा और पैरा 119 में कीमत पर मंदी का निर्धारण करने के लिए इन वर्षों पर ध्यान दिया गया है ।

- जी ए सी एल द्वारा फॉस्फोरिक एसिड के लिए अत्यंत अधिक कीमत वसूली जा रही है और घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त कोई प्रौद्योगिकी महंगी है ।
- विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र काफी व्यापक है । जांच में उत्पाद क्षेत्र अति व्यापक है और इसे व्यापक रूप से परिभाषित किया गया है इसलिए वर्तमान कार्रवाई समाप्त की जानी चाहिए ।

(क) विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माता न होने के कारण पी सी सी पी एल को वर्तमान जांच से बाहर रखा जाना चाहिए ।

(ख) चूंकि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में जी ए सी एल की उत्पादन क्षमता और प्रचालन आई सी एल-रोटेम की एक सहायक कंपनी आई एम आई टी ए एम आई द्वारा नियंत्रित है, इसलिए जी ए सी एल को घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता ।

(ग) याचिकाकर्ता ने अपने दावे के विरोधाभासी सूचना दायर की है और निर्दिष्ट प्राधिकारी को भ्रमित किया है ।

(घ) प्राधिकारी ने दो अत्यंत भिन्न उत्पादों का संचयी निर्धारण कर त्रुटि की है ।

(ङ.) प्राधिकारी ने फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड और तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के लिए पाटन और क्षति विश्लेषण अलग-अलग न कर त्रुटि की है ।

(च) सामान्य मूल्य के परिकलन की पद्धति नितांत त्रुटिपूर्ण है और यह कानून में निर्धारित नहीं है ।

(छ) घरेलू उद्योग को फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात से कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है जो घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित/उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड से तकनीकी और कार्यात्मक रूप से भिन्न है और इस प्रकार उसे वर्तमान कार्रवाई से अलग रखा जाना चाहिए ।

(ज) जी ए सी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन ही नहीं कर सकती और यदि स्वीकार किया जाए तो पी सी सी पी एल मात्र शोधनकर्ता है ।

(झ) वैश्विक मंदी, कच्ची सामग्री की खरीद के सीमित माध्यम, प्रतिबंधित क्षमता (संविदागत दायित्व के अधीन) जैसे विभिन्न अन्य कारक हैं, जो आवेदक की उत्पादन और क्षमता उपयोग को प्रभावित कर रहे हैं और इस हेतु हुई क्षति का कारण आई सी एल-रोटेम से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयातों को नहीं माना जा सकता ।

(ट) आई सी एल रोटेम से हुए आयातों और घरेलू उद्योग को आरोपित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के अभाव में आई सी एल-रोटेम के खिलाफ वर्तमान जांच समाप्त की जाए ।

(ठ) संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के किसी प्रयास से प्रयोक्ता उद्योग लागत मित्ययी उत्पादों से वंचित होगा जिससे घरेलू उद्योग के बजाए प्रयोक्ता उद्योग को क्षति होगी और इस वजह से भी कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए ।

(ड) अतः वर्तमान जांच समाप्त की जाए और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड पर कोई शुल्क न लगाया जाए ।

मै. कैमबरा कैमिकल्स की टिप्पणियां

मै. कैमबरा कैमिकल्स की ओर से संक्षेप में निम्नलिखित टिप्पणियां की गई हैं :

- जी ए सी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का विनिर्माण नहीं कर रही है । उसके पास फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन की अपेक्षित प्रौद्योगिकी नहीं है और वह केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन कर सकती है । विगत में हमने जी ए सी एल के फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग किया है और हमारी सामग्री भारत में फार्मा उद्योग तथा विदेश में फार्मा उद्योग द्वारा अस्वीकृत कर दी गई थी । हमें सूक्ष्म उद्योग होने के कारण निर्यात व्यापार और स्वदेशी व्यापार में भारी घाटा हुआ है । अतः हमने फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात करना शुरू कर दिया है ।
- नंदेसरी इंडस्ट्रीज एसो. ने यह तर्क दिया है कि भारत में फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति करने वाला कोई नहीं है और मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. इसकी आपूर्ति नहीं करती है । अतः उसके सदस्यों के पास इसका आयात करने के अलावा, कोई विकल्प नहीं है ।
- फॉस्फोरिक एसिड के अलग-अलग ग्रेड "समान उत्पाद" नहीं है और इसलिए "विचाराधीन उत्पाद" के क्षेत्र को मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. द्वारा वास्तव में उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तक ही सीमित रखा जाना चाहिए ।
- मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. को सभी ग्रेडों के फॉस्फोरिक एसिड के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग करने की बजाए आज के वैश्वीकृत विश्व में समूचा बाजार हड़पने के लिए फॉस्फोरिक एसिड की अपनी गुणवत्ता में सुधार करना चाहिए ।
- वित्त मंत्रालय, भारत सरकार को हमारे जैसे सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की मदद करनी चाहिए जो सरकारी संगठनों की तुलना में गुणवत्तायुक्त उत्पादों में रुचि रखते हैं । मै. जी ए सी एल अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने की इच्छुक नहीं है ।
- वाणिज्य मंत्रालय को घरेलू उद्योग जी ए सी एल पर तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उनके कथन के अनुसार तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड में शोधन करने पर दबाव डालना चाहिए कि केवल इस शोधन के लिए केवल भाप की जरूरत होती है परंतु उसने पाटनरोधी शुल्क लगाकर उसका कभी पक्ष नहीं लिया है ।
- इसके अलावा, उत्पादन क्षमता मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि. के लिए सीमित है । अतः कारणोत्तर विश्लेषण समुचित ढंग से नहीं किया गया है । मात्रात्मक क्षति का कोई दावा नहीं हो सकता क्योंकि जी ए सी एल की दरें/उत्पादन मै. आई एम आई टी ए एम आई के

साथ संविदा के अनुसार सीमित/नियंत्रित हैं जिसका लाइसेंस करार केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन के लिए है ।

मै. हाईफोर्स कैमिकल्स कं. लि. की टिप्पणियां

मै. हाईफोर्स कैमिकल्स कं. लि. की ओर से संक्षिप्त में निम्नलिखित टिप्पणियां की गई हैं :-

- उसे जैसे ही ताईवान के खिलाफ पाटनरोधी जांच शुरू करने के बारे में पता लगा उसने प्राधिकारी ने संपर्क करने और कुछ और समय देने का अनुरोध करने का भरपूर प्रयास किया।
- 25 अक्टूबर, 2011 के अनंतिम जांच परिणाम के पश्चात उसने विधिवत भरी हुई पूर्ण निर्यातक प्रश्नावली के साथ 23 नवंबर, 2011 के हमारे पत्र का उत्तर दिया जिसके साथ इसे संलग्न किया गया और 26 नवंबर, 2011 को फैंडैक्स के जरिए आपको कूरियर किया गया और यह कि यह कोरियर आपके पास 28 नवंबर, 2011 तक पहुंच जाना चाहिए था । 22 दिसंबर, 2011 को उसने कीमत वचन पत्र प्रदान करने का अनुरोध करते हुए अपने मेल को दोहराया ।
- उसने याचिकाकर्ता सहित प्रत्येक हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत जांच अवधि के आंकड़ों के अनुसार न्यूनतम पहुंच मूल्य के आधार पर न्यूनतम कीमत के आधार पर पाटनरोधी शुल्क तय करने का अनुरोध किया है जिसके अनुसार यह पाटनरोधी जांच शुरू की गई है क्योंकि इससे ऐसे प्रत्येक देश जिसके खिलाफ पाटनरोधी जांच की गई है, के लिए विचारित जांच अवधि के आंकड़ों के आधार पर पाटन मार्जिन के विरुद्ध याचिकाकर्ता को पर्याप्त संरक्षण मिलेगा ।

घरेलू उद्योग की ओर से की गई टिप्पणियां

घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नलिखित टिप्पणियां की हैं :-

- प्राधिकारी ने उत्पाद के क्षेत्र में फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को सही तौर पर शामिल किया है । खास तौर पर इस बात को ध्यान में रखते हुए कि निर्यातक ने तकनीकी ग्रेड के रूप में फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का जाहिर तौर पर निर्यात किया है । इसके अलावा, पी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन कर रही है और इस तथ्य का खंडन नहीं किया गया है ।
- चूंकि निर्यातक ने सत्यापन के दौरान भी समस्त संगत सूचना प्रदान नहीं की है इसलिए निर्यातक द्वारा दायर प्रश्नावली का उत्तर अस्वीकृत किया जाना चाहिए ।
- ताईवान का पाटन और पाटन मार्जिन ताईवान में तकनीकी ग्रेड की निर्यात कीमत सबसे कम होने के बावजूद काफी कम है । अतः गणनाओं की समीक्षा की जाए ।
- याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि पाटनरोधी शुल्क केवल अम.डा./किग्रा. के रूप में व्यक्त शुल्क के अनुसार पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित मात्रा (शुल्क के नियत स्वरूप) के रूप में लागू किया जाए ।

प्राधिकारी को वास्तविक कच्ची सामग्री और उपयोगिता खपत पर विचार करना चाहिए क्योंकि वर्षानुवर्ष खपत कई जटिल कारकों पर निर्भर होती है और यह घरेलू उद्योग की अक्षमता का परिणाम नहीं होती है। वास्तविक उत्पादन की अनदेखी करना और क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु किसी अन्य उत्पादन को अपनाना उचित नहीं है। प्राधिकारी के लिए वास्तविक उत्पादन लागत और न कि उत्पादन की परिकल्पित कम लागत का निर्धारण करना अपेक्षित है। कुछ व्यय को उत्पादन आधार पर बांटा जाता है। वास्तविक उत्पादन आधार पर ऐसे व्यय को बांटने के बाद इस व्यय को पुनः उच्चतर उत्पादन स्तर पर समायोजित किया जा सकता है। यदि घरेलू उद्योग ने अधिक उत्पादन किया होता तो उत्पाद पर प्रभार्य व्यय का हिस्सा अधिक नहीं रहा होता। अप्रचलनात्मक विविध आय के लिए क्षति रहित कीमत को कम किया जाता है। न तो अप्रचलनात्मक व्यापार व्यय और न ही अप्रचलनात्मक व्यापार आय क्षति रहित कीमत की गणना का भाग हो सकती है। लगाई गई पूंजी का निर्धारण अचल परिसंपत्ति के वर्तमान मूल्य पर विचार करने के बार अथवा कम से कम अचल परिसंपत्ति के सबसे कम सकल मूल्य पर किया जाना चाहिए। इसके अलावा, कारोबार अनुपात का निर्धारण आबद्ध उत्पादों के कारोबार को कंपनी के कुल कारोबार में जोड़कर किया गया है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद के कारोबार में आबद्ध निविष्टियों का कारोबार शामिल नहीं है। क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु उत्पादन वही होना चाहिए जैसा कि उक्त खास कंपनी की क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु उत्पाद के निर्धारण में किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

7. प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में उन सभी मुद्दों की जांच की है जिन्हें संगत पाया गया है-

- जहां तक मै. हाईफोर्स कैमिकल्स कंपनी लिमिटेड के दावों का संबंध है, प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि उसे निर्धारित प्रपत्र के अनुसार विधिवत भरी हुई कंपनी की निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर ही नहीं मिला है। अलग-अलग पाटन मार्जिन के अभाव में कीमत वचन पत्र पर विचार करना व्यवहार्य नहीं है।
- जहां तक न्यूनतम कीमत के आधार पर पाटनरोधी शुल्क से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने प्रत्येक मामले के तथ्यों और गुणदोष के आधार पर शुल्क के स्वरूप की सिफारिश करने का निर्णय लिया और ऐसा वर्तमान मामले में भी किया जाएगा।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. जी ए सी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने पहले यह दर्ज किया है कि संबद्ध वस्तु की घरेलू उत्पादक मै. पी सी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है। इसके अलावा, उसके ऐसे ख्याति प्राप्त ग्राहक हैं जिन्हें वह फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति करती है। अतः उसकी गुणवत्ता से संबंधित किसी तर्क में कोई दम नहीं है।
- प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि उसकी मंशा आयातों को बंद करने की नहीं है अपितु, संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने की है।
- प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि मै. आई सी एल - रोटेम के इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है कि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात और उपयोग केवल वहां तकनीकी ग्रेड

फॉस्फोरिक एसिड के स्थान पर किया जाता है जहां जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को खपत योग्य उचित नहीं पाया गया है । जांच के दौरान किसी हितबद्ध पक्षकार ने साक्ष्य के साथ यह दावा नहीं किया कि मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को खपत हेतु उचित नहीं पाया गया है और इस प्रकार यह तर्क निराधार और मात्र आरोप के रूप में है ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग द्वारा जिस उत्पाद का उत्पादन नहीं किया जाता है वह कारणात्मक संबंध के अभाव में किसी पाटनरोधी जांच का भाग नहीं हो सकता । प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि संबद्ध वस्तु का घरेलू उत्पादक मै. पी सी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है अतः इस तर्क में कोई दम नहीं है ।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद को जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में ही सुपरिभाषित किया गया था जिसे प्रारंभिक जांच परिणाम में दोहराया गया है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि इस बात पर निर्भर रहते हुए "विचाराधीन उत्पाद" का अर्थ अलग होता है कि क्या उसका उपयोग पाटन निर्धारण के लिए किया जाता है या फिर क्षति निर्धारण के लिए, यह तर्क इस विषय पर नियमों के सही पाटन पर आधारित नहीं हैं । जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जो उत्पाद "समान उत्पादों" से मात्र प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं उन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में स्पष्ट तौर पर यह मत व्यक्त किया गया है कि संबद्ध वस्तु की फूड ग्रेड गुणवत्ता का उपयोग घरेलू उत्पादकों की तकनीकी ग्रेड की जरूरतों के लिए भी किया गया है और इस प्रकार यह तर्क अस्वीकार्य है ।
- प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का शोधन नहीं करती है अपितु, फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन अपनी खुद की प्रक्रिया के जरिए करती है और वह ख्याति प्राप्त ग्राहकों को उसकी आपूर्ति करती आ रही है ।
- जहां तक करार (प्रौद्योगिकी लाइसेंस) से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी अपने इस विचार को दोहराते हैं कि केवल प्रौद्योगिकी लाइसेंस और उसकी निगरानी से मै. जी ए सी एल पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग के रूप में विचार करने की अपात्र नहीं बन जाती है ।
- आई सी एल-रोटेम द्वारा उत्पादित फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का शोधन नहीं है । वस्तुतः आई सी एल-रोटेम तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन ही नहीं करती है और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन हेतु आई सी एल-रोटेम द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया (फूड ग्रेड कच्ची सामग्री का उपयोग करते हुए) घरेलू उद्योग की प्रक्रिया से किसी भी रूप में समान नहीं है ।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल ने क्षति मापदंडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है और उसका अगोपनीय रूपांतरण सर्वजनिक फाइल में उपलब्ध है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है, प्राधिकारी ने उचित तीसरे देश को निर्यातक देश या क्षेत्र से निर्यात किए जाने पर समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत पर विचार न कर मै. आई सी एल-रोटेम हेतु सामान्य मूल्य के निर्धारण में त्रुटि की है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह

तर्क संगत नियमों के गलत पाठन पर आधारित है । इस विषय पर नियमों और विनियमों के अनुसार अन्य बातों के साथ-साथ यह निर्धारित किया गया है कि यदि संबंधित निर्यातक/उत्पादक की समान वस्तु की घरेलू बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच पर खरी नहीं उतरती है तो सामान्य मूल्य का निर्धारण उचित तीसरे देश को निर्यात किए जाने पर समान वस्तु की तुलनीय कीमत के आधार पर करना होगा बशर्ते यह कीमत तुलनीय हो अथवा उदगम के देश में उत्पादन लागत जमा प्रशासनिक, बिक्री एवं सामान्य लागत तथा लाभ हेतु उचित मार्जिन को जोड़कर किया जाएगा । अतः प्राधिकारी के पास यह विकल्प है कि वह उचित तीसरे देश को निर्यात किए जाने पर समान वस्तु की या तो तुलनीय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करे बशर्ते यह कीमत प्रतिनिधिक हो या फिर उदगत के देश में उत्पादन की लागत के आधार पर निर्धारण करे जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित राशि को जोड़े । इस मत को हल्दर टोपसो मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने भी बरकरार रखा है । इसके अलावा, उचित तीसरे देश को निर्यात किए जाने पर समान वस्तु की तुलनीय कीमत भी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच के अधीन होती है । वर्तमान मामले में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच पूरी ही नहीं हुई थी ।

- जहां तक मै. कैमटाल राय के तर्कों का संबंध है, प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम के संगत खंडों में इस मुद्दे पर विचार किया है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. पी सी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के विनिर्माता नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तथ्यतः गलत है क्योंकि मै. पी सी सी पी एल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि इजरायल से आयातों की पहुंच कीमत निवल बिक्री प्राप्ति से कम है क्योंकि आई सी एल – रोटम की उत्पादन लागत विनिर्माण प्रक्रिया, कच्ची सामग्री की कीमत में भारी अंतर के कारण घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम है, इस तर्क में कोई दम नहीं है क्योंकि कंपनी को संबद्ध वस्तु का पाटन करते हुए पाया गया है और उसके पहुंच मूल्य से घरेलू उद्योग को “क्षति ” हो रही है ।
- जहां तक 2008-09 की अवधि से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी ने घरेलू उत्पादक के निष्पादन के संदर्भ में यह नोट किया है कि 2008-09 की अवधि जांच अवधि से पूर्व की है । तथापि, आगे यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के बारे में वास्तविक क्षति हुई है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. जी ए सी एल द्वारा अपने फॉस्फोरिक एसिड के लिए अत्यधिक ऊंची कीमत वसूली जा रही है और घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी महंगी है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निष्पादन संतोषजनक स्तर से भी अधिक है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. आई एम आई टी ए एम आई के साथ संविदा के अनुसार मै. जी ए सी एल की उत्पादन क्षमता सीमित है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसका क्षति विश्लेषण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि पाटनरोधी नियमों एवं विनियमों में यह निर्धारित नहीं है कि घरेलू उत्पादक के पास समूची घरेलू मांग को पूरा करने की पर्याप्त क्षमता होनी चाहिए ।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि ताइवान का पाटन और पाटन मार्जिन काफी कम है जबकि ताइवान में तकनीकी ग्रेड की सबसे कम निर्यात कीमत है, प्राधिकारी ने इस विषय पर संगत नियमों के अनुसार और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर इसका निर्धारण किया है।
- जहां तक पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित मात्रा के आधार पर पाटनरोधी शुल्क से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वह प्रत्येक मामले के तथ्यों और गुणदोष के आधार पर शुल्क के स्वरूप की संस्तुति करने का निर्णय लेते हैं और ऐसा ही वह इस मामले में भी करेंगे।
- जहां तक क्षति रहित कीमत के निर्धारण से जुड़े तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने इसका निर्धारण रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों और इस विषय पर संगत नियमों के अनुसार किया है।
- उपर्युक्त के अलावा, प्राधिकारी नोट करते हैं कि समस्त अन्य मुद्दों पर इस जांच परिणाम के संगत खंडों में पहले ही समुचित रूप से विचार किया जा चुका है जिन्हें संक्षिप्तता की वजह से दोहराया नहीं जा रहा है।

घ. हितबद्ध पक्षकारों के विविध अनुरोध

मेसर्स हाइफोर्स केमिकल्स कारपोरेशन, ताइवान द्वारा किए गए निवेदन

8. मेसर्स हाइफोर्स केमिकल्स कारपोरेशन, ताइवान ने अन्य बातों के साथ कहा है कि उन्हें इस विषय पर जांच से संबंधित सूचना ताइवानी बाजार से प्राप्त हुई थी और उन्हें डीजीएडी से अब तक कोई नोटिस प्राप्त नहीं हुआ है और इस प्रकार उन्होंने अनुरोध किया है कि उन्हें पर्याप्त समय देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया जाए।

9. मै. हाइफोर्स केमिकल्स कारपोरेशन, ताइवान ने 22 दिसंबर, 2011 के अपने पत्र के तहत अन्य बातों के साथ-साथ विधिवत भरी हुई निर्यातक प्रश्नावली संलग्न करने का दावा किया है। कंपनी ने यह भी तर्क दिया है कि उन्होंने एल सी डी/टी एफ टी उत्पादकों से प्राप्त स्पेंट एसिड मिक्सचर से फॉस्फोरिक एसिड प्राप्त किया है और उसके निथारण और शुद्धिकरण के बाद उन्होंने 85 प्रतिशत फॉस्फोरिक एसिड हासिल किया जिसका उपयोग बहुत सीमित अनुप्रयोगों में किया जा सकता है। यह ग्रेड तुलनात्मक रूप से कम लागत वाला है और उन्होंने घटिया पैकिंग सामग्री का इस्तेमाल भी किया है ताकि अपनी लागत कम रखी जा सके और इसलिए भारतीय बाजार को उचित कीमत पर संबद्ध वस्तु की पेशकश नहीं की जा सकी। इसके अलावा, उनके द्वारा निर्यातित कुल मात्रा काफी कम लगभग 1422 मी.ट. है जो भारत में कुल मांग के 2 प्रतिशत से कम है। उसने कीमत वचनपत्र उपलब्ध कराने का प्रस्ताव भी किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

10. उपर्युक्त उत्तर के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस मामले से संबंधित जांच की शुरुआत दिनांक 4 फरवरी, 2011 को की गई थी। पाटनरोधी नियमावली के अनुसरण में सम्बद्ध देशों के ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 25 फरवरी, 2011 के पत्र के माध्यम से 40 दिनों के भीतर निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने की विधिवत सलाह दी गई थी। इसके अलावा दिनांक 25 फरवरी, 2011 के पत्र के माध्यम से ताइवान आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र को आवेदन के अगोपनीय पाठ के साथ जांच शुरुआत अधिसूचना की एक प्रति तथा प्रश्नावली की एक प्रति अग्रेषित की गई थी, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ सूचित किया गया था कि ज्ञात निर्यातकों से उन्हें भिजवाई गई प्रश्नावली के उत्तर के रूप में संबंधित सूचना प्रस्तुत करने हेतु अलग से अनुरोध किया जा रहा है, तथापि सम्बद्ध वस्तुओं के और भी उत्पादक/निर्यातक हो सकते हैं जो इस जांच में दिलचस्पी रखते हों और इसलिए उनसे इसे सभी संबंधितों के ध्यान में लाने का अनुरोध किया गया था ताकि वे अपने हितों की रक्षा प्रभावी तरीके से कर सकें। इस प्रकार यह अपेक्षा की जाती थी कि ताइवान आर्थिक एवं सांस्कृतिक केंद्र ताइवान के निर्यातकों/उत्पादकों को समुचित सलाह देगा।
11. इसके अलावा, पाटनरोधी नियमावली अथवा डब्ल्यूटीओ के पाटनरोधी करार के अंतर्गत ऐसी कोई बाध्यता नहीं है जिसमें सम्बद्ध देश के प्रत्येक उत्पादक/निर्यातक को जांच शुरुआत अधिसूचना के बारे में सूचित करने की अपेक्षा की गई हो। इसके अलावा, जांच शुरुआत अधिसूचना को न केवल भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया, बल्कि इसे वाणिज्य विभाग की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया गया था। सम्बद्ध देश के किसी निर्यातक/उत्पादक को, जिसका नाम डीजीएडी के समक्ष प्रस्तुत आवेदन में नहीं दिया गया है उससे प्रश्नावली (जिसे विभाग की वेबसाइट से डाऊनलोड किया जा सकता है) का उत्तर जांच शुरुआत अधिसूचना में उल्लिखित निर्धारित समयसीमा के भीतर प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए इस जांच को पूरा करने हेतु समय की कमी को देखते हुए समय बढ़ाने के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया जा सका।
12. मै. हाईफोर्स कैमिकल कार्पोरेशन, ताइवान द्वारा 22 दिसंबर, 2011 के पत्र के तहत किए गए अनुरोधों की जांच की गई थी। यह नोट किया जाता है कि उक्त पत्र के साथ विधिवत भरी गई कोई निर्यातक प्रश्नावली संलग्न नहीं की गई थी। जहां तक घटिया सामग्री/निविष्टि के उपयोग के कारण कम लागत का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कंपनी को निर्धारित समय के भीतर निर्धारित प्रपत्र के अनुसार विधिवत भरी गई निर्यातक प्रश्नावली दायर करनी चाहिए थी। चूंकि कंपनी अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करने के अपने मूलभूत दायित्व में विफल रही है, इसलिए प्राधिकारी जांच के विलंबित चरण पर असत्यापित/अपुष्टिकृत दावों का कोई संज्ञान लेने में समर्थ नहीं हैं। जहां तक कीमत वचनपत्र की पेशकश का संबंध है, प्राधिकारी उसे स्वीकार करने में समर्थ नहीं हैं क्योंकि इस कंपनी के संबंध में कोई अलग पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं किया गया है।

मै. आई सी एल-रोटैम (इजरायल) के अनुरोध

13. मै. आई सी एल -रोटैम ने संक्षिप्त ने निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- रोटैम एमफर्ट नेगेव लि. (फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उत्पादक तथा निर्यातक) इजरायल कैमिकल्स लि., इजरायल ("आई सी एल") की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है और दोनों कंपनियों को सामूहिक रूप से आई सी एल-रोटैम कहा गया है ।
- मै. जी ए सी एल के पास फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करने की अपेक्षित प्रौद्योगिकी नहीं है और यह केवल तकनीकी ग्रेड का उत्पादन कर सकती है ।
- जांच अवधि के दौरान 100 प्रतिशत क्षमता उपयोग के साथ भी घरेलू मांग की पूर्ति नहीं की जा सकी और आयात अनिवार्य थे । तथापि, फूड ग्रेड की मांग की पूर्ति मै. जी ए सी एल द्वारा नहीं की जा सकती क्योंकि यह फूड ग्रेड का उत्पादन नहीं करती है ।
- गोपनीयता की स्थिति में आई सी एल-रोटैम मै. जी ए सी एल के आंकड़ों से संबंधित अन्य कारकों पर टिप्पणी देने में असमर्थ है । प्राधिकारी द्वारा क्षमता एवं उत्पादन से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय होने का दावा किया जाता है भले ही मै. जी ए सी एल ने याचिका में इसकी घोषणा की हो ।

मै. कैनबरा कैमिकल्स के अनुरोध

14. मै. कैनबरा कैमिकल्स ने संक्षेप में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- मै. जी ए सी एल ने लिखित में इस बात की पुष्टि की है कि मै. जी ए सी एल के लिए फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति करना संभव नहीं होगा । तकनीकी ग्रेड में फ्लोराइड और शीशा होता है जो जहरीले हैं ।
- मै. जी ए सी एल का यह कथन निराधार है कि फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड एक समान हैं ।
- वे लघु उद्योग हैं और इसलिए उनके लिए निर्यात हेतु अग्रिम लाइसेंस तंत्र का उपयोग करना काफी कठिन है । इसके अलावा, वे स्वदेशी उद्योगों को भी आपूर्ति करते हैं ।

मै. सुदीप फार्मा लि. के अनुरोध

15. मै सुदीप फार्मा लि. ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- चूंकि उनके उत्पाद का उपयोग फार्मा और खाद्य उद्योगों द्वारा किया जा रहा है, इसलिए उन्हें केवल फूड ग्रेड के फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग करना होता है ।
- मै. जी ए सी एल द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का विनिर्माण नहीं किया जा रहा है ।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से उनकी उत्पादन लागत बढ़ेगी । उनके तैयार उत्पाद, घरेलू उद्योग के कैल्शियम फॉस्फेट के लिए पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है और इसलिए उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।

मै. कैमटाल राय इंडिया के अनुरोध

16. मै. कैमटाल राय इंडिया ने संक्षेप में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- अन्य जांचों के विपरीत मै. सोलारिस कैमटेक इस जांच में घरेलू उद्योग का भाग नहीं है । मै. सोलारिस के आंकड़ों को वर्तमान जांच से अलग रखा गया है क्योंकि मै. सोलारिस संयंत्र बंद होने के कारण उत्पादन नहीं कर रही थीं । मै. सोलारिस कुछ वर्षों से एक या दूसरी आंतरिक समस्याओं अर्थात् कामगारों की हड़ताल, विद्युत की कमी या अन्यथा की वजह से संयंत्र बंदी की इस समस्या का सामना कर रही है ।
- फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड दो अलग-अलग वस्तुएं हैं और जांच के दायरे को केवल तकनीकी ग्रेड तक सीमित रखा जाना चाहिए । तकनीकी ग्रेड और फूड ग्रेड- फॉस्फोरिक एसिड के अलग-अलग तकनीकी और रासायनिक विनिर्देशन में और इनका उपयोग उनके अंतिम उत्पादों की उपयुक्तता के अनुसार अलग-अलग उद्योगों द्वारा किया जाता है । एक का उपयोग दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता ।

नंदेसरी इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के अनुरोध

17. एसोसिएशन ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिया है :-

- एसोसिएशन ने संक्षेप में यह तर्क दिया है कि भारत में फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति करने वाला कोई नहीं है और यह कि मै. जी ए सी एल इसकी आपूर्ति नहीं करती है; अतः उसके सदस्यों के पास आयात करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. प्राधिकारी ने इस जांच के प्रयोजनार्थ मै. आई सी एल-रोटेम के उत्तर को कंपनी समूह के रूप में स्वीकार किया है ।
19. जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि मै. जी ए सी एल के पास फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करने की अपेक्षित प्रौद्योगिकी नहीं है और वह केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन ही कर सकती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड की गुणवत्ता का विनिर्माण करती है और उसके पास इसकी आपूर्ति करने वाले प्रतिष्ठित ग्राहक हैं । इसके अलावा, मै. आई सी एल-रोटेम ने अपने उत्तर में यह स्वीकार किया है कि उसने तकनीकी ग्रेड के रूप में विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड की गुणवत्ता का जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया है और इस प्रकार उसने घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित समान वस्तु के तकनीकी ग्रेड के साथ स्पर्धा की है ।
20. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि जांच अवधि के दौरान 100 % क्षमता उपयोग पर भी घरेलू उद्योग की मांग की पूर्ति नहीं की जा सकती और आयात अनिवार्य थे और यह कि मै. जी ए सी एल द्वारा फूड ग्रेड की मांग की पूर्ति नहीं की जा सकती क्योंकि वह फूड ग्रेड का

उत्पादन नहीं करती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियम एवं विनियमों में यह अपेक्षित नहीं है कि पाटन के कारण हुई क्षति को दूर करने की मांग करने से पूर्व घरेलू उद्योग को मांग की पूर्ति अवश्य करनी चाहिए।

21. प्राधिकारी ने घरेलू उत्पादकों द्वारा किए गए अनुरोधों के अगोपनीय रूपांतरण के अनुसार क्षमता और उत्पादन से संबंधित आंकड़े इस जांच परिणाम के संगत खंडों में प्रदर्शित किए हैं।

ख. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू सामान वस्तु

22. विचाराधीन उत्पाद सभी ग्रेडों और सभी सांद्रणों का फास्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) है। फास्फोरिक एसिड एक अकार्बनिक रसायन है जिसे सोडियम फास्फेट, कैल्सियम फास्फेट, मैग्नीशियम फास्फेट, अमोनियम फास्फेट आदि के उत्पादन में प्रयुक्त किया जाता है। सम्बद्ध वस्तु को भेषजीय अनुप्रयोगों, पेयों, शुगर जूस क्लैरीफिकेशन तथा चीनी की रिफाइनिंग, फूड फास्फेट के विनिर्माण आदि में भी प्रयुक्त किया जा रहा है।

23. यद्यपि फास्फोरिक एसिड को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम में उपशीर्ष संख्या 28092010 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, तथापि, विचाराधीन उत्पाद हेतु कोई विशिष्ट सीमाशुल्क वर्गीकरण नहीं है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और इस जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

मेसर्स येओऊ एफए केमिकल कं. लि0, ताइवान द्वारा किए गए निवेदन

24. कंपनी ने प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत अपने घोषणापत्र में अन्य बातों के साथ-साथ यह दावा किया है कि सम्बद्ध वस्तुओं के उत्पादन की उनकी प्रक्रिया एक शुष्क विधि है जो घरेलू उद्योग की वेट विधि से भिन्न है और उन्होंने अपनी फास्फोरिक एसिड शुद्धिकरण प्रक्रिया को पेटेंट कराया है और इस प्रकार उनकी लागत संरचना घरेलू उद्योग की लागत संरचना से तुलनीय नहीं है। यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि सम्बद्ध वस्तुओं को प्रयोक्ताओं द्वारा अनुप्रयोग के अनुसार विभिन्न बाजार क्षेत्रों में श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए। आगे यह भी कहा गया है कि आवेदन में उन्हें सम्बद्ध वस्तुओं के ज्ञात निर्यातक के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है और उन्होंने कहा है कि वह संबंधित सूचना निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित होने पर ही प्रस्तुत करेंगे।

मै. आई सी एल-रोटेम के अनुरोध

25. मै. आई सी एल-रोटेम ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- मै. जी ए सी एल केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है और वह फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है जबकि आई सी एल-रोटेम केवल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है और वह तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है।

- फॉस्फोरिक एसिड के अलग-अलग ग्रेड "समान उत्पाद" नहीं हैं, अतः "विचाराधीन उत्पाद" के दायरे को मै. जी ए सी एल द्वारा वास्तव में उत्पादित (जांच अवधि के दौरान) फॉस्फोरिक एसिड के ग्रेड तक सीमित रखा जाना चाहिए। प्राधिकारी ने गलत ढंग से "फूड ग्रेड" फॉस्फोरिक एसिड तथा "तकनीकी ग्रेड" फॉस्फोरिक एसिड को "समान उत्पाद" मान लिया है। फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तकनीकी विनिर्देशन, क्षमता, कार्य तथा अंतिम उपयोग (अनुप्रयोग) के रूप में मै. जी ए सी एल द्वारा उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड से पूर्णतः भिन्न है। घरेलू उद्योग ने फॉस्फोरिक एसिड के ग्रेडों में अंतर (मै. जी ए सी एल द्वारा उत्पादित और मै. आई सी एल-रोटेम द्वारा आयातित) में अंतरों के बारे में पूर्ण तथ्य प्रस्तुत न कर और फॉस्फोरिक एसिड के दोनों ग्रेडों के कार्यों, उपयोग, अनुप्रयोग, बाजार और उपभोक्ताओं में अंतर को रेखांकित न कर प्राधिकारी को गुमराह किया है।
- मै. आई सी एल-रोटेम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन की विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी और गुणवत्ता मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड से बेहतर है, तब भी मै. आई सी एल-रोटेम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उत्पादन लागत मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की तुलना में काफी कम है।

मै. कैमटाल राय इंडिया के अनुरोध

26. मै. कैमटाल राय इंडिया ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड दो अलग-अलग वस्तुएं हैं और जांच के दायरे को केवल तकनीकी ग्रेड तक सीमित रखा जाना चाहिए। तकनीकी ग्रेड और फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड के अलग-अलग तकनीकी और रासायनिक विनिर्देशन में और इनका उपयोग उनके अंतिम उत्पादों की उपयुक्तता के अनुसार अलग-अलग उद्योगों द्वारा किया जाता है। एक का उपयोग दूसरे के स्थान पर नहीं किया जा सकता। याचिकाकर्ता का यह तर्क कि संबद्ध वस्तु को फॉस्फोरिक एसिड के रूप में वर्गीकृत किया जाए, भले ही फॉस्फोरिक एसिड-तकनीकी ग्रेड और फॉस्फोरिक एसिड-फूड ग्रेड विधिक या वास्तविक रूप में व्यवहार्य नहीं है। याचिकाकर्ता निर्यातक के अनुरोध को तोड़-मरोड़ कर पेश करने की कोशिश की जा रही है कि यह केवल फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक है ताकि यह अर्थ निकाला जा सके कि निर्यातक द्वारा निर्यातित वस्तु का निर्माण तकनीकी ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड के लिए ही किया गया है। हालांकि भारत को निर्यातित फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड के अधिकतर हिस्से का निर्यात/आयात फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ता द्वारा ही किया गया है और मामूली हिस्से का आयात तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ताओं द्वारा किया गया है और वह भी फॉस्फोरिक एसिड के एक प्रमुख उत्पादक द्वारा बार-बार संयंत्र बंद किए जाने के कारण अथवा अपेक्षित विनिर्देश की वस्तु की आपूर्ति न होने के

कारण । याचिकाकर्ता केवल तकनीकी ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन कर रहा है और उसके पास फूड ग्रेड का उत्पादन करने की क्षमता नहीं है । फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ताओं ने बार-बार फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति याचिकाकर्ता कंपनी से किए जाने की मांग की है परंतु कंपनी ने इसकी आपूर्ति करने में अपनी क्षमता के कारण ऐसा नहीं किया । याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग भेषज, खाद्य तेल निष्कर्षण या खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में और उन ग्राहकों द्वारा (खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आदि में) नहीं किया जा सकता जिनकी जरूरत विशेष तौर फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के संबंध में होती है । याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित फॉस्फोरिक एसिड में अत्यधिक फ्लोराइड तत्व होता है । फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड का आयात बाध्यता की वजह से हुआ है न कि विकल्प की वजह से जिसका कारण घरेलू बाजार में फूड ग्रेड का उपलब्ध न होना है । मै. सोलारिस जो प्रमुख उत्पादकों में से एक है, ने रुक-रुक कर उत्पादन शुरू और बंद किया है जिससे फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ता उहापोह की स्थिति में आ गए हैं । प्रयोक्ता उद्योग अपने उत्पादन और डिलीवरी अनुसूची को बनाए रखने के लिए संबद्ध देशों से इसका आयात करने के लिए बाध्य हुआ है । निर्यातक द्वारा प्रस्तुत निर्यात आंकड़ों और सांख्यिकीय से याचिकाकर्ता के इस दावे का खंडन होता है कि फूड ग्रेड के आयात वस्तुतः ऐसे अनुप्रयोगों के लिए किए गए थे जिनमें तकनीकी ग्रेड का उपयोग किया जा रहा था । भारत में फॉस्फोरिक एसिड के 3 उत्पादक हैं ।

- यदि यह मान भी लिया जाए कि मै. सोलारिस भारत में फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक है तो भी वह इस जांच में याचिकाकर्ता के रूप में न तो शामिल हुआ है और न ही उसने इसका समर्थन किया है । अतः मै. सोलारिस की ओर से याचिकाकर्ता द्वारा किया गया कोई भी अनुरोध कानूनन अस्वीकार्य है । जहां तक मै. पी सी सी पी एल का संबंध है, कंपनी ने केवल याचिकाकर्ता कंपनी की याचिका का समर्थन किया है परंतु उसने बिक्री से संबंधित सूचना को छोड़कर और वह भी फूड ग्रेड तथा तकनीकी ग्रेड का ब्यौरा दिए बिना, सभी 15 आर्थिक संकेतों के संबंध में अपनी सूचना की भागीदारी नहीं की है । उसकी उत्पादन क्षमता, उत्पादन और लाभप्रदता आदि के अभाव में मै. पी सी सी पी एल के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया जा सकता । याचिकाकर्ता के कथन के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि मै. पी सी सी पी एल फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक नहीं है परंतु वह मै. जी ए सी एल से इसकी खरीद करता है । बिक्री सूचना के आधार पर फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादक के रूप में मै. पी सी सी पी एल का पूर्ववृत्त भी संदिग्ध है जिससे वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और याचिकाकर्ता के तर्क के पक्ष में क्षति का कोई विश्लेषण नहीं किया जा सकता । उपर्युक्त तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड को एक समान न समझें अपितु दो अलग-अलग वस्तुएं समझें और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को वर्तमान जांच तथा शुल्क के दायरे से अलग रखें ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

27. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

- आवेदक ने दावा किया है कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु और सम्बद्ध देशों से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात उल्लेखनीय अंतर नहीं

है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु और सम्बद्ध देशों से आयातित सम्बद्ध वस्तु अपनी भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्यो तथा उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में परस्पर तुलनीय है। दोनों तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। उपभोक्ता इनका प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं।

- विचाराधीन उत्पाद "समस्त ग्रेडों और समस्त सांद्रणों का फॉस्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" है। यद्यपि, विश्व भर में फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादक मोटे तौर पर दो प्रक्रियाओं में से किसी एक अर्थात् वैट प्रक्रिया या शुष्क प्रक्रिया का उपयोग करते हैं परंतु दोनों की प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार तुलनीय है।
- फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के परिशोधित रूप के अलावा, कुछ नहीं है। तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड में परिवर्तित करने के लिए केवल अतिरिक्त शोधन प्रक्रिया की जरूरत होती है जिसमें केवल भाष का उपयोग किया जाता है।
- मै. जी ए सी एल द्वारा तकनीकी ग्रेड का उत्पादन किया जाता है जबकि भारत में फूड ग्रेड का उत्पादन मै. सोलारिस कैमटेक तथा मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि., द्वारा किया जाता है। मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. ने प्राधिकारी को पूर्ण सूचना प्रस्तुत की है जिस पर प्राधिकारी ने प्रारंभिक निर्धारण में विचार किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. जहां तक समान वस्तु का संबंध है, पाटनसेधी नियमावली के नियम 2 (घ) में निम्नानुसार उपबंधित है :-

"समान वस्तु" से वह वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटित की जा रही जांचाधीन वस्तु से सभी मामलों में एकसमान अथवा समान हैं अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु प्रयुक्त की जाती है जो यद्यपि सभी रूप में समान नहीं हैं परंतु उसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु से बहुत मिलती जुलती हैं;

29. जहां तक मै. येओउ एफ ए कैमिकल कंपनी लि., ताइवान द्वारा दायर किए गए अनुरोधों का संबंध है, उन पर विचार किया गया है और यह पाया गया कि कंपनी ने निर्धारित प्रपत्र के अनुसार निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर करने की जहमत उठाए बिना निर्यात

बिक्री तथा घरेलू बिक्री के रिकॉर्डों का उल्लेख करते हुए मात्र कुछ शीटें दायर की हैं। उनके द्वारा किए गए निवेदन के उत्तर में प्राधिकारी ने दिनांक 6 अप्रैल, 2011 के अपने पत्र द्वारा अन्य बातों के साथ कंपनी को सूचित किया कि उनके इस दावे के प्रमाण के लिए कि वह भारत में सम्बद्ध वस्तुओं का पाटन नहीं कर रहे हैं, उन्हें निर्धारित प्रारूप में निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है। पत्र के साथ एक प्रश्नावली भी संलग्न की गई थी और यह भी स्पष्ट किया गया था कि इसे विभाग की वेबसाइट www.commerce.nic.in से डाउनलोड किया जा सकता है। इस पत्र में यह भी स्पष्ट किया गया था कि अपेक्षित सूचना/आंकड़ों के अभाव में प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार अपने जांच परिणाम उपलब्ध तथ्यों के आधार पर दर्ज करने हेतु बाध्य होंगे।

30. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. येओऊ एफ ए कैमिकल कंपनी लिमिटेड उपर्युक्त स्पष्टीकरण के बावजूद अपेक्षित सूचना/आंकड़े उपलब्ध कराने में विफल रही है। चूंकि कंपनी अपने दावों की पुष्टि करने में विफल रही है और उसने निर्धारित प्रपत्र के अनुसार अपना उत्तर प्रस्तुत नहीं किया इसलिए प्राधिकारी पाटनरोधी नियमों के अनुसार रिकॉर्ड में "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर कार्रवाई करने के लिए बाध्य हुए हैं।

31. जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि मै. जी ए सी एल केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है और वह फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है जबकि आई सी एल-रोटैम केवल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है और वह तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड गुणवत्ता का विनिर्माण करती है और उसके पास इसकी आपूर्ति करने का प्रतिष्ठित ग्राहक आधार है। इसके अलावा, मै. आई सी एल-रोटैम ने अपने उत्तर में यह स्वीकार किया है कि उसने जांच अवधि के दौरान भारत को भी तकनीकी ग्रेड के रूप में विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड गुणवत्ता का निर्यात किया है और इस प्रकार उसने घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित समान वस्तु के तकनीकी ग्रेड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा की है।

32. जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि फॉस्फोरिक एसिड के अलग-अलग ग्रेड "समान उत्पाद" नहीं हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद को इस जांच की शुरुआत के चरण में "सभी ग्रेडों और सभी सांद्रणों का फॉस्फोरिक एसिड (कृषि और उर्वरक ग्रेड को छोड़कर)" के रूप में स्पष्ट तौर पर परिभाषित किया गया था और पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार घरेलू उद्योग समान वस्तु का विनिर्माण करता है। उपर्युक्त के अलावा, मै. पी सी सी पी एल विचाराधीन उत्पाद के फूड ग्रेड की गुणवत्ता का विनिर्माण करती है। इसके अलावा, मै. आई सी एल-रोटैम ने अपने उत्तर में यह स्वीकार किया है कि उसने जांच अवधि के दौरान भारत को भी तकनीकी ग्रेड के रूप में विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड गुणवत्ता का निर्यात किया है और इस प्रकार उसने घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित समान वस्तु के तकनीकी ग्रेड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा की है।

33. जहां तक इन तर्कों का संबंध है, मै. आई सी एल-रोटैम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन की विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी और गुणवत्ता मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड से बेहतर है, तब भी मै. आई सी एल-रोटैम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उत्पादन लागत मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की तुलना में काफी कम है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उचित तुलना करने के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों का निर्धारण संभव सीमा तक ग्रेडवार आधार पर किया गया है। जहां तक आई सी एल-रोटैम की कम उत्पादन लागत का संबंध है, इस पर उनके पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय विधिवत विचार किया गया है।

34. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि संबद्ध वस्तु के मुख्यतः दो ग्रेड अर्थात् फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड हैं जिनका संबद्ध देशों से निर्यात किया जाता है तथा आगे यह नोट करते हैं कि इन दोनों ग्रेडों का उत्पादन घरेलू उद्योगों द्वारा किया जा रहा है। आगे यह नोट किया जाता है कि विनिर्माण प्रक्रिया में अंतर का तात्पर्य अलग-अलग संबद्ध वस्तु से नहीं होता है। कीमतों पर प्रभाव डालने वाले किसी समायोजन की अनुमति किए गए दावों और प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमों के अनुसार किए गए सत्यापन के अनुसार प्रदान की गई है। यह भी नोट किया जाता है कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के दोनों ग्रेड तकनीकी विशेषताओं, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशों, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के अनुसार तुलनीय हैं। ये तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। यह भी नोट किया जाता है कि मै. आई सी एल-रोटैम की स्वीकारोक्ति के अनुसार फूड ग्रेड का उपयोग तकनीकी ग्रेड के स्थान पर भी किया गया है।

35. अतः प्राधिकारी का यह मत है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु पाटनरोधी नियमों के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

च. घरेलू उद्योग का क्षेत्र और आधार

मै. आई सी एल-रोटैम (इजरायल) के अनुरोध

36. मै. आई सी एल रोटैम ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- मै. जी ए सी एल आई सी एल की संबद्ध पक्षकार है क्योंकि उसने प्रौद्योगिकी और जानकारी हेतु इस कंपनी समूह के साथ संविदा की है। इसके अलावा, मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन पर कंपनी का प्रतिबंध/नियंत्रण है।
- मै. पी सी सी पी एल ने वस्तु के आयात न किए जाने के बारे में ऐसी कोई घोषणा नहीं की है जो अनिवार्य प्रक्रियात्मक अपेक्षा है। अतः उसके समर्थन पत्र को अस्वीकृत

किया जाना चाहिए । मै. पी सी सी पी एल के समर्थन के बिना मै. जी ए सी एल का हिस्सा कुल भारतीय उत्पादन का 50 प्रतिशत नहीं बनेगा ।

मै. कैमटाल राय इंडिया के अनुरोध

37. मै. कैमटाल राय इंडिया ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- यह जांच मै. जी ए सी एल द्वारा याचिका के आधार पर शुरू की गई थी और मै. जी ए सी एल फूड ग्रेड का उत्पादन नहीं करती है अतः ऐसी किसी वस्तु पर शुल्क लगाने की मांग करने या याचिका दायर करने का उसके पास कोई आधार नहीं है जिसका उत्पादन वह नहीं करती है । तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक होने के बारे में याचिकाकर्ता के आधार को फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड को शामिल करने तक बढ़ाया नहीं जा सकता । इस बात से इंकार किया जाता है कि मै. पी सी सी पी एल ने समस्त क्षति मापदंडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है । एकमात्र सूचना जो याचिका और प्रारंभिक जांच परिणाम में उपलब्ध है वह बिक्री आंकड़ों से संबंधित है । मै. पी सी सी पी एल ने निर्धारित प्रपत्र में कोई सूचना दायर नहीं की है ताकि पी सी सी पी एल के आधार पर किसी क्षति का निर्धारण किया जा सके । अतः पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग करने के लिए कोई याचिका दायर करने हेतु याचिकाकर्ता का आधार तकनीकी ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड तक सीमित है और इसकी परिकल्पना फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड को शामिल करने के लिए नहीं की जा सकती ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

38. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

- मै. जी ए सी एन ने आई एम आई (आई सी एल समूह की कंपनी) के साथ किसी करार पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं । यदि यह मान भी लिया जाए कि मै. जी ए सी एल आई एम आई से संबंधित है, तो भी विधिक या प्रचालनात्मक नियंत्रण के अभाव में मै. जी ए सी एल तथा मै. आई सी एल के बीच कोई संबंध नहीं है । एक पक्षकार द्वारा दूसरे पक्षकार से प्रौद्योगिकी की खरीद करना दोनों पक्षकारों के बीच व्यापार होता है और इससे नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर विधिक संबंध नहीं बरता है ।
- आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मै. गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि., बड़ौदा द्वारा दायर किया गया है जिसका समर्थन मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. द्वारा किया गया है । आवेदक का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है । इसके अलावा, समर्थक के साथ आवेदक का उत्पादन भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है ।
- जांच की शुरुआत के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए अन्य घरेलू उत्पादकों सहित अन्य हितबद्ध पक्षकारों से सूचना मांगना अपेक्षित होता है । ऐसे मामले में यदि सूचना निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रदान की गई है तो उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता । अतः पी सी सी पी एल के उत्तर को अस्वीकार नहीं किया जा सकता ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

39. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :—

“घरेलू उद्योग” से समान वस्तु के विनिर्माण तथा उससे जुड़े किसी अन्य कार्यकलाप में संलग्न सभी घरेलू उत्पादक अथवा वे उत्पादक जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख अनुपात बनता है, अभिप्रेत हैं, सिवाय तब जब ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा स्वयं उसके आयातक हों, ऐसे मामले में ‘घरेलू उद्योग’ में केवल शेष उत्पादकों को शामिल माना जाएगा।”

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने पाटनरोधी नियमावली के अनुसार अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करने के लिए सभी घरेलू उत्पादकों को लिखा था । इसके उत्तर में मै. सोलारिस कैमेटेक ने उत्तर दिया है परंतु मै. पंजाब कैमिकल्स एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं जिनका सत्यापन किया गया है और इस जांच में विचार किया गया है ।

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल ने यह कहते हुए घोषणा पत्र दायर किया है कि उसके द्वारा जांच अवधि तथा क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया गया था । इस तथ्य के बावजूद पाटनरोधी नियमों और विनियमों के अंतर्गत ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है कि पाटन के कारण हुई क्षति को दूर करने की मांग करने से पूर्व घरेलू उद्योग का हिस्सा कुल भारतीय उत्पादन में 50% होना चाहिए ।

42. मै. पी सी सी पी एल ने भी क्षति मापदंडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है और यह कंपनी संबद्ध वस्तु के फूड ग्रेड का भी उत्पादन करती है । अतः ऐसा कोई तर्क कि जांच केवल फॉस्फोरिक एसिड के तकनीकी ग्रेड तक सीमित रखी जाए, तथ्यरहित होने के कारण स्वीकार्य नहीं है ।

43. जहां तक प्रौद्योगिकी और जानकारी के लिए मै. जी ए सी एल का आई सी एल समूह की कंपनी के साथ संविदा होने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इससे नियम 2 (ख) के अनुसार मै. जी ए सी एल घरेलू उद्योग के रूप में विचार किए जाने से वंचित नहीं होगी । मै. जी ए सी एल पर आई सी एल समूह की कंपनी का स्पष्ट तौर पर कोई विधिक तथा प्रचालनात्मक नियंत्रण नहीं है; इसके अलावा मै. जी ए सी एल भारत में संबद्ध वस्तु की एक प्रमुख उत्पादक बनी हुई है और उसने घरेलू उद्योग के रूप में अपनी भूमिका छोड़ी नहीं है । वस्तुतः मै. जी ए सी एल इस मामले में आवेदक है जिसने संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण उसे हुई क्षति को दूर करने की मांग की है ।

44. यह आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मेसर्स गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि०, बड़ौदा ने प्रस्तुत किया है और मेसर्स पंजाब केमिकल्स एंड क्राप प्रोटेक्शन लि० ने इसका समर्थन किया है। रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार आवेदक का कुल भारतीय उत्पादन में योगदान लगभग 45 प्रतिशत है। समर्थक के साथ आवेदक का उत्पादन, भारतीय उत्पादन से 50 प्रतिशत अधिक है।

45. इस प्रकार यह आवेदन पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करता है और समर्थक के साथ आवेदक को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर 'घरेलू उद्योग' माना जा रहा है।

छ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

सामान्य मूल्य

मै. आई सी एल-रोटेम (इजरायल) के अनुरोध

46. मै. आई सी एल रोटेम ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- इसने प्राधिकारी की अपेक्षानुसार घरेलू बिक्री और उत्पादन लागत से संबंधित समस्त संगत सूचना प्रस्तुत की। यह आरोप लगाना गलत है कि मै. आई सी एल-रोटेम ने संगत सूचना प्रदान नहीं की है। प्राधिकारी ने मै. आई सी एल द्वारा प्रस्तुत परिशिष्टों पर भरोसा न करने के कारण दर्ज नहीं किए हैं।
- सामान्य मूल्य का निर्धारण भारत में विनिर्माण की उत्पादन लागत के आधार पर नहीं किया जा सकता। एच सी एल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत इजरायल हेतु सामान्य मूल्य के लिए प्रदान नहीं की जा सकती क्योंकि मै. आई सी एल एच सी एल का उपयोग नहीं करती है।
- विनिर्माण प्रक्रिया में अंतरों को ध्यान में रखा जाना चाहिए था और तदनुसार उसे इजरायल हेतु पहुंच मूल्य की गणना में शामिल किया जाना चाहिए था। इसके अलावा, फूड ग्रेड तथा तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के लिए सामान्य मूल्य की गणना अलग-अलग की जानी चाहिए। प्राधिकारी को फॉस्फोरिक एसिड के प्रत्येक ग्रेड के लिए आयातों की मात्रा पर विचार करते हुए तकनीकी ग्रेड के सामान्य मूल्य, कीमत कटौती की गणना करनी चाहिए थी।

मै. कैमटाल राय इंडिया के अनुरोध

47. मै. कैमटाल राय इंडिया ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

- याचिकाकर्ता ने यह कोरा बयान दिया है कि उसने संबद्ध देशों के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत की सूचना/साक्ष्य प्राप्त करने के उचित प्रयास किए थे। तथापि,

इस दावे की पुष्टि करने के लिए याचिकाकर्ता ने ऐसी किसी प्रक्रिया का कोई साक्ष्य दायर नहीं किया था । दोनों देशों के निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है । उसमें सामान्यतः संबद्ध देशों और खासकर प्रतिवादी निर्यातकों के बारे में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना निहित है । अतः प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह खासकर कच्ची सामग्री की लागत, खपत मानक और परिवर्तन लागत के संबंध में व्यवहार्य सीमा तक इसका उपयोग करें ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

48. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- घरेलू उद्योग ने फूड तथा तकनीकी रूप के लिए पृथक पाटन मार्जिन का अनुमान लगाया है । तत्पश्चात संबद्ध भार को ध्यान में रखते हुए भारत औसत पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है । इस प्रकार संगणित पाटन मार्जिन न केवल पर्याप्त है अपितु काफी अधिक भी है ।
- प्राधिकारी द्वारा मांग किए जाने के बावजूद निर्यातक ने निर्धारित समय के भीतर संगत सूचना प्रदान नहीं की । प्राधिकारी ने इस संबंध में विशिष्ट जांच परिणाम नोट किए हैं ।
- जहां तक निर्यातक द्वारा एच सी एल का उपयोग न किए जाने का संबंध है, यह उल्लेखनीय है कि प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों में उल्लेख किए अनुसार कंपनी ने पूर्ण सूचना प्रस्तुत नहीं की । अतः प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर कार्रवाई की है ।
- शुल्क का निर्धारण पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के रूप में किया जाता है न कि कटौती के रूप में । उच्चतर कटौती कम निर्यात कीमत के कारण हो सकती है, तथापि, पाटन मार्जिन उक्त बाजार में कम सामान्य मूल्य के कारण क्षति मार्जिन से कम हो सकता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

49. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. आई सी एल-रोटेम ने प्राधिकारी की अपेक्षानुसार घरेलू बिक्री तथा उत्पादन लागत से संबंधित समस्त संगत सूचना प्रस्तुत की थी, प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणाम की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जिसमें इस बात को विशेष तौर पर दर्ज किया गया है कि कंपनी ने संगत परिशिष्टों में आंकड़े प्रदान नहीं किए हैं ताकि प्राधिकारी उचित व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच कर सकें । तदनुसार कंपनी से अपूर्णता पत्र के तहत अनुरोध किया गया था कि वह अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करें । यह भी नोट किया गया था कि अवसर प्रदान किए जाने के बावजूद कंपनी ने निर्धारित समय के भीतर

संगत सूचना प्रदान नहीं की। अतः प्राधिकारी कंपनी की घरेलू बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं कर सके और वह पाटनरोधी नियमावली के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ऐसा करने के लिए बाध्य हुए।

50. जहां तक इस दावे का संबंध है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण भारत में विनिर्माण हेतु उत्पादन लागत के आधार पर नहीं किया जा सकता, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वे कंपनी की घरेलू बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं कर सके और वे प्रारंभिक जांच परिणामों के निर्धारण के प्रयोजनार्थ पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ऐसा निर्धारण करने के लिए बाध्य हुए थे।

51. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि विनिर्माण प्रक्रिया में अंतर को ध्यान में रखा जाना चाहिए और तदनुसार इजरायल हेतु सामान्य मूल्य के निर्धारण में उसे शामिल किया जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों एवं विनियमों में यह अपेक्षित नहीं है कि पहुंच मूल्य के निर्धारण हेतु विनिर्माण प्रक्रिया में किसी अंतर को ध्यान में रखना होगा। तथापि, क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु उचित तुलना करने के लिए सामान्य मूल्य की तुलना ग्रेड वार आधार पर संगत क्षति रहित कीमत के साथ की गई है। इसके अलावा, सामान्य मूल्य तथा कीमत कटौती का निर्धारण फूड ग्रेड और तकनीकी ग्रेड के लिए अलग-अलग किया गया है।

52. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक ने इस आशय का कोरा वक्तव्य दिया है कि संबद्ध देशों के घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की कीमत की सूचना/साक्ष्य हेतु उसने उचित प्रयास किए थे और यह कि इसकी पुष्टि हेतु याचिकाकर्ता द्वारा किए गए ऐसे प्रयास का कोई साक्ष्य दायर नहीं किया गया था, यह तर्क सही नहीं है। इसके अलावा, इजरायल के केवल एक निर्यातक ने इस जांच में सहयोग किया है और ताइवान के किसी भी निर्यातक ने निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर कर प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है। इसके होते हुए भी असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना का उपयोग किया गया है।

सामान्य विधि

53. प्राधिकारी ने नोट किया है कि जांच अवधि के दौरान प्रमुख कच्चे माल की कीमतों में उल्लेखनीय अंतर आया है, अतः सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा परिणामी पाटन मार्जिन का निर्धारण माहवार विश्लेषण के आधार पर किया गया है। इसके अलावा, व्यवहार्य सीमा तक सम्बद्ध वस्तुओं के विभिन्न ग्रेडों के अंतर को ध्यान में रखते हुए भी विश्लेषण किया गया है।

इस्राइल और ताइवान के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण

54. प्राधिकारी ने सम्बद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भिजवाई थी, जिसमें उनसे निर्धारित प्रारूप तथा तरीके से सूचना प्रस्तुत करने की सलाह दी

गई थी । तथापि, इस मामले में केवल मेसर्स इस्राइल केमिकल -रोटेम एमफर्ट नेगेव लि०, इस्राइल ने ही निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं ।

मेसर्स इस्राइल केमिकल लि०, रोटेम एमफर्ट नेगेव लि., इस्राइल

55. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अध्ययन किया गया । यह कहा गया है कि कंपनी केवल खाद्य ग्रेड के फास्फोरिक का उत्पादन करती है और यदि तकनीकी ग्रेड की मांग होती है तो इसे तकनीकी ग्रेड के रूप में खाद्य ग्रेड की आपूर्ति से पूरा किया जाता है । आगे यह भी कहा गया है कि यद्यपि वस्तुओं का उत्पादन और बिक्री घरेलू बाजार हेतु की जाती है और भारत को निर्यातित वस्तुएं समान हैं, परंतु उनके सांद्रण स्तर में अंतर होता है । यह नोट किया गया है कि प्राधिकारी को व्यापार की सामान्य पद्धति संबंधी परीक्षण करने में समर्थ बनाने हेतु कंपनी ने संबंधित परिशिष्टों खासकर परिशिष्ट 8-ख में आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए थे । तदनुसार, एक पत्र के माध्यम से कंपनी से अपेक्षित सूचना/आंकड़े उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था ।

56. तथापि, यह नोट किया जाता है कि अवसर प्रदान किए जाने के बावजूद कंपनी ने प्रासंगिक सूचना निर्धारित समय के भीतर उपलब्ध नहीं कराई है । मौके पर सत्यापन के दौरान भी कंपनी निर्धारित व्यय के बारे में कोई संतोषजनक सूचना प्रदान नहीं कर सकी । अतः प्राधिकारी कंपनी की घरेलू बिक्री के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने में समर्थ नहीं है और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार इसे 'उपलब्ध तथ्यों' के आधार पर करने हेतु बाध्य है । इस प्रयोजनार्थ मै. रोटेम एम्फर्ट नेगेव लि. की परिवर्ती लागत अर्थात् कच्ची सामग्री तथा उपयोगिताओं पर विचार किया गया है । तथापि, इस बात पर विचार करते हुए कि कंपनी ने मौके पर सत्यापन के दौरान संगत दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए । रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अन्य कारकों को अपनाया गया है । तथापि, कंपनी द्वारा प्राप्त वास्तविक लाभ को इस प्रयोजनार्थ स्वीकार किया गया है ।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस्राइल तथा ताइवान के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है अतः उनके मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण 'उपलब्ध तथ्यों' के आधार पर किया गया है । तदनुसार, सामान्य मूल्य सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर संरचित किया गया है । हालांकि इस्राइल के मामले में सहयोगी निर्यातक हेतु सामान्य मूल्य अपनाया गया है जो *** अम.डॉ. बनता है । परंतु ताइवान के लिए इसका परिकलन कच्ची सामग्री अर्थात् रॉक फॉस्फेट तथा हाइड्रोजन पेरोक्साइड की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों ; रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के अनुसार खपत मानक और परिवर्तन लागत पर विचार करते हुए किया गया है एवं

इस प्रकार निकाली गई लागत में 5 प्रतिशत का लाभ मार्जिन जोड़ा गया है ताकि परिकलित सामान्य मूल्य निर्धारित किया जा सके जो *** अम.डा. बनता है ।

निर्यात कीमत

प्रतिवादी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत

मेसर्स रोटम एमफर्ट नेगेव लि० के माध्यम से मेसर्स इस्राइल केमिकल लि०, इस्राइल

58. प्राधिकारी ने यह जांच की कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर प्रतिवादी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमतों का निर्धारण किया जा सकता है। प्रतिवादी ने भारत को किए गए निर्यातों के संबंध में परिशिष्ट 2 में सूचना उपलब्ध कराई है । यह नोट किया जाता है कि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को *** मी०टन सम्बद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है । सत्यापन के दौरान अंतर्देशीय माल भाड़े, समुद्रपारीय माल भाड़े, कमीशन, भंडारण, पैकेजिंग लागत, समुद्री बीमे, आईसीएल शुल्क, ऋण लागत तथा छूट के संबंध में समायोजनों को नोट किया गया था। सत्यापन प्रक्रिया के दौरान दिखाए गए दस्तावेजों के अनुसार कंपनी द्वारा किए गए दावों में कुछ सुधार किए गए थे जिन्हें सत्यापन के उपरांत स्वीकार किया गया है । इसके अलावा, यह नोट किया गया है कि कंपनी को वैट की वापसी प्राप्ति नहीं होती है, अतः समायोजन भी निर्यात कीमत में किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत ***अम.डालर/मी०टन बनती है ।

असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों हेतु निर्यात कीमत का निर्धारण

59. चूंकि सम्बद्ध वस्तुओं के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है अतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार निर्यात कीमत का निर्धारण 'उपलब्ध तथ्यों' के आधार पर किया है । रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार आंकड़ों को तालिकाबद्ध किया गया है । तदनुसार, इस्राइल के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों हेतु निवल निर्यात कीमत ***अम. डालर/मी०टन बनती है । इसके अलावा, ताइवान के उत्पादकों/निर्यातकों हेतु निवल निर्यात कीमत ***अम. डालर/मी०टन बनती है ।

पाटन मार्जिन

60. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमतों पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जो निम्नानुसार हैं :

| अम.डालर/मी0टन में | | | | | | | |
|-------------------|---------|------------------------------|---------------------------|---------------|-------------------|--------------|------------------------------|
| क्र.सं. | देश | उत्पादक | निर्यातक | सामान्य मूल्य | निवल निर्यात कीमत | पाटन मार्जिन | पाटन मार्जिन का प्रतिशत—रेंज |
| 1. | इस्राइल | मेसर्स रोटम एमफर्ट नेगेव लि0 | मेसर्स इस्राइल केमिकल लि0 | *** | *** | *** | 25-40 |
| 2. | इस्राइल | अन्य सभी निर्यातक / उत्पादक | | *** | *** | *** | 30-45 |
| 3. | तइवान | सभी निर्यातक / उत्पादक | | *** | *** | *** | 15-30 |

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

61. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान प्रमुख कच्चे माल के कीमतों में उल्लेखनीय अंतर आया है, अतः क्षति विश्लेषण व्यवहार्य समझी गई सीमा तक माहवार आंकड़ों के आधार पर किया गया है। इसके अलावा, ऐसा करते समय सम्बद्ध वस्तुओं के विभिन्न ग्रेडों के अंतर पर भी विधिवत विचार किया गया है।

मै. आई सी एल-रोटेम (इजरायल) के अनुरोध

62. मै. आई सी एल -रोटेम ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :-

- मै. जी ए सी एल रॉक फॉस्फेट का जापान से आयात करने के बाद तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करती है। मै. जी ए सी एल का निष्पादन कच्ची सामग्री की खरीद के एक स्रोत या माध्यम के कारण प्रभावित हुआ है। इसके विपरीत मै. आई सी एल के सामने ऐसी परेशानी कभी नहीं आई। मै. जी ए सी एल के समक्ष कच्ची सामग्री (रॉक फॉस्फेट) की खरीद में परेशानियां आई थीं और ऐसा मै. आई सी एल-रोटेम के मामले में नहीं था।
- फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के संबंध में आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण सर्वथा अनुचित है।
- प्राधिकारी ने इजराइल के लिए कीमत कटौती की कम रेंज की गणना की है जबकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति का गलत निर्धारण किया है।
- यह तर्क दिया गया है कि जी ए सी एल ने उस वर्ष के अपने निष्पादन का मूल्यांकन करते समय वर्ष 2008-09 में मंदी के प्रभाव को छुपाया है और इसलिए इसे

अस्वीकार किया जाना चाहिए । मै. जी ए सी एल ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट (2008-09) में यह दावा किया है कि वर्ष 2008-09 के दौरान कंपनी ने सभी संयंत्रों की उच्च प्रचालन दक्षता हासिल की और फॉस्फोरिक एसिड के संबंध में अब तक की सर्वाधिक बिक्री की ।

- यदि आयातित उत्पाद भारत में उत्पादित उत्पाद से भिन्न ग्रेड का है तो आयातित उत्पाद के स्थान पर भारत में उत्पादित उत्पाद का उपयोग नहीं किया जा सकता । आयातित उत्पाद घरेलू रूप से उत्पादित उत्पाद के साथ वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा में भी नहीं है और इस प्रकार घरेलू रूप से उत्पादित उत्पाद को इससे कोई वास्तविक क्षति नहीं होती है और यह कि आयातित उत्पाद और घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं हो सकता । मै. जी ए सी एल को हुई क्षति की गणना करने के लिए फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि वह फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं करती है । भारत को अधिकांश निर्यात फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के होते हैं जिससे घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रभावित नहीं हो सकता । इसके अलावा, यदि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं होती है तो पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित नहीं है क्योंकि इससे भारतीय विनिर्माताओं का कोई संरक्षण किए बिना भारतीय आयातकों के लिए लागत में केवल वृद्धि होती है । इसके अलावा, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के अभाव में पाटनरोधी शुल्क लगाना अनुमत्य नहीं है ।
- पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से अंतिम उपभोक्ताओं पर अधिक बोझ पड़ेगा जो वे पहले से भारतीय रूप में गिरावट के मद्देनजर वहन कर रहे हैं । संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के किसी प्रयास से अंतिम प्रयोक्ता उद्योग लागत मित्वयी उत्पादों से वंचित होगा और घरेलू उद्योग पाटनरोधी शुल्क से प्रभावित होगा । भारत में नव स्थापित उद्योग/कारखाने जो केवल अपने उत्पादों के उत्पादन हेतु फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की ही अपेक्षा रखते हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए स्वयं को जीवित नहीं रख सकेंगे कि उन्हें आई सी एल-रोटेम से शुल्क उद्ग्रहीत फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात करना होगा ।
- चूंकि इजरायल कैमिकल्स लि. और/अथवा रोटेम एमफर्ट नेगेव लि. (इजरायल) से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात से उस घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं होती है जो केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का विनिर्माण करता है और यह कि इजरायल से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं हो सकता, इसलिए इजरायल कैमिकल्स लि. और/अथवा रोटेम एमफर्ट नेगेव लि., इजरायल से फॉस्फोरिक एसिड के आयातों पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए ।
- इसके अलावा, मै. जी ए सी एल के लिए उत्पादन क्षमता सीमित है । अतः कारणेतर विश्लेषण को उचित रूप से दर्ज नहीं किया गया है । मात्रात्मक क्षति का दावा मै. जी ए सी एल का उत्पादन सीमित होने/नियंत्रित होने और मै. आई एम आई टी ए एम आई (आई सी एल कंपनी समूह) के साथ संविदा होने के कारण नहीं किया जा सकता जिसके लिए लाइसेंस करार केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के उत्पादन के लिए है ।

- याचिकाकर्ता ने अपनी सूचना में बढ़ा-चढ़ा कर आंकड़े/अपने दावों के विरोधाभासी आंकड़े दायर किए हैं और प्राधिकारी को गुमराह किया है अतः जांच समाप्त की जानी चाहिए, यह माना जा सकता है कि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड प्रस्तावित (संस्तुत) पाटनरोधी शुल्क का विषय नहीं है ।
- मै. जी ए सी एल की निर्यात बिक्री वर्ष 2008-09 में 4 मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में 49 मी.ट. हो गई । उक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि मै. जी ए सी एल अन्य देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने में अधिक इच्छुक है ।
- एक उत्पाद खंड की सुरक्षा दूसरे के बिना पर नहीं की जा सकती । फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड पर पहले से ही 2.5% का मूल सीमाशुल्क लागू है और कुल शुल्क 17.98% है ।
- मै. जी ए सी एल के तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के बाजार हिस्से में मै. आई सी एल रोटैम के फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात के कारण कोई गिरावट नहीं आई है । बिक्री में गिरावट मै. आई सी एल-रोटैम द्वारा निर्यातित फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के कारण नहीं आई है ।
- क्षति के खतरे के बारे में गलत बयानी की गई है जो आई सी एल-रोटैम के भ्रामक क्षमता संबंधी ब्यौरे के कारण हुई है । आई सी एल-रोटैम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के निर्यात के कारण घरेलू उद्योग को क्षति का कोई खतरा नहीं है ।
- घरेलू उद्योग उत्पाद के बारे में उत्पाद विशिष्ट समूह बनाने का प्रयास कर रहा है ।
- अनुमत्य सीमाओं की तुलना करने पर मै. जी ए सी एल की वार्षिक घरेलू बिक्री संविदा में 82% उपयोग पर निर्धारित की गई है । अतः क्षमता उपयोग (74%) के संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोध प्राधिकारी को भ्रमित करने के लिए हैं । मै. जी ए सी एल ने अपनी याचिका, प्रपत्र और उत्पादन एवं बिक्री में निष्पादन के बारे में वार्षिक रिपोर्ट में विरोधाभासी घोषणा की है । प्रपत्र- IV क में दायर और याचिका के साक्ष्य के साथ मै. जी ए सी एल की क्षमता, उत्पादन, घरेलू बिक्री और कुल बिक्री के संबंध में प्रस्तुत आंकड़ों पर नजर डालने से यह पता चलता है कि मै. जी ए सी एल और अधिक बिक्री करने का दावा कर रही है (मात्रा के संबंध में) जो उसकी दावा की गई इस क्षमता के बावजूद है कि उसे अप्रैल, 2006 से जून, 2010 तक फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करना होता है । इसके अलावा, मै. जी ए सी एल की कुल बिक्री मै. जी ए सी एल के उत्पादन से न केवल अधिक है अपितु मै. जी ए सी एल की क्षमता से भी ज्यादा है । उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री (फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात द्वारा) के संबंध में मै. जी ए सी एल द्वारा दावा की गई क्षति निराधार है । मै. पी सी सी पी एल द्वारा बिक्री से संबंधित आंकड़े गलत और भ्रामक हैं । मै. जी ए सी एल और मै. पी सी सी पी एल द्वारा प्रस्तुत सूचना प्राधिकारी द्वारा आकलित मात्रा से काफी कम है ।

मै. कैमटाल रॉय इंडिया के अनुरोध

63. मै. कैमटाल रॉय इंडिया ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

- याचिकाकर्ता को हुई कोई क्षति रॉक फॉस्फेट की अनुपलब्धता के कारण हुई है । याचिकाकर्ता मै. सोलारिस कैमटैक की तुलना में काफी अधिक कीमत पर रॉक फॉस्फेट

का आयात कर रहा है । यह स्पष्ट कारण है जिसकी वजह से मै. सोलारिस याचिकाकर्ता कंपनी की कीमत से कम कीमत पर फॉस्फोरिक एसिड की कीमत तय करती है । मै.सोलारिस की कीमतें मै. जी ए सी एल की कीमत से काफी कम है । संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य की तुलना सोलारिस की बिक्री कीमत के साथ करने पर यह पता चलेगा कि आयातित फॉस्फोरिक एसिड का पहुंच मूल्य मै. सोलारिस के फॉस्फोरिक एसिड की बिक्री कीमत से अधिक है । अतः मै. जी ए सी एल को हुई कोई क्षति का कारण आयातित वस्तु को नहीं माना जा सकता क्योंकि आयातित वस्तु केवल फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड है जिसका उत्पादन याचिकाकर्ता नहीं करता है । आयातित वस्तु का मुख्यतः आयात फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ताओं द्वारा भी किया जाता है जिनके लिए अपने अंतिम उत्पादों के विनिर्माण हेतु फूड ग्रेड की जरूरत होती है । इसके अलावा, मै. सोलारिस कैमटैक की कीमत कम होने के कारण भारत में प्रतिस्पर्धा हेतु बैचमार्क कीमत तय होती हैं ।

- याचिकाकर्ता द्वारा क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ फॉस्फोरिक एसिड के सभी प्रकारों पर विचार किया जा रहा है भले ही वह केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक क्यों न हो । आयात की मात्रा और अंतिम प्रयोक्ता के वर्गीकरण के अभाव में यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि आयातित संबद्ध वस्तु याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित फॉस्फोरिक एसिड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा कर रही है । याचिकाकर्ता को कोई क्षति नहीं हुई है क्योंकि मै. जी ए सी एल केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उत्पादक है जबकि प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रकटित सूचना के अनुसार अधिकांश आयात भेषज और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में विनिर्माण/उत्पादन प्रचालन करने के प्रयोजनार्थ फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ता द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के किए जा रहे हैं । याचिकाकर्ता का यह दावा कि संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद और याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित उत्पाद में तुलनी गुणधर्म हैं क्योंकि विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा रिकॉर्ड में प्रस्तुत साक्ष्य पूर्णतः याचिकाकर्ता के दावे से भिन्न है । इस बात से इंकार किया जाता है कि ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो विभिन्न स्रोतों से आयातित संबद्ध वस्तु और याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग कर रहे हैं । याचिकाकर्ता द्वारा किए गए ऐसे कोरे दावे की पुष्टि करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है । याचिकाकर्ता द्वारा दिया गया यह कथन कि संबद्ध देशों के निर्यातकों और घरेलू उद्योग द्वारा उन्हीं ग्राहकों को उसी अवधि के दौरान उत्पाद की बिक्री की गई है जिससे मामले के गुणदोष से पुनः बचाव किया गया है और जिसका समर्थन किसी साक्ष्य द्वारा नकहीं किया गया है । रिकॉर्ड में लाए गए साक्ष्य के अनुसार याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित और यहां तक कि एम सी सी पी एल द्वारा उत्पादित सामग्री भेषज अनुप्रयोगों में उपयोग करने के लिए उपयुक्त नहीं है । याचिकाकर्ता का यह तर्क कि आयात मात्रा में पर्याप्त वृद्धि हुई है, गलत है और इससे इंकार किया जाता है । सामग्री की प्रकृति, मात्रा और उसके प्रयोक्ताओं के बारे में ध्यान आकर्षित किया जाता है । अधिकांश आयात फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के

प्रयोक्ता द्वारा फॉस्फोरिक एसिड की अपेक्षा वाली वस्तु के विनिर्माण में प्रयोग होने वाली फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के लिए किए गए हैं जिनमें फ्लूरिन के उच्च स्तर के साथ-साथ कम से कम अन्य अशुद्धताएं तथा अपूर्णताएं होती हैं ।

- भारत में संबद्ध वस्तु के दो प्रमुख उत्पादकों अर्थात् मै. जी ए सी एल तथा मै. सोलारिस में से संबद्ध वस्तु के दूसरे उत्पादक द्वारा कंपनी के प्रचालनों को बनाए रखने का संघर्ष किया जा रहा है जिससे आपूर्ति में व्यवधान आया है । फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ताओं को सामान्य तौर पर और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ताओं को विशेष रूप से भारत में संबद्ध वस्तु के आयात पर निर्भर रहना होता है । फॉस्फोरिक एसिड का आयात मै. सोलारिस के उत्पादन की बंदी/रूकावट से सीधे संबंधित होता है । संबद्ध वस्तु की अनापूर्ति और अनुपलब्धता से न केवल प्रयोक्ता उद्योग का डिलीवरी कार्यक्रम बाधित हुआ है अपितु कई बार कच्ची सामग्री की अनुपलब्धता के कारण संयंत्र बंद भी करने पड़े हैं । मै. जी ए सी एल द्वारा मै. सोलारिस के संयंत्र बंदी का लाभ उठाया जा रहा है और उसने कीमत में बढ़ोतरी की है । ऐसी बाधा और व्यवधान पर काबू पाने के लिए प्रतिवादी प्रयोक्ता सहित और प्रयोक्ता उद्योग के पास विदेश से फॉस्फोरिक एसिड का आयात करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा है ।
- कोई कीमत प्रभाव या कीमत हासकारी/न्यूनकारी प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि संबद्ध वस्तु का आयात घरेलू कंपनी द्वारा उत्पादित फॉस्फोरिक एसिड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं करता है, याचिकाकर्ता कंपनी के निष्पादन पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं हो सकता है ।
- याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत आर्थिक मापदंड केवल तकनीकी ग्रेड के बारे में हैं । चूंकि संबद्ध वस्तु के आयात उक्त वस्तु के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं, इसलिए संबद्ध वस्तु के कारण कोई क्षति नहीं हुई है । फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का आयात हुआ है और याचिकाकर्ता कंपनी तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन कर रही है । मै. पी सी सी पी एल ने न तो अपना पूर्ववृत्त और न ही अपने आंकड़े दिए हैं । आयातित वस्तु याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित तकनीकी ग्रेड से प्रतिस्पर्धा नहीं कर रही है ।
- मै. जी ए सी एल फूड ग्रेड-फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन नहीं कर रही है परंतु मै. जी ए सी एल की कीमत सोलारिस द्वारा उत्पादित और विक्रीत फॉस्फोरिक एसिड से अधिक है । यह अनुरोध किया जाता है कि मै. जी ए सी एल की कीमत मै. सोलारिस द्वारा बिक्रीत फॉस्फोरिक एसिड की कीमत से काफी अधिक है । इसके अलावा, मै. जी ए सी एल ने अक्टूबर, 2011 में कीमत में वृद्धि की है और यह वृद्धि तीन माह की अवधि के भीतर लगभग 32% की रही है । यदि प्रारंभिक पाटनरोधी शुल्क लागू किया जाता है तो इस कीमत में और वृद्धि होने की संभावना है । निर्धारित रूप में संस्तुत पाटनरोधी शुल्क से फॉस्फोरिक एसिड की कीमत में आगे और वृद्धि होगी जिससे याचिकाकर्ता उचित लाभ की बजाए बेशी लाभ की मांग करेगा ।

- संस्तुत किए जाने पर शुल्क संदर्भ कीमत पर होना चाहिए खासकर भारतीय रूपए के अवमूल्यन से याचिकाकर्ता के संरक्षण स्थल में वृद्धि होगी । निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए संदर्भ कीमत पर पाटनरोधी शुल्क का नियतन अपेक्षित है :
 - याचिकाकर्ता फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक नहीं है ।
 - मै. सोलारिस अर्थात फॉस्फोरिक एसिड का एक अन्य प्रमुख उत्पादक का उत्पादन उत्पादन क्षमता का लगभग 50% है और उसने अपनी आंतरिक समस्याओं के कारण कई बार अपना उत्पादन बंद किया है जिससे प्रयोक्ता उद्योग को गंभीर संकट का सामना करना पड़ा है जिन्हें खासकर फूड ग्रेड के फॉस्फोरिक एसिड के आयात पर अनिवार्यतः निर्भर रहना होता है ।
 - नियम रूप में पाटनरोधी शुल्क के नियतन से याचिकाकर्ता की ओर अधिक लाभ देने की अनुमति मिलेगी क्योंकि कीमतों का नियतन निवेश पर उचित आय के बजाए शुल्क की मात्रा के अनुसार किया जाएगा । भारतीय उद्योग द्वारा नियत पाटनरोधी शुल्क का लाभ उठाया जा रहा है और इस प्रकार वह प्रयोक्ता उद्योग के बिना पर अनुचित रूप से अधिक मार्जिन का लाभ उठाने में समर्थ होगा ।
 - रूपए के अवमूल्यन से याचिकाकर्ता के संरक्षण स्तर में और वृद्धि होगी क्योंकि आयात महंगे हो जाएंगे ।
- याचिकाकर्ता को क्षति रॉक फॉस्फेट की अनुपलब्धता के कारण हुई है । याचिकाकर्ता द्वारा मै. सोलारिस की तुलना में उच्च कीमत पर रॉक फॉस्फेट का आयात किया जा रहा है ।
- मजदूरी में वृद्धि के प्रभाव की उचित जांच नहीं की गई है । मजदूरी में वृद्धि से उत्पादकता घटी है जिससे याचिकाकर्ता की लाभप्रदता में गिरावट आई है ।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

64. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नलिखित निवेदन किए हैं :-

- जब वर्ष 2008-09 में पहली बार सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के आयात किए गए थे, जांच अवधि में उनकी मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। आयातों में उत्पादन, कुल आयात और भारत में खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । सम्बद्ध देशों से आयात का हिस्सा जो आधार वर्ष में शून्य था, जांच अवधि में बढ़कर 17.41 % हो गया ।
- आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कीमत कटौती हो रही है । कीमत कटौती की परिणति कीमत अवमूल्यन में हो रही है जो उत्पादन लागत में गिरावट से भी अधिक है जिससे कीमत में वह वृद्धि नहीं हो रही है जो पाटन के अभाव में बढ़ गई होती ।

- जांच अवधि में, जब आयातों में अत्यधिक वृद्धि देखी गई, तब उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से, लाभ, निवेश से आय, नकद प्रवाह तथा माल सूचियों के रूप में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट आई। रोजगार और मजदूरी में गिरावट देखी गई है। ऐसा इस वजह से हुआ है कि याचिकाकर्ता एक बहु-उत्पाद कंपनी है और रोजगार एवं मजदूरी केवल संबद्ध वस्तु के निष्पादन पर निर्भर नहीं है।
- घरेलू उद्योग पाटन के पिछले प्रभावों से उबरने की प्रक्रिया में था परन्तु इस उत्पाद के नए पाटन से उबरने की प्रक्रिया रुक गई है। उद्योग को पहले कोरिया से पाटन का सामना करना पड़ा था। उद्योग को अब सम्बद्ध देशों से पाटन का फिर सामना करना पड़ रहा है। चीन और कोरिया गणराज्य से किए गए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार प्रत्याशित था। मूल्य से संबंधित मानदंडों के रूप में कार्य निष्पादन में सुधार वर्ष 2008-09 में कुछ समय तक हुआ भी था। परन्तु इसमें वर्ष 2009-10 में फिर गिरावट आई।
- वर्तमान अवधि के दौरान कार्य निष्पादन में आई गिरावट वास्तविक है और अत्यधिक है।

अन्य मुद्दे

- रिकॉर्ड में ऐसी कोई सामग्री नहीं है जिससे यह सिद्ध हो सके कि फूड ग्रेड पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से इस खंड के उपभोक्ताओं के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह वक्तव्य केवल कथन है जिसमें पुष्टि का अभाव है।
- याचिका मै. जी ए सी एल ने दायर की है। अतः याचिका में मै. जी ए सी एल के आंकड़े निहित हैं। जबकि मै. पी सी सी पी एल ने जांच की शुरुआत के बाद आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। प्रारंभिक जांच परिणाम में दिए गए आंकड़े समग्र घरेलू उद्योग के लिए हैं। अतः याचिका में प्रस्तुत आंकड़े और प्रारंभिक जांच परिणाम में दिए गए आंकड़े अलग-अलग हो सकते हैं।
- मै. सोलारिस कैमटैक को शामिल करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है। विरोधी पक्षकारों ने इस आशय का गलत बयान दिया है कि मै. सोलारिस बंद है और प्रचालन नहीं कर रही है जिसका कंपनी ने विरोध किया है और कंपनी ने घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने वाले अपने पत्र में इस बात की पुष्टि की है कि कंपनी इस उत्पाद का नियमित उत्पादन कर रही है।
- फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की खपत में वृद्धि फूड अनुप्रयोग में हुई वृद्धि नहीं है। फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की खपत वहां की जा रही है जहां उपभोक्ता पूर्व में तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की खपत कर रहे थे। प्रतिवादी निर्यातक ने यह

स्वीकार किया है कि उसने उन ग्राहकों को फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की आपूर्ति की है जो तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उपयोग कर रहे थे । अतः फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड में वृद्धि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड में जरूरत में वृद्धि के कारण नहीं हुई है । ऐसा तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड से अत्यधिक मिलती जुलती कीमत पर फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की उपलब्धता के कारण हुआ है जिसकी वजह से तकनीकी फॉस्फोरिक एसिड के बाजार का स्थानापन्न हुआ है ।

- मै. पी सी सी पी एल ने वस्तुतः 5.5.2011 के प्राधिकार पत्र में आयात के बारे में घोषणा की है जो प्राधिकारी के पास उपलब्ध है ।
- मै. पी सी सी पी एल की सूचना को प्रारंभिक जांच परिणाम में शामिल किया गया है और मै. पी सी सी पी एल ने संबद्ध उत्पाद की क्षमता, उत्पादन, आदि के बारे में कोई प्रत्यक्ष सूचना प्रकाशित नहीं की है और इस प्रकार यह सूचना सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है । अतः प्राधिकारी ने इस सूचना को समुचित ढंग से गोपनीय रखा है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

65. जहां तक मै. जी ए सी एल द्वारा जार्डन से रॉक फास्फेट का आयात करने के बाद तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करने के बारे में दिए गए तर्क और इस तर्क का संबंध है कि मै. जी ए सी एल का निष्पादन कच्ची सामग्री की खरीद के एक स्रोत या माध्यम के कारण प्रभावित हुआ है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. आई सी एल - रोटम द्वारा यह तर्क दिए जाते समय इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है कि कंपनी के सामान्य मूल्य और परिणामी क्षति मार्जिन की गणना करते समय कच्ची सामग्री की खरीद में अंतर में हर हालत में विधिवत विचार किया गया है ।

66. जहां तक फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के संबंध में आयातों के प्रभाव के संचयी निर्धारण के बारे में दिए गए तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने इस विषयों पर पाटनरोधी नियमों के अनुसार संचयी विश्लेषण किया है । इसके अलावा, पाटनरोधी नियमों में प्राधिकारी को यह भी अनुमति है कि वह उत्पादों के निकटतम समूह या रेंज के उत्पादन के संबंध में पाटित आयातों के प्रभाव का निर्धारण करें जिसमें समान उत्पाद भी शामिल है यदि उक्त उत्पादन की पृथक पहचान संभव न हो ।

67. जहां तक कीमत कटौती की गणना के बारे में दिए गए तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसका निर्धारण ग्रेड वार आधार पर उचित ढंग से किया गया है ।

68. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्राधिकारी के समक्ष बढ़ा-चढ़ा कर आंकड़े/विरोधाभासी सूचना प्रस्तुत की गई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति विश्लेषण मै. जी ए सी एल और मै. पी सी सी पी एल द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संकलन के आधार पर किया गया है जिसका सत्यापन मौके पर सत्यापन दौरों के दौरान भी किया गया है ।

69. जहां तक मै. जी ए सी एल की उत्पादन क्षमता सीमित होने से संबंधित तर्क और मै. जी ए सी एल का उत्पादन आई एम आई टी ए एम आई के साथ संविदा के अनुसार सीमित/नियंत्रित होने के कारण मात्रात्मक क्षति का दावा अपुष्टिकृत रहने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. जी ए सी एल के पास विचाराधीन उत्पाद की लाइसेंसशुदा/स्थापित क्षमता है परंतु वह केवल 78% की क्षमता का ही उपयोग कर सकी है। अतः मात्रात्मक क्षति के बारे में दिया गया तर्क निराधार है।

70. जहां तक मै. इजरायल कैमिकल्स लि. और/अथवा मै. रोटेम एमफर्ट नेगेव लि. (इजराइल) से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात से घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति न होने के बारे में दिए गए तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. पी सी सी पी एल विचाराधीन उत्पाद के फूड ग्रेड की गुणवत्ता का उत्पादन करती है और उसके पास उसकी आपूर्ति का प्रतिष्ठित ग्राहक आधार है। इसके अलावा, मै. आई सी एल-रोटेम ने यह स्वीकार किया है कि उसने तकनीकी ग्रेड के रूप में विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड की गुणवत्ता का जांच अवधि के दौरान भारत को भी निर्यात किया है और इस प्रकार उसने घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित समान वस्तु के तकनीकी ग्रेड के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा की है। अतः यह तर्क कि घरेलू उद्योग केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादन करता है और इजरायल से फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं हो सकता, गुण-दोष रहित है।

71. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि मै. जी ए सी एल ने वर्ष के लिए अपने निष्पादन का मूल्यांकन करते समय 2008-09 में मंदी के प्रभाव को छिपाया है, यह नोट किया जाता है कि वर्तमान मामले की जांच अवधि उसके बाद की है जिसके संबंध में क्षति हुई है। इसके अलावा, मै. जी ए सी एल को उच्च प्रचालनात्मक क्षमता हासिल करने के बारे में कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए; जहां तक बिक्री का संबंध है, यह अभिमत पुनः वर्तमान मामले में जांच अवधि से पूर्व की अवधि से संबंधित है।

72. जहां तक अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण पड़े अधिक बोझ को बर्दाश्त करने के बारे में दिए गए तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में एक खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से उचित आयात किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। इसके अलावा, यह स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु के उपयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से बाकी बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क को घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने की राशि तक सीमित रखा जाएगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के

उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। जहां तक भारत में ऐसे उद्योगों/कारखानों का संबंध है, जो अपने उत्पादों के उत्पादन हेतु केवल फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की अपेक्षा रखते हैं। जब वे पाटनरोधी शुल्क का भुगतान करने के बाद मै. आई सी एल - रोटेम सहित संबद्ध देशों से आयात सहित अथवा मै. पी सी सी पी एल सहित किसी अन्य स्रोत से उसकी खरीद करने का विकल्प चुनने के बाद आयात जारी रखना चाहते हैं।

73. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि यदि आयातित उत्पाद भारत में उत्पादित ग्रेड से अलग ग्रेड का है और यह कि आयातित उत्पाद भारत में उत्पादित उत्पाद द्वारा प्रतिस्थापनीय नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की फूड ग्रेड गुणवत्ता का वस्तुतः विनिर्माण मै. पी सी सी पी एल द्वारा किया जा रहा है और इस प्रकार आयातित उत्पाद घरेलू रूप से उत्पादित उत्पाद के साथ वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा कर रहा है। इस प्रकार, इससे पाटन व्यवहार, के कारण घरेलू रूप से संबद्ध उत्पाद को वास्तविक क्षति हो सकती है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से देखा जा सकता है।

74. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. जी ए सी एल की निर्यात बिक्री वर्ष 2008-09 में 4 मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में 49 मी ट हो गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्थापित क्षमता के लगभग 0.2% के निर्यात से यह पता नहीं चलता है कि मै. जी ए सी एल की इच्छा अन्य देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने में अधिक रही है।

75. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि एक उत्पाद खंड को दूसरे की लागत पर संरक्षित नहीं किया जा सकता, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह एक निर्धारित सिद्धांत है कि पाटनरोधी जांच पाटन तथा विशिष्ट स्रोतों से आयातित विशिष्ट उत्पाद के संबंध में परिणामी क्षति के निर्धारण के लिए किया जाता है न कि उत्पाद खंडों के बारे में।

76. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड पर पहले से ही 2.5% का मूल सीमाशुल्क और 17.98% का कुल शुल्क लागू है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सीमाशुल्क और पाटनरोधी शुल्क दोनों की मंशा और प्रयोजन विशिष्ट और अलग है। परवर्ती शुल्क का उद्देश्य पाटन के व्यवहार के कारण घरेलू उद्योग को हुई "क्षति" को समाप्त करना है।

77. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि मै. जी ए सी एल ने वार्षिक रिपोर्ट (2008-09) में यह दावा किया है कि वर्ष 2008-09 के दौरान कंपनी ने सभी संयंत्रों में अत्यधिक प्रचालनात्मक कुशलता हासिल की है और उसने फॉस्फोरिक एसिड की अब तक सर्वाधिक बिक्री की है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त दावा जांच अवधि से पूर्व की अवधि के बारे में है जबकि क्षति विश्लेषण क्षति अवधि की तुलना में जांच अवधि के संदर्भ में किया गया है।

78. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि मै. आई सी एल-रोटेम फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयात के कारण तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के मै. जी ए सी एल के बाजार हिस्से में कोई गिरावट नहीं आई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. आई सी एल-रोटेम का

तर्क स्वीकार्य नहीं है क्योंकि कंपनी ने अपने खुद के उत्तर में यह स्वीकार किया है कि भारत में तकनीकी ग्रेड की मांग होने पर उसकी पूर्ति तकनीकी ग्रेड के रूप में फूड ग्रेड की आपूर्ति करके कंपनी द्वारा की जाती है ।

79. जहां तक इस आरोप का संबंध है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद के बारे में उत्पादक समूह के सृजन का प्रयास किया जा रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै आई सी एल-रोटेम ने यह आरोप लगाते समय इसकी पुष्टि नहीं की है । इसके अलावा, प्राधिकारी इस मुद्दे को उठाने का उचित मंच नहीं है क्योंकि प्रतिस्पर्धारोधी व्यवहार का निवारण अन्य विशिष्टीकृत निकायों द्वारा किया जाता है ।

80. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि आई सी एल-रोटेम द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के निर्यात के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति होने का खतरा नहीं है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण वास्तविक क्षति हुई है अतः वास्तविक क्षति के खतरे के मुद्दे की आगे जांच नहीं की गई है ।

81. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि भारत में संबद्ध वस्तु के दो प्रमुख उत्पादकों अर्थात् मै. जी ए सी एल और मै. सोलारिस में से संबद्ध वस्तु का दूसरा उत्पादक कंपनी का प्रचालन बनाए रखने के लिए संघर्षरत है और यह कि संबद्ध वस्तु की अनापूर्ति और अनुपलब्धता के कारण प्रयोक्ता उद्योग का डिलीवरी कार्यक्रम बाध्य हुआ है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है । मै. सोलारिस ने इस बारे में अनुरोध किए जाने के बावजूद ये आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं । इसके अलावा, प्राधिकारी ने मै. कैमटॉल राय इंडिया से यह अनुरोध किया कि वे इस तर्क के समर्थन में साक्ष्य प्रस्तुत करें । इसके उत्तर में मै. कैमटॉल राय इंडिया ने मै. सोलारिस के 8 अक्टूबर, 2010 के पत्र को संलग्न किया कि उन्होंने इस समय अपना प्रचालन बंद कर दिया है । तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पत्र के अवलोकन से यह पता चलता है कि प्रचालन जांचोत्तर अवधि अर्थात् अक्टूबर, 2010 में बंद किया गया है जबकि क्षति जांच अवधि की जांच 1 अप्रैल, 2009 से 30 जून, 2010 की अवधि के लिए की गई है और इस प्रकार वर्तमान जांच अवधि के विश्लेषण में यह तर्क प्रासंगिक नहीं है ।

82. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि मै. जी ए सी एल को हुई क्षति रॉक फॉस्फेट की अनुपलब्धता के कारण हुई है और यह कि रॉक फॉस्फेट का आयात मै. सोलारिस की कीमत की तुलना में अधिक कीमत पर किया जा रहा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क की पुष्टि मै. कैमटॉल राय इंडिया ने नहीं किया है । प्राधिकारी ने मै. कैमटॉल राय इंडिया से यह अनुरोध किया कि वह इस तर्क की पुष्टि हेतु साक्ष्य प्रस्तुत करें परंतु ऐसा कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ ।

83. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि संस्तुत किए जाने पर शुल्क संदर्भ कीमत आधार पर होना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वे रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करते हुए गुण-दोष के आधार पर सिफारिश करेंगे ।

84. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि अनुमत्य सीमाओं की तुलना करने पर मै. जी ए सी एल की वार्षिक घरेलू बिक्री 82% उपयोगिता के अनुसार की गई संविदा पर आधारित है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क में कोई दम नहीं है क्योंकि उक्त आंकड़े दोनों घरेलू उत्पादकों अर्थात् मै. जी ए सी एल और मै. पी सी सी पी एल के लिए हैं, जिन्होंने आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। इसके अलावा, क्षमता उपयोग का मूल्यांकन उत्पादन आधार पर किया जाता है न कि बिक्री की तुलना के आधार पर। इसके अलावा, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग अर्थात् मै. जी ए सी एल और मै. पी सी सी पी एल के लिए क्षति मापदंडों की जांच और मूल्यांकन किया है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से देखा जा सकता है।

85. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि मजदूरी में वृद्धि के प्रभाव की उचित जांच नहीं की है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक और समर्थनकर्ता कंपनी दोनों बहु उत्पाद कंपनियां हैं और केवल क्षति का निर्धारण करना अथवा इसके अभाव में केवल मजदूरी के आधार पर निर्धारण करना उचित नहीं होगा। बहरहाल, क्षति विश्लेषण करते समय कानून में निर्धारित इनमें से किसी कारण के तहत कोई निर्णयात्मक मार्गदर्शन अनिवार्यतः नहीं मिल सकता, परंतु क्षति का निर्धारण और मूल्यांकन इन कारकों की पूर्णता के आधार पर करना होता है।

86. जहां तक इस तर्क का संबंध है, याचिकाकर्ता द्वारा क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ फॉस्फोरिक एसिड के सभी प्रकारों पर विचार किया जा रहा है भले ही वह केवल तकनीकी ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड का उत्पादक क्यों न हो और यह कि आयात की मात्रा के वर्गीकरण तथा उसके अंतिम प्रयोक्ता के अभाव में यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि अयातित संबद्ध वस्तु याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित फॉस्फोरिक एसिड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा करती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये तर्क निराधार हैं क्योंकि जांच के दायरे को इस जांच की शुरुआत के समय भलीभांति तय किया गया था ताकि उसमें इजरायल और ताईवान के मूल के या वहां से निर्यातित समस्त ग्रेडों और समस्त सांद्रणों के फॉस्फोरिक एसिड (कृषि/उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) को शामिल किया जा सके। आगे यह नोट किया जाता है कि समर्थक के साथ आवेदक तकनीकी ग्रेड और फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड दोनों का उत्पादन करता है। इसके अलावा, मै. आई सी एल-रोटेम ने यह अनुरोध किया है कि वह भारत में फॉस्फोरिक एसिड के तकनीकी ग्रेड के प्रयोक्ताओं को फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड की भी आपूर्ति कर रहा है जिससे तकनीकी ग्रेड के उत्पादकों को भी क्षति हो रही है। यदि यह मान लिया जाए कि फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड को जांच के दायरे से अलग हटा देना चाहिए, तो इस प्रकार के कार्य से जांच की समूची प्रक्रिया बातिल हो जाएगी क्योंकि लगाया गया शुल्क का आसानी से तकनीकी ग्रेड के प्रयोक्ताओं द्वारा फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के आयातों द्वारा अपवंचन किया जाएगा जैसा कि इस समय हो रहा है।

87. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि कीमत में कोई ह्रास/न्यूनीकरण नहीं हुआ है क्योंकि संबद्ध वस्तु के आयात याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित फॉस्फोरिक एसिड के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे हैं और यह कि याचिकाकर्ता कंपनी के निष्पादन पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तर्क निराधार है क्योंकि मै.

एम सी सी पी एल ने आंकड़े प्रस्तुत किए हैं और इस प्रकार मै. जी ए सी एल और मै. एम सी सी पी एल द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का उपयोग क्षति विश्लेषण के लिए किया गया है। मै. सोलारिस ने आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध करने के बावजूद ऐसा नहीं किया। इन परिस्थितियों में क्षति विश्लेषण पाटनरोधी नियमों और विनियमों के अनुसार किया गया है।

88. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि सामान्य तौर पर फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ता और खास तौर पर फूड ग्रेड फॉस्फोरिक एसिड के प्रयोक्ता भारत में संबद्ध वस्तु के आयात पर निर्भर होंगे, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों का उद्देश्य आयातों को बाधित करना नहीं है, अपितु पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को मात्र दूर करना है और इस प्रकार प्रतिस्पर्धा की सामान्य स्थिति पैदा करना है।

संचयी आकलन

89. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (iii) में यह प्रावधान है कि यदि एक से अधिक देशों के उत्पाद के आयातों की जांच एक साथ की जा रही हो तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारण हो जाता है कि

(क) प्रत्येक देशों से आयातों के लिए निश्चित पाटन की मार्जिन निर्यात कीमत को प्रतिशत के रूप में व्यक्त करने पर तीन प्रतिशत (अथवा अधिक) हो तथा प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों के तीन प्रतिशत से अधिक हो अथवा जहां अलग-अलग देशों द्वारा निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो, संचयी आयात समान वस्तु के आयातों से सात प्रतिशत से अधिक हो और

(ख) आयातित वस्तु और घरेलू समान वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के कारण आयातों के संचयी प्रभाव का आकलन करना उचित हों।

90. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :-

- भारत में सम्बद्ध वस्तुओं का पाटन अनेक देशों से किया जा रहा है।
- प्रत्येक सम्बद्ध देश से पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- प्रत्येक सम्बद्ध देश से आयातों की मात्रा निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है;

- आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन किया जाना उचित है, क्योंकि सम्बद्ध देशों के निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध समान वस्तुओं के साथ प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं जो निम्नलिखित से स्पष्ट हैं :-

- क. सम्बद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पादों तथा आवेदक द्वारा विनिर्मित उत्पादों की विशेषताएं तुलनीय हैं । दूसरे शब्दों में विभिन्न सम्बद्ध देशों द्वारा आपूर्तित वस्तुएं और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्तित वस्तुएं पारस्परिक रूप से समान वस्तुएं हैं ।
- ख. विभिन्न स्रोतों से आयातित सम्बद्ध वस्तुओं तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग करने वाली पार्टियां सामान्य हैं । आयातित तथा घरेलू सम्बद्ध वस्तुओं, दोनों का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा है और आयातित उत्पाद उनके अनुरूप हैं ।
- ग. सम्बद्ध देशों के निर्यातकों और घरेलू उद्योग ने उत्पाद की बिक्री समान अवधि के दौरान समान किस्म के ग्राहकों को की है । बिक्री के माध्यम भी तुलनीय हैं ।

घ. प्रत्येक सम्बद्ध देश से आयातों की मात्रा अत्यधिक है ।

91. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का विचार है कि सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के निर्यातों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी आकलन किया जाना उचित होगा ।

क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच

92. अनुबंध II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि क्षति जांच में "..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी प्रासंगिक तथ्यों पर विचार करते हुए....." उन कारकों जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है की जांच अंतर्ग्रस्त होगी । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करनी आवश्यक समझी गई है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा उल्लेखनीय कीमत कटौती की गई है, अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को उल्लेखनीय स्तर तक कम करने अथवा कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती ।

93. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उन संकेतकों जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है यथा उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली तथा पाटन मार्जिन पर पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- 11 के अनुसार विचार किया गया है ।

क) पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

मांग एवं बाजार हिस्सा

94. देशों में इस उत्पाद की मांग का आकलन घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से हुए आयातों के मांग के रूप में किया गया है ।

| विवरण | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि (अप्रैल 2009 - जून 2010) | जांच अवधि (वार्षिकीकृत) |
|---|---------|----------|----------|----------|------------------------------------|-------------------------|
| आयात— आईबीआईएस आंकड़ों के अनुसार | | | | | | |
| मात्रा (मी0टन) | | | | | | |
| इस्त्राइल | (मी0टन) | कुछ नहीं | कुछ नहीं | कुछ नहीं | 9243 | 7394 |
| ताइवान | (मी0टन) | कुछ नहीं | कुछ नहीं | 233 | 4776 | 3821 |
| देश जिन पर शुल्क लागू है | (मी0टन) | 4150 | 17877 | 12935 | 9797 | 7838 |
| अन्य देश | (मी0टन) | 429 | 252 | 842 | 1177 | 942 |
| कुल आय | (मी0टन) | 4579 | 18129 | 14010 | 24993 | 19995 |
| सहायक घरेलू उत्पादक के साथ आवेदक घरेलू उद्योग | (मी0टन) | | | | | |
| | | 27679 | 30292 | 22353 | 28595 | 22876 |
| अन्य घरेलू उत्पादक | (मी0टन) | 29332 | 27954 | 23765 | 26937 | 21550 |
| कुल | (मी0टन) | 57011 | 58246 | 46118 | 55532 | 44426 |
| कुल मांग | (मी0टन) | 61590 | 76375 | 60128 | 80505 | 64421 |

95. नोट किया जाता है कि उत्पाद की मांग में आधार वर्ष की तुलना में 2007-08 की अवधि में अत्यधिक वृद्धि हुई थी और तत्पश्चात 2008-09 की अवधि में इसमें

गिरावट आई और उसके बाद जांच अवधि के दौरान इसमें फिर वृद्धि हुई । तथापि, मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई ।

आयातों की मात्रा तथा बाजार हिस्सा

96. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या निरपेक्ष रूप में अथवा भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में पाटित आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।

97. प्राधिकारी ने सम्बद्ध वस्तुओं से संबंधित आयातों के ब्यौरे हेतु डीजीसीआई एंड एस कार्यालय से अनुरोध किया था परंतु अब तक अपेक्षित सूचना प्राप्त नहीं हुई है । आवेदक ने भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों के बारे में सूचना उपलब्ध कराई है जो वर्ष 2006-07, 2007-08, 2008-09 तथा जांच अवधि हेतु आईबीआईएस आंकड़ों पर आधारित है । इस प्रकार आईबीआईएस द्वारा सूचित आयातों की मात्रा पर विचार किया गया है । इसके अलावा, प्राधिकारी को इस्राइल के एक उत्पादक/निर्यातक से उत्तर प्राप्त हुआ है । भारत में आयातित सम्बद्ध वस्तुओं की कुल मात्रा के निर्धारण हेतु रिकार्ड में उपलब्ध आंकड़ों को तालिकाबद्ध तथा संकलित किया गया है ।

(क). यह देखा गया है कि सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि हुई है :

| विवरण | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि अप्रैल 2009 – जून 2010 | जांच अवधि (वार्षिकीकृत) |
|--|-------|---------|---------|---------|--|----------------------------|
| आयात आईबीआईएस आंकड़ों के अनुसार | | | | | | |
| मात्रा (मी0टन) | | | | | | |
| इस्राइल | मी0टन | शून्य | शून्य | शून्य | 9243 | 7394 |
| ताइवान | मी0टन | शून्य | शून्य | 233 | 4776 | 3821 |
| देश जिस पर शुल्क लागू है | मी0टन | 4150 | 17877 | 12935 | 9797 | 7838 |
| अन्य देश | मी0टन | 429 | 252 | 842 | 1177 | 942 |
| कुल आयात | मी0टन | 4579 | 18129 | 14010 | 24993 | 19995 |

ख) आधार वर्ष की तुलना में भारत में उत्पादन तथा खपत के मुकाबले सम्बद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है ।

| | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि अप्रैल 2009 – जून 2010 |
|--|------|---------|---------|---------|----------------------------------|
| भारतीय उत्पादन की तुलना में पाटित आयात | % | 0 | 0 | 0.48 | 25.10 |
| भारत में मांग की तुलना में पाटित आयात | % | 0 | 0 | 0.38 | 16.89 |

ग) सम्बद्ध देशों के बाजार हिस्से में जहां वृद्धि हुई है, वहीं भारतीय उत्पादकों के हिस्से में गिरावट आई है ।

| मांग में बाजार | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि अप्रैल 2009 – जून 2010 |
|--|---|---------|---------|---------|----------------------------------|
| याचिकाकर्ता | % | 43.78 | 37.97 | 36.06 | 33.88 |
| समर्थक | % | 1.16 | 1.69 | 1.12 | 1.64 |
| अन्य भारतीय उत्पादक | % | 47.62 | 36.60 | 39.52 | 33.46 |
| संबद्ध देश | % | - | - | 0.39 | 17.41 |
| संबद्ध देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है | % | 6.74 | 23.41 | 21.51 | 12.17 |
| अन्य देश | | 0.70 | 0.33 | 1.40 | 1.44 |
| कुल | % | 100 | 100 | 100 | 100 |

98. उपर्युक्त तालिका से देखा जा सकता है कि सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है; जबकि घरेलू उद्योग के हिस्से में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है । सम्बद्ध देशों से आयातों का हिस्सा जो आधार वर्ष के दौरान शून्य था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर 17.41 प्रतिशत हो गया था ।

आयातों का कीमत प्रभाव

99. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का उद्देश्य कीमतों में अत्यधिक स्तर तक मन्दी लाना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना था जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक हुई होती । यह देखा गया है कि सम्बद्ध देशों से हुए आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमतों से बहुत कम है, जिसकी परिणति उल्लेखनीय कीमत कटौती में हुई है । इसकी स्थिति निम्नानुसार है :-

| | इकाई | इस्राइल | ताइवान |
|----------------------|-------------|---------|--------|
| निवल बिक्री प्राप्ति | रुपये/मी०टन | *** | *** |
| पहुंच मूल्य | रुपये/मी०टन | *** | *** |
| कीमत कटौती | रुपये/मी०टन | *** | *** |
| कीमत कटौती | (%) | *** | *** |
| कीमत कटौती | रेंज (%) | 90-100 | 15-25 |

100. बिक्री की लागत और निवल बिक्री कीमत से संबंधित आंकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि यदि आधार वर्ष से संबंधित आंकड़ों की तुलना जांच अवधि से संबंधित आंकड़ों से की जाए तो प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को किसी कीमत मंदी/हास का सामना नहीं करना पड़ा है। तथापि, यदि बिक्री की लागत और निवल बिक्री कीमत को 2008-09 की अवधि के बरक्स देखा जाए तो जांच अवधि के दौरान अत्यधिक कीमत मंदी का मामला बनता प्रतीत होता है, क्योंकि यह नोट किया गया है कि बिक्री की लागत में 23 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि निवल बिक्री कीमत में लगभग 29 प्रतिशत की गिरावट आई।

| | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि (अप्रैल 2009 – जून 2010) |
|------------------|-------------|---------|---------|---------|------------------------------------|
| बिक्री की लागत | रुपये/मी०टन | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचकांक | 100 | 99.72 | 189 | 146 |
| निवल बिक्री कीमत | रुपये/मी०टन | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचकांक | 100 | 114 | 225 | 159 |

101. घरेलू उद्योग से संबंधित क्षति संबंधी अन्य मानदंड निम्नानुसार है :-

बिक्री की मात्रा

102. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा का विश्लेषण किया गया, जिसका ब्यौरा निम्नानुसार है:-

| घरेलू बिक्री मात्रा (मी०टन) | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि (अप्रैल 2009 – जून 2010) | जांच अवधि (वार्षिकीकृत) |
|-----------------------------|-------|---------|---------|---------|------------------------------------|-------------------------|
| घरेलू उद्योग के आवेदक | मी०टन | 26965 | 28997 | 21682 | 27273 | 21818 |
| समर्थक घरेलू उत्पादक | मी०टन | 714 | 1295 | 671 | 1322 | 1058 |

| समर्थक उत्पादकों आवेदक घरेलू उद्योग | घरेलू सहित उद्योग | मी0टन | | | | | |
|---|-------------------------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| | | | 27679 | 30292 | 22353 | 28595 | 22876 |
| अन्य घरेलू उत्पादक | मी0टन | 29332 | 27954 | 23765 | 26937 | 21550 | |
| कुल | मी0टन | 57011 | 58246 | 46118 | 55532 | 44426 | |

103. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा में उल्लेखनीय गिरावट आई है, जबकि इसमें 2008-09 अवधि की तुलना में मामूली वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री की मात्रा में गिरावट क्षति अवधि के दौरान देश में सम्बद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि के बावजूद आई थी।

क्षमता एवं क्षमता उपयोग

| | क्षमता | उत्पादन | क्षमता उपयोग |
|-------------------------------------|--------|---------|--------------|
| इकाई | मी0टन | मी0टन | % |
| 2006-07 | 29730 | 26639 | 90 |
| 2007-08 | 29730 | 29564 | 99 |
| 2008-09 | 29730 | 24842 | 84 |
| जांच अवधि अप्रैल 2009 – जून 2010 | 37163 | 27371 | 74 |
| जांच अवधि (वार्षिकीकृत) | 29730 | 21889 | 74 |

104. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान क्षमता जहां स्थिर बनी रही थी, आधार वर्ष की तुलना में 2007-08 अवधि के दौरान आवेदक घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई परंतु तत्पश्चात् इसमें अत्यधिक गिरावट आई। क्षमता उपयोग आधार वर्ष में 90 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि के दौरान 74 प्रतिशत रह गया था। घरेलू उद्योग ने चीन जन गण से सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण 2007-08 अवधि में सकारात्मक प्रवृत्ति का दावा किया था।

105. प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में सम्बद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि के साथ घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में सामान्यतः वृद्धि होनी चाहिए थी; जबकि इसमें गिरावट देखी गई है। यह देखा गया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में 18 प्रतिशत की गिरावट आई; जबकि इसकी बिक्री में 17 प्रतिशत की गिरावट आई जाहिर है कि घरेलू उद्योग अपनी उत्पादन क्षमता का

उपयोग करने में समर्थ नहीं रहा और इसका क्षमता उपयोग जांच अवधि के दौरान सबसे कम स्तर पर रहा था ।

कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

106. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कीमत कटौती हो रही थी ।

| | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि अप्रैल 2009 — जून 2010 |
|-------------------------------------|----------|---------|---------|---------|----------------------------------|
| विनिर्माण एवं बिक्री की लागत | रु/मी0टन | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 99 | 189 | 146 |
| निवल बिक्री कीमत | रु/मी0टन | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 114 | 225 | 159 |
| लाभ / (घाटा) | रु/मी0टन | (***) | (***) | *** | (***) |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | (100) | (4) | 49 | (56) |
| पाटित आयातों की पहुंच कीमत— इस्राइल | रु/मी0टन | | | | *** |
| पाटित आयातों की पहुंच कीमत— ताइवान | रु/मी0टन | | | | *** |

107. यह देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत से बहुत कम है, इस प्रकार उल्लेखनीय कीमत कटौती हो रही है । आंकड़ों के अवलोकन से यह भी ज्ञात होता है कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमतों में इसकी बिक्री की लागत के मुकाबले अधिक वृद्धि हुई । तथापि, घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीन जन गण और कोरिया गणराज्य से सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से उत्पन्न कुछ प्रतिबंध के कारण वर्ष 2007-08 और 2008-09 के दौरान सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती है ।

लाभ/घाटा, निवेश से आय और नकद लाभ

108. जहां तक लाभ/घाटे, निवेश से आय और नकद लाभ का संबंध है, स्थिति का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

| | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि अप्रैल 2009 — जून 2010 | जांच अवधि वार्षिकीकृत |
|--------------|--------|---------|---------|---------|----------------------------------|-----------------------|
| लाभ / (घाटा) | लाख रु | (***) | (***) | *** | (***) | (***) |

| | | | | | | |
|-------------|----------|-------|-----|-----|-------|-------|
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | (100) | (4) | 40 | (58) | (47) |
| निवेश से आय | % | (***) | *** | *** | (***) | (***) |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | (100) | 16 | 70 | (45) | (45) |
| नकद लाभ | लाख रु | (***) | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | (100) | 132 | 246 | 37 | 30 |

109. यह देखा गया है कि आधार वर्ष 2006-07 के दौरान घरेलू उद्योग भारी घाटे का सामना कर रहा था । इस स्थिति में कुछ सुधार हुआ था, जब 2007-08 अवधि के दौरान घाटे में उल्लेखनीय कमी हुई थी । परंतु तत्पश्चात जांच अवधि के दौरान कार्य निष्पादन में अत्यधिक गिरावट आई, क्योंकि जांच अवधि के दौरान इसे भारी घाटा हुआ था । तथापि, घरेलू उद्योग के घाटे में उल्लेखनीय कमी आई और यह वार्षिकीकृत आधार पर आधार वर्ष के दौरान **** लाख रुपये से घटकर जांच अवधि के दौरान **** लाख रुपये रह गया । निवेश से आय और नकद लाभ की प्रवृत्ति भी लाभप्रदता की प्रवृत्ति के समान देखी गई । घरेलू उद्योग ने इस सुधार को जिन देशों में शुल्क लागू हैं, उनकी तुलना में सम्बद्ध वस्तुओं पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क का संकेत माना है ।

मालसूचियां

110. मालसूचियों से संबंधित आंकड़ों का ब्यौरा निम्नानुसार है :-

| | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि (अप्रैल 2009 — जून 2010) |
|-----------|----------|---------|---------|---------|---|
| औसत स्टॉक | मी0टन | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 43 | 97 | 134 |

111. यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मालसूचियों में वृद्धि हुई है । यह प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग अपने उत्पाद की पूरी बिक्री नहीं करने में समर्थ नहीं था, जिसके परिणामस्वरूप मांग में वृद्धि के बावजूद मालसूचियों में वृद्धि हुई ।

रोजगार, मजदूरी एवं उत्पादकता

112. रोजगार, मजदूरी एवं उत्पादकता से संबंधित आंकड़े निम्नानुसार हैं :-

| | इकाई | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | जांच अवधि (अप्रैल 2009 - जून 2010) | जांच अवधि वार्षिकीकृत |
|----------------------------|----------|---------|---------|---------|--|--------------------------|
| कर्मचारियों की संख्या | संख्या | *** | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 106 | 102 | 113 | 113 |
| मजदूरी- | लाख रु | *** | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 119 | 127 | 253 | 202 |
| मजदूरी प्रति यूनिट उत्पादन | रु/मी0टन | *** | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 107 | 137 | 246 | 246 |
| उत्पादकता प्रति कर्मचारी | मी0टन | *** | *** | *** | *** | *** |
| प्रवृत्ति | सूचीबद्ध | 100 | 105 | 90 | 73 | 73 |

113. यह देखा गया है क्षति अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में मामूली वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति यूनिट उत्पादन की मजदूरी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई; जबकि इसी अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में गिरावट देखी गई। इसके अलावा, यह देखा गया है कि भुगतान की गई कुल मजदूरी में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि मै. जी ए सी एल और मै. पी सी सी पी एल दोनों बहु उत्पाद कंपनियां हैं। चूंकि रोजगार और मजदूरी केवल संबद्ध वस्तु के निष्पादन पर निर्भर नहीं होते हैं इसलिए उनके बारे में यह नहीं माना जा सकता कि उन्हें संबद्ध वस्तु के संबंध में इन कंपनियों के निष्पादन पर कोई खास प्रभाव पड़ सकता है।

पाटन मार्जिन

114. उपर्युक्त पाटन मार्जिन से संबंधित खण्ड से यह देखा जा सकता है कि सम्बद्ध देशों से संबंधित पाटन मार्जिन अत्यंत सकारात्मक है।

वृद्धि

115. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की वृद्धि में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है और यह पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान नकारात्मक हो गई है।

धनराशि जुटाने की क्षमता

116. प्राधिकारी शोट करते हैं कि आवेदक एक बहुउत्पाद कंपनी है, अतः सम्बद्ध वस्तुओं के निष्पादन के आधार पर धनराशि जुटाने की इसकी क्षमता का आकलन उचित तरीके से किया जा सकता है ।

वास्तविक क्षति संबंधी निष्कर्ष

117. सम्बद्ध वस्तुओं की मांग आधार वर्ष के दौरान 100 (सूचीबद्ध) से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 105 (सूचीबद्ध) हो गई है अर्थात् इसमें 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । इसी अवधि के दौरान घरेलू बिक्री में 17 प्रतिश की गिरावट आई है; इस प्रकार घरेलू उद्योग भारतीय बाजार में सम्बद्ध वस्तुओं की मांग में हुई वृद्धि का लाभ उठाने में समर्थ नहीं रहा है ।

118. यह देखा गया है कि आयातों में निरपेक्ष रूप से तथा भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है । आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कीमत कटौती हो रही है । आयातों में हुई उल्लेखनीय वृद्धि तथा आयातित एवं घरेलू उत्पाद के बीच कीमत में अन्तर के परिणास्वरूप आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन, बिक्री की मात्रा, क्षमता उपयोग एवं बाजार हिस्से जैसे मानदंडों के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है । तथापि इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुए घाटे में कमी आई है और नकद लाभ तथा निवेश से प्राप्त आय में भी यही प्रवृत्ति देखी गई है । कुछेक मानदंडों में हुए सुधार को घरेलू उद्योग ने सम्बद्ध देशों, जिन पर पाटनरोधी शुल्क पहले से लगाया गया है, से सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी उपाय लगाए जाने का संकेत माना है ।

119. उपर्युक्त विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

झ. कारणात्मक संबंध

120. पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी से अन्य बातों के साथ पाटित आयातों को छोड़कर कि अन्य ज्ञात कारकों, जिसके कारण इस समय घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, की जांच करने की अपेक्षा की जाती है ताकि इन अन्य कारणों से हुई क्षति को आयातों के कारण हुई क्षति न माना जाए । जो कारक इस संबंध में प्रासंगिक हैं, उनमें पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमतें, मांग में संकुचन अथवा खपत पद्धति में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां और विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में हुआ विकास एवं घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता शामिल हैं ।

121. इस बात की जांच की गई कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अन्तर्गत सूचीबद्ध अन्य मानदंडों का घरेलू उद्योग को हुई क्षति में योगदान हो सकता है। यह नोट किया जाता है कि :-

- क तीसरे देशों से आयात प्राधिकारी नोट करते हैं कि जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क पहले से लागू हैं उन्हें छोड़कर तीसरे देशों से हुए आयात नगण्य हैं औरइ ससे घरेलू उद्योग कोक्षति नहीं हुई होगी।
 - ख मांग में संकुचन : प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके विपरीत आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान सम्बद्ध वस्तुओं की समग्र मांग में सकारात्मक वृद्धि देखी गई है।
 - ग खपत की पद्धति : खपत की पद्धति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन न तो प्राधिकारी के ध्यान में आया है और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई निवेदन किया है।
 - घ प्रतिस्पर्धा की शर्तें : अब तक की गई जांच से यह नहीं देखा गया है कि प्रतिस्पर्धा की शर्तें अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां घरेलू उद्योग द्वारा किए गए क्षति के दावे के लिए उत्तरदायी हैं।
 - ङ प्रौद्योगिकी में हुआ विकास : अब तक की गई जांच से यह नहीं देखा गया है कि प्रौद्योगिकी में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।
 - च घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन : क्षति के वर्तमान आकलन हेतु प्राधिकारी ने घरेलू तथा निर्यात बाजार में कीमत व लाभप्रदता को अलग-अलग किया है। अतः निर्यात निष्पादन को शामिल करने की संभावना से क्षति का विश्लेषण प्रभावित नहीं होता है।
122. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है तथापि निम्नलिखित मानदण्ड, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के द्योतक हैं।
- सम्बद्ध देशों से हुए सम्बद्ध वस्तुओं के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों से कम कीमत पर उपलब्ध हैं। जाहिर है कि इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता आयातों की ओर रुख कर रहे हैं और इस प्रकार इसकी परिणति सामान्यतः भारतीय उतपादकों तथा विशेष रूप से घरेलू उद्योग को बाजार हिससे के नुकसान में हुई है।

- घरेलू उद्योग को बिक्री की मात्रा का नुकसान हुआ है । इसके बाजार हिस्से में गिरावट आई है जबकि सम्बद्ध देशों के आयातों के बाजार हिस्से में बढ़ोत्तरी हुई है ।
- घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में उल्लेखनीय गिरावट आई है । जाहिर है कि इन मानदंडों में गिरावट पाटित आयातों की उपस्थिति की वजह से आई है ।
- पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कीमत कटौती हो रही है । यदि पूर्ववर्ती वर्ष की निवल बिक्री कीमतों से तुलना की जाए तो अत्यधिक कीमत मंदी का मामला भी बनता है । इसके अलावा लाभ, निवेश से आय तथा नकद प्रवाह के रूप में भी घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन संतोषजनक नहीं है । यदि पूर्ववर्ती वर्ष के कार्य निष्पादन से तुलना की जाए तो कार्य निष्पादन में अत्यधिक गिरावट आई है ।

123. प्राधिकारी का अभिज्ञात है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है ।

क्षति की मात्रा तथा क्षति मार्जिन :

124. प्राधिकारी ने सम्बद्ध वस्तुओं के विभिन्न ग्रेडों के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग के लिए उनकी क्षति-रहित कीमत का निर्धारण किया है । क्षति की मार्जिन के निर्धारण हेतु घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना सम्बद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत से की गई है । क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :

| उत्पादक / निर्यातक | क्षति मार्जिन अम.डालर प्रति किग्रा | क्षति मार्जिन %-रेंज |
|---------------------------------------|---------------------------------------|----------------------|
| आईसीएल | *** | 55-70 |
| इस्राइल के अन्य निर्यातक / उत्पादक | *** | 60-75 |
| ताइवान के अन्य निर्यातक / उत्पादक | *** | 30-45 |

ज. निष्कर्ष

125. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच के बाद और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :-

- क सम्बद्ध देशों से भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात सम्बंधित सामान्य मूल्य से कम पर किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन हो रहा है ।
- ख घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के संबंध में वास्तविक क्षति हुई है ।
- ग घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति सम्बद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है ।

ट. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

126. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन, सामान्यतः "पाटन" की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली "क्षति" को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा को पुनः बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपायों के लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयातों में किसी प्रकार से बाधा नहीं पहुंचेगी तथा इसलिए उपलभोक्ताओं हेतु उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव पड़ेगा ।

127. इस बात को स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्कों के अधिरोपण से सम्बद्ध वस्तुओं के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धात्मकता पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा में कमी नहीं आएगी, विशेषरूप से यदि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण उस राश तक प्रतिबंधित रखा जाए जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निवारण हेतु आवश्यक है । इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय लगाने से पाटन की पद्धतियों द्वारा प्राप्त अनुचित लीजा को दूर किया जाएगा, घरेलू उद्योग की गिरावट पर रोक लगेगी और उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तुओं के व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद मिलेगी ।

ठ. सिफारिशें

128. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत के संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था कि वे अन्य बातों के साथ पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों के विभिन्न पहलुओं के विषय में सकारात्मक जानकारी उपलब्ध करवा सकें । अधिनियम एवं पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं पाटन एवं कारणात्मक संबंधों के बारे में जांच करने तथा संपन्न करने; तथा संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में सकारात्मक पाटन मार्जिन का निर्धारण करने तथा इस निष्कर्ष पर पहुंचने के पश्चात की घरेलू उद्योग को ऐसे पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी का यह मत है कि वर्तमान मामले में पाटन एवं "क्षति" को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क लागू

किया जाना अपेक्षित है । अतः प्राधिकारी, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लागू किया जाना आवश्यक समझते हैं और नीचे उल्लिखित स्वरूप एवं पद्धति इसे लागू करने की सिफारिश करते हैं ।

129. प्राधिकारी द्वारा कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन जो भी कम हो के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके । तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में दी गई राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश की जाती है ।

| क्र. सं. | शीर्ष / उप शीर्ष | वस्तु का विवरण | उद्गम का देश | निर्यात का देश | उत्पादक | निर्यातक | शुल्क राशि अम.डालर प्रति मी0टन में |
|----------|------------------|---|---|-----------------------|---|-----------------------------|------------------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
| 1 | 2809-2010 | सभी ग्रेडों और सांद्रणों का फास्फोरिक एसीड (कृषि/ उर्वरक ग्रेड को छोड़कर) | इस्राइल | इस्राइल | मेसर्स रोटेम एमफर्ट नेगेव लि0 | मेसर्स इस्राइल केमिकल्स लि0 | 174.06 |
| 2 | -तदैव- | -तदैव- | इस्राइल | इस्राइल | क्र.संख्या 1 को छोड़कर उत्पादक एवं निर्यातक का कोई भी युग्म | | 194.51 |
| 3 | -तदैव- | -तदैव- | उन देशों से इतर जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है | इस्राइल | कोई | कोई | 194.51 |
| 4 | -तदैव- | -तदैव- | इस्राइल | इस्राइल को छोड़कर कोई | कोई | कोई | 194.51 |
| 5 | -तदैव- | -तदैव- | ताइवान | ताइवान | कोई | कोई | 116.45 |
| 6 | -तदैव- | -तदैव- | उन देशों से इतर जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू | ताइवान | कोई | कोई | 116.45 |

| | | | | | | | |
|---|--------|--------|--------|-------------------------------|-----|-----|--------|
| | | | है | | | | |
| 7 | -तदैव- | -तदैव- | ताइवान | ताइवान को छोड़कर कोई | कोई | कोई | 116.45 |

ड. अपीलीय प्रक्रिया

130. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 2nd February, 2012

Final Findings

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' originating in or exported from Israel and Taiwan.

No. 14/44/2010-DGAD.—Whereas the Designated authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended, (hereinafter referred to as the AD Rules); recommended imposition of Anti Dumping duty on the imports of 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' originating in or exported from Israel and Taiwan vide notification dated 25th October 2011 and the Corrigendum dated 20th December 2011 thereof.

A. BACKGROUND OF THE CASE

- Having regard to the Act and the AD Rules, the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the AD Rules, received a written application from M/s. Gujarat Alkalis & Chemicals Limited, Baroda (hereinafter referred to as the Applicant) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' (hereinafter also referred to as the subject goods); originating in or exported from Israel and Taiwan (hereinafter also referred to as the subject countries).
- And whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant issued a public notice dated 4th February 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

4. The Authority recommended imposition of provisional Anti-dumping duty on the imports of 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' originating in or exported from Israel and Taiwan vide notification dated 25th October 2011 and the Corrigendum dated 20th December 2011 thereof.

B. PROCEDURE

5. The procedure described herein below has been followed:

- i. The Authority sent a copy of initiation notification dated 4th February 2011 to the Embassy/ /Economic & Cultural Centre of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers/ users and the domestic producers as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- ii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassy/ /Economic & Cultural Centre of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) supra.
- iii. The Embassy/ /Economic & Cultural Centre of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters.
- iv. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

| S.N. | Name of Producer/ Exporter |
|------|--|
| 1 | M/s Gwohuah Chemical Taiwan, |
| 2 | M/s Taiwan Alum Chemical Industrial Co. Ltd., Taiwan |
| 3 | M/s Green Mountain Co, Taiwan |
| 4 | M/s Yirher Chem & Hort Co. Ltd. Taiwan |
| 5 | M/s South flower Trading Company, Ltd, Taiwan |
| 6 | M/s Core Chemical Inc. Taiwan |
| 7 | M/s Israel Chemicals Ltd, Israel |

- v. In response to the above notification, the following exporters/producers/Association from the subject countries have responded:

1. M/s Yeou FA Chemical Co. Ltd, Taiwan
2. M/s Israel Chemicals Limited, Israel
3. M/s Hiforce Chemicals Corporation, Taiwan

vi. Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

| S.No. | Name of Importers/Exporters |
|-------|---|
| 1 | M/s Albright & Wilson Chemicals Ltd ,Mumbai |
| 2 | M/s Bhavita Chemicals Pvt Ltd, Maharashtra |
| 3 | M/s C J Shah & Co., Mumbai |
| 4 | M/s Jaydip Agencies, Mumbai |
| 5 | M/s Pharmachem Traders Pvt. Ltd., West Bengal |
| 6. | M/s Betzdearborn India Pvt. Ltd., Karnataka |
| 7. | M/s Fertilizers And Chemicals, Kerala |
| 8 | M/s Madras Fertilizers Ltd., Manali Madras |
| 9. | M/s Excel Industries Ltd., Maharashtra |
| 10 | M/s Hind Lever Chemicals Ltd., Punjab |
| 11 | M/s Reliance Industries Ltd., Maharashtra |
| 12 | M/s Carborandum Universal Ltd, Chennai |
| 13 | M/s Tonira Pharma Ltd. , Baroda |
| 14 | M/s Berger Auto & Industrial Coat, New Delhi |
| 15 | M/s LG Electronic India Pvt. Ltd., New Delhi |
| 16. | M/s Sudeep Pharma Ltd., Baroda |
| 17. | M/s Mangalore Chemicals & Fertilizers Ltd., Karnataka |
| 18 | M/s ICI India Ltd., Madras |
| 19. | M/s Bharat Electronics Ltd., New Delhi |
| 20 | M/s Tosif Silktex. Kolkata |
| 21 | M/s Torrent Pharmaceuticals Ltd, Bombay |
| 22 | M/s Star Chemicals Pvt. Ltd., Mumbai. |
| 23 | M/s Punjab Chem & Crop Protection Ltd., Mumbai. |
| 24 | M/s Solaris Chemtech Limited, Karnataka |

vii. Request for extension of time to file the questionnaires' response was received from some interested parties. The Authority granted the time extension, keeping in view the time constraints.

viii. Responses to the Importer's questionnaire have been received from the following importers of the subject goods In India:

1. M/s Chem Tall Rai India Ltd

ix. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open, for inspection by the interested parties;

- x. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of the subject goods for the past three years, including the period of investigation.
- xi. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xii. Investigation was carried out for the period starting from **1st April 2009 to 30th June 2010 (15 Months)** (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the periods April 2006-March 2007, April 2007-March 2008, April 2008-March 2009 and the POI.
- xiii. The Authority, having regard to the Act and the AD Rules; vide Notification No. 14/44/2010-DGAD dated 25th October 2011 recommended imposition of provisional Anti Dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries and the Corrigendum dated 20th December 2011 thereof..
- xiv. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 30th November 2011. The parties, which presented their views in the public hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally. Interested parties were also provided opportunity for rejoinder submissions on the views expressed by opposing interested parties.
- xv. The arguments made in the written submissions / rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant, in these final findings.
- xvi. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the domestic industry and the co-operating producer/exporter.
- xvii. In accordance with Rule 16 of the AD Rules, the essential facts considered by the Authority were disclosed to the known interested parties and comments received on the same have been duly considered, wherever found relevant, in these final findings.
- xviii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted; and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xix. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly

impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.

xx. *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

C. SUBMISSIONS MADE BY THE INTERESTED PARTIES POST DISCLOSURE STATEMENT

6. The following comments, in brief, have been made by the interested parties after issuance of the Disclosure statement:

Post Disclosure Statement Comments

Comments made on behalf of M/s ICL-Rotem:

The following comments, in brief, have been made on behalf of M/s ICL-Rotem:

Procedure

- GACL does not produce Food Grade Phosphoric Acid; but, the Hon'ble Authority has not addressed the above contentions with respect to GACL's inability to produce Food Grade Phosphoric Acid. It appears that the Authority has only relied upon the statements made by PCCPL with respect to 'so called' production of Food Grade Phosphoric Acid. Even if any information, specification have been submitted by PCCPL, the same have not been shared with ICL-Rotem, in order to sufficiently rebut their claim of producing Food Grade Phosphoric Acid.
- The Authority has also not taken into consideration the standards laid down by the Bureau of Indian Standards with respect to Food Grade Phosphoric Acid. Any Phosphoric Acid not conforming to the said BIS standards cannot be categorised as Food Grade Phosphoric Acid and consequently cannot be consumed and used by the food processing, edible oil extraction or pharmaceutical industry.
- Importers have no choice but to import Food Grade Phosphoric Acid.
- The Authority may note that ICL-Rotem's Food Grade Phosphoric Acid is being imported and used in place of technical grade phosphoric acid only where the technical grade phosphoric acid of GACL has been found not fit for consumption. The quantity of Phosphoric Acid (under the label Technical Grade) as exported by ICL-Rotem to such consumers of Phosphoric Acid is negligible and in no way competing with the technical grade phosphoric acid produced by GACL.
- A product not produced by the domestic industry should not be made part of any anti-dumping investigation for lack of causal link. ICL-Rotem relies on all its submissions for injury, response to preliminary findings, written submissions to public hearing and rejoinder submissions in this respect. The same are not being repeated herein for the sake

of brevity. Therefore, it is grossly erroneous to conclude that even if GACL does not produce Food Grade Phosphoric Acid; the Authority is not inclined to consider whether the demand of the Food Grade Phosphoric Acid shall be met by GACL.

Product under consideration and Like Article (Excessive Product Scope)

- The scope of the Product under Consideration in both the Initiation Notification and the Preliminary Findings is excessive and far too widely defined, covering two completely different products of two different grades.
- The 'like product' has a different meaning, depending whether it is used for the dumping determination or for the injury determination. In both cases, the two products should ideally be identical. It has been contended that Products that do not compete simply cannot be 'like products'. Thus, Food Grade Phosphoric Acid as produced and exported by ICL-Rotem is not in direct competition with GACL's Technical Grade Phosphoric Acid and therefore should be excluded from the definition of like products even though they might be physically similar, based on substitutability.
- Mere purification may not be able to lead to production of Food Grade Phosphoric Acid. Its production of Food Grade Phosphoric Acid is not a mere purification. There are differences in the manufacturing process, technical specifications, functionality, end-use, consumer perception etc of Food Grade Phosphoric Acid and Technical Grade Phosphoric Acid and that these should be taken into consideration

Scope & Standing of Domestic Industry

- It is most humbly submitted that as stated by GACL/ Domestic Industry in para 35, that GACL has not executed any agreement with ICL's group company/ subsidiary is totally false and baseless, especially in the light of the fact that a copy of the agreement (license of technology) has been submitted with the Authority in 'confidential' version earlier. We understand that the same has not been disputed by the Authority.
- IMI TAMI has absolute and complete control over the production capacity of GACL for the PUC (Technical Grade Phosphoric Acid). Based on the same, the finding of the Authority that "There is apparently no legal and operational control of ICL's group company over M/s GACL" is flawed. In terms of the contract IMI TAMI has a right to inspect GACL's Technical Grade Phosphoric Acid producing plant anytime during the continuance of license contract and verify the quantity of Technical Grade Phosphoric Acid produced at GACL's plant. Therefore, any denial by of non-operational control over GACL for the PUC is not maintainable.
- It is settled principle under the law that 'purification' can in NO way termed as 'manufacturing'. Therefore, the activity of 'purification' not being capable of being termed as 'manufacturing' would necessitate PCCPL not being considered as domestic industry for the purposes of Food Grade Phosphoric Acid.

- The domestic industry has submitted in their application that the production of M/s STS Chemicals shall not be included while determining the standing of the domestic industry, as they are not producing subject goods from basic stage and are procuring the subject goods in technical grade from the applicants and converting it into food grade." In light of the above, any inclusion of PCCPL and its products in the present investigation shall be erroneous and bad in law.
- Food Grade Phosphoric Acid as produced by ICL-Rotem is not purification of Technical Grade Phosphoric Acid. As a matter of fact ICL-Rotem does not even produce Technical Grade Phosphoric Acid and the process adopted by ICL-Rotem for production of Food Grade Phosphoric Acid (using food grade raw materials) is in no way similar to domestic industries process.
- In terms of para 39 the Authority has observed that PCCPL has submitted information with respect to the injury parameters. It is submitted that even if any such information was filed by PCCPL, the Authority has violated the Rule 7, by not making available the sufficient non-confidential summary of the confidential information so submitted by PCCPL to ICL-Rotem.

Incorrect Determination of Normal Value

- The Authority has erred in determination of normal value for ICL-Rotem by not considering the comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country, consequentially; it led to incorrect determination of normal value.

Injury and Causal Link

- This Authority has given no observations on the contentions raised by Chemetall Rai in para 60. As regards, the Authority's observation under para 62, it is re-iterated that the said statement has been reproduced from the Annual Report of the GACL and therefore, the observation of the Authority is incorrect.
- The observations of the Authority in para 87 are incorrect. PCCPL is not a manufacturer of Food Grade Phosphoric Acid and therefore should be excluded from the present investigation.
- It is further submitted that the landed price of imports from Israel is below the net sales realization as the cost of production for ICL-Rotem is lower than the domestic industry's net sales realization on account of significant differences in manufacturing process, price of raw materials.

- The comparison with 2008-09 would not result in appropriate and effective comparison as the same was impacted from recession. Further, the Authority in para 68 has acknowledged recession in the preceding year i.e. 2008-09. Furthermore, the Authority has contested/ denied any claims for the year 2008-09 as the same being with respect to a period preceding the POI. However, in the above para and para 119 the same years have been taken into account to determine price depression.
- GACL has been charging very high price for its Phosphoric Acid and any technology used by domestic industry is expensive.
- The scope of the PUC is too wide Product Scope of the investigation is excessive and far too widely defined and therefore the present proceedings should be dropped;
 - a) PCCPL being not a manufacturer of PUC should be excluded from the present investigations;
 - b) Since GACL production capacity and its operations with respect to PUC are being controlled by IMI TAMI, a subsidiary of ICL-Rotem, GACL cannot be considered constituting domestic industry;
 - c) The petitioner has filed information contradictory to its own claims and has mislead the Designated Authority;
 - d) The Authority has erred by conducting cumulative assessment of two very different products.
 - e) The Authority has erred by not segregating the dumping and injury analysis for Food Grade Phosphoric Acid and Technical Grade Phosphoric Acid.
 - f) The methodology for the construction of normal value is grossly erroneous and not prescribed under the law.
 - g) There is no material injury to the Domestic Industry from the imports of Food Grade Phosphoric Acid, which is technically and functionally different from Technical Grade Phosphoric Acid produced/ manufactured by Domestic Industry and thus should be excluded from the current proceedings;
 - h) GACL cannot produce Food Grade Phosphoric Acid at all and if accepted PCCPL is mere purifier.
 - i) There are various other factors like global recession, limited channels of procurement of raw materials, restrained capacity (under contractual obligations) affecting production and capacity utilization of the applicant and injury on this count cannot be attributed to the imports of Food Grade Phosphoric Acid from ICL-Rotem.
 - j) In the absence of causal link between imports from ICL-Rotem and injury to the alleged domestic industry, the present investigations against ICL-Rotem shall be terminated.
 - k) Any move to impose Anti Dumping Duty on the subject product will deprive the user industry from cost effective products therefore instead of domestic injury, the user industry would suffer from injury and for this reason also no anti-dumping duty should be imposed.
 - l) Thus, the present Investigation be terminated and no duty should be imposed on Food Grade Phosphoric Acid.

Comments made by M/s Canberra Chemicals:

The following comments, in brief, have been made on behalf of M/s Canberra Chemicals:

- GACL is not manufacturing Food Grade Phosphoric acid. It does not have requisite technology to produce food Grade Phosphoric acid & can produce only technical grade Phosphoric acid. In past we have used GACL's Phosphoric acid and our material got rejected by Pharma Industries in India as well as by Pharma Industries abroad. We being Micro Industries suffered a huge loss of export business as well as indigenous business. Hence, we have switch to import Food Grade Phosphoric acid.
- Nandesari Industries Association has contended that there is no one in India to supply food grade Phosphoric acid and M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., does not supply it. Hence their members have no alternate but to import it.
- Different grade of Phosphoric acid are not "like product" hence the scope of "Product under consideration" should be limited to the Technical grade of Phosphoric acid actually produced by M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd..
- M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., must improve their quality of Phosphoric acid to capture entire market in to-day's globalization world rather than ask for anti dumping duty on imports of Phosphoric acid of all grades.
- Ministry of Commerce, Govt. of India must help micro and small scale Industries like us who are interested in quality products rather than government organisations. M/s. GACL who are not interested in improving quality of their products.
- Ministry and commerce must force domestic industry GACL to purify technical grade Phosphoric acid to Food grade Phosphoric acid "as per their statement that only steam is required for this purification" but never favour them by imposing anti-dumping duty.
- Further, the production capacity is restricted for M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., Therefore non-attribution analysis is not accorded appropriately. There cannot be a claim for volume injury because the rates / production of GACL is limited / controlled in terms of the contract with M/s. IMI TAMI which license agreement is for production of technical grade Phosphoric acid only.

Comments made by M/s Hiforce Chemicals Co., Ltd.

The following comments, in brief, have been made on behalf of M/s Hi Force Chemicals Co., Ltd.:

- It did its best to approach the Authority the moment it learnt about antidumping investigation against Taiwan and requested for providing some more time.
- Thereafter upon provisional finding dated on 25th Oct 2011, it submitted its response by our letter dated 23rd Nov 2011 with complete exporter's questionnaire duly filled enclosed with same and couriered to you thru FedEx on 26Nov 2011 and that this courier may have reached you by 28 Nov 2011. On 22nd December 2011, it repeated its mail adding the request to provide price undertaking.

- It has requested to decide antidumping duty based floor price based on minimum landed value as per data of POI submitted by each interested party including petitioner based on which this antidumping investigation has been initiated as that would give sufficient protection to petitioner against antidumping margin decided based on data of POI considered for each country against which antidumping investigation has been done.

Comments made on behalf of the Domestic industry

The following comments, in brief, have been made on behalf of the Domestic industry:

- The Authority has rightly included food grade phosphoric acid into product scope. Particularly in view of the fact that the exporter has admittedly having exported food grade phosphoric acid as technical grade. Further PCPL is producing food grade phosphoric acid and the fact is undisputed.
- Since the exporter has failed to provide all relevant information, even during verification, the questionnaire response filed by the exporter must be rejected.
- The dumping and injury margin of Taiwan are quite low, in spite Taiwan is having lowest export price for Technical grade. Therefore the calculations may please be reviewed.
- Petitioner submits that the anti dumping duty may be imposed only as fixed quantum of anti dumping duty (fixed form of duty), expressed as duty in US\$/kg.
- The Authority should consider actual raw material and utilities consumption. As consumption over the years depends on a number of complex factors and is not a result of inefficiency of the domestic industry. Ignoring actual production and adopting any other production for determination of non injurious price is not appropriate. The Authority is required to determine actual cost of production and not a notional lower cost of production. Some expenses are apportioned on production basis. Having apportioned such expenses on actual production basis, these expenses again cannot be absorbed on the higher production level. Had the domestic industry produced higher volume, the share of expenses chargeable to the product would have been higher. The non injurious price is reduced for non operational misc. income. Neither non operational business expense nor non operational business income can form part of the non injurious price calculations. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets. Further, the turnover ratio has been determined after adding turnover of captive products into company's total turnover. However, the product under consideration turnover does not include turnover of captive inputs. The production to determine non injurious price should be the same as production weight used to determine non injurious price of the particular company.

Examination by the Authority

7. The Authority has examined all the issues that were considered pertinent in the instant matter as follows:

- As regards the claims made by M/s Hi Force Chemicals Co., Ltd.; the Authority reiterates that it did not receive the company's exporter's questionnaire response duly filled in as per the prescribed format at all. In the absence of individual dumping margin, it is not feasible to work out the Price undertaking.
- As regards the contention relating to anti-dumping duty based on floor price; the Authority notes that it decides to recommend the form of duty on basis of facts and merits of each case and would do so in the instant matter as well.
- As regards the contention that M/s GACL does not produce Food Grade Phosphoric Acid; the Authority notes that it has already been recorded that M/s PCCPL, a domestic producer of the subject goods, produces Food Grade Phosphoric Acid. Besides, it has reputed clientele to whom it supplies Food Grade Phosphoric Acid and thus any arguments regarding its quality are devoid of any merit.
- The Authority further notes that it is not seeking to stop imports; but seeks to redress injury caused to the domestic industry on account of dumped imports of the subject goods.
- The Authority also notes that M/s ICL-Rotem's contention that Food Grade Phosphoric Acid is being imported and used in place of technical grade phosphoric acid only where the technical grade phosphoric acid of GACL has been found not fit for consumption has not been substantiated. During the course of investigation, no interested party has claimed with any evidence that technical grade phosphoric acid of M/s GACL has been found not fit for consumption and thus the contention is baseless and in the nature of mere allegation.
- As regards the contention that a product not produced by the domestic industry should not be made part of any anti-dumping investigation for lack of causal link; the Authority reiterates that M/s PCCPL, a domestic producer of the subject goods, produces Food Grade Phosphoric Acid and hence the contentions is devoid of any merit.
- The Authority notes that the scope of the Product under Consideration was well defined in the Initiation Notification itself and the same was reiterated in the Preliminary Findings.
- As regards the contention that the 'like product' has a different meaning, depending whether it is used for the dumping determination or for the injury determination; the contention is not based on the correct reading of the rules on the subject. As regards the contention that the Products that do not compete simply cannot be 'like products'; the

Authority notes that in the instant matter it has been clearly observed that food grade quality of the subject goods have also supplanted technical grade requirements of the domestic users and hence the contention is untenable.

- The Authority further notes that M/s PCCPL does not merely undertakes purification of the technical grade phosphoric acid but produces the Food Grade Phosphoric Acid by adopting its own process and has been supplying the same to reputed clients.
- As regards the contention regarding the agreement (license of technology); the Authority reiterates its view that simply license of technology and any monitoring thereof shall make M/s GACL ineligible for being considered as a domestic producer in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.
- Food Grade Phosphoric Acid as produced by ICL-Rotem is not purification of Technical Grade Phosphoric Acid. As a matter of fact ICL-Rotem does not even produce Technical Grade Phosphoric Acid and the process adopted by ICL-Rotem for production of Food Grade Phosphoric Acid (using food grade raw materials) is in no way similar to domestic industries process.
- The Authority notes that M/s PCCPL has submitted information with respect to the injury parameters and a Non-confidential version thereof was placed in the public file.
- As regards the contention that the Authority has erred in determination of the Normal value for M/s ICL-Rotem by not considering the comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country; the Authority notes that the contention is based on wrong reading of the relevant rules. As per the rules & regulations on the subject, it has been, *inter alia*, stipulated that if the domestic sales of the like article of the concerned exporter/producer do not satisfy the ordinary course of trade test, then the Normal value has to be determined on the basis of a comparable price of the like article when exported to an appropriate third country, provided that this price is representative; or with the cost of production in the country of origin plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and for profits. Thus, the Authority has a choice to determine the Normal value based on either a comparable price of the like article when exported to an appropriate third country, provided that this price is representative; or on the basis of the cost of production in the country of origin plus a reasonable amount for administrative, selling and general costs and for profits. This view has also been upheld by the Hon'ble Supreme Court in the Haldor Topsoe case. Besides, even the comparable price of the like article when exported to an appropriate third country is subject to the ordinary course of trade test. In the instant case, the ordinary course of trade test was not satisfied at all.
- As regards the contentions raised by M/s Chemetall Rai; the Authority has already addressed the issue in the relevant sections of these findings.

- As regards the contention that M/s PCCPL is not a manufacturer of Food Grade Phosphoric Acid; the Authority notes that the same is factually incorrect as M/s PCCPL does manufacture Food Grade Phosphoric Acid.
- As regards the contention that the landed price of imports from Israel is below the set sales realization as the cost of production for ICL-Rotem is lower than the domestic industry's net sales realization on account of significant differences in manufacturing process, price of raw materials; the same is devoid of any merit, as the company has been found to be dumping the subject goods and the landed value thereof is causing 'injury' to the domestic industry.
- As regards the contention relating to 2008-09 period; the Authority has already noted in the context of the domestic producer's performance that the 2008-09 period a period preceding the POI. However, it has been further noted that the domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods.
- As regards the contention that M/s GACL has been charging very high price for its Phosphoric Acid and any technology used by domestic industry is expensive; the Authority notes that the domestic industry's performance during the POI in terms of profits, return on investment and cash flow is far from satisfactory.
- As regards the contention that the production capacity of M/s. GACL is restricted in terms of the contract with M/s. IMI TAMI; the Authority notes that the same does not have any bearing on the injury analysis, as the AD rules & regulations do not stipulate that the domestic producer must have ample capacity to meet the entire domestic demand.
- As regards the contention that the dumping and injury margin of Taiwan are quite low, in spite Taiwan is having lowest export price for Technical grade; the Authority has determined the same based on facts available on record and in terms of relevant rules on the subject.
- As regards the contention relating to anti-dumping duty based on fixed quantum of anti dumping duty; the Authority notes that it decides to recommend the form of duty on basis of facts and merits of each case and would do so in the instant matter as well.
- As regards the contention relating to determination of non injurious price; the Authority notes that it has determined the same based on facts available on record and in terms of relevant rules on the subject.
- Besides the above, the Authority notes that all other issues have already been appropriately addressed in relevant sections of these findings and are not being repeated for the sake of brevity.

D. MISC. SUBMISSIONS MADE BY INTERESTED PARTIES**Submissions made by M/s Hiforce Chemicals Corporation, Taiwan**

8. M/s. Hiforce Chemicals Corporation, Taiwan has, *inter alia*, stated that they have learnt from Taiwanese market about the investigation on the instant subject and that they have not received any notice from the DGAD so far and has thus requested that it be provided an opportunity to file the exporter's questionnaire granting them sufficient time to do so the same.
9. M/s. Hiforce Chemicals Corporation, Taiwan vide their letter dated 22nd December, 2011, *inter-alia*, has claimed to enclose exporter's questionnaire duly filled in. The company has also contended that they had recovered phosphoric acid from spent acid mixture obtained from LCD/TFT producers and after its distillation and purification they got 85% phosphoric acid which can be applied for very limited applications. This grade has relatively lower cost they have also used second hand packing material to keep their costs lower and therefore could offer the subject goods at a workable price to Indian market. Besides, the total quantity exported by them is very low approximately 1422 MT which is less than 2% of the total demand in India. It also offered to provide a price undertaking.

Examination by the Authority

10. In response to the above, the Authority noted that the investigation in the instant matter was initiated on 4th February, 2011. In terms of the AD Rules, the known interested parties from the subject countries were duly advised to file the exporter questionnaire's response within forty days vide letter dated 25th February, 2011. Besides, vide the letter dated 25th February, 2011 the Taiwan Economic & Cultural Centre was also forwarded a copy of the initiation notification along with the Non-confidential version of the application and a copy of the questionnaire, *inter alia*, intimating them that the known exporters are being requested separately to furnish the relevant information in the form of response to the questionnaire sent to them, however, there may be more producers/exporters of the subject goods who may be interested in this investigation and therefore, they were requested to bring it to the notice of all concerned, so that they can defend their interests effectively. Thus, it was expected that Taiwan Economic & Cultural Centre would suitable advise the exporters/producers from Taiwan.
11. Besides, there is no obligation under the AD Rules or WTO's AD Agreement which requires that each and every producer exporter from the subject country must be intimated about the initiation notification. Besides, not only the initiation notification was published vide the Govt. of India Gazette notification but it was also hosted on the web-site of the Department of Commerce. An exporter/producer from the subject country that has not been specifically named in the application filed before the DGAD is expected to file the response to the questionnaire (which could have been downloaded from the Department's website) within the stipulated time as indicated in the initiation notification. In view of the above, considering

the time constraints to complete the investigation, the request of time extension could not be acceded to.

12. M/s. Hiforce Chemicals Corporation, Taiwan submissions made vide their letter dated 22nd December, 2011 were examined. It is noted that no exporter's questionnaire duly filled in was enclosed with the said letter. As regards lower costs on account of using second-hand materials/inputs, the Authority notes that the company should have filed its exporter's questionnaire duly filled in as per the prescribed format by the stipulated time. As the company has failed in its basic obligation to submit the requisite information/data, the Authority is not able to take any cognizance of its unverified/unsubstantiated claims made at this late stage of the investigation. As regards the offer of a price undertaking, the Authority is not able to accept the same as no individual dumping margin has been determined in respect of the company.

Submissions made by M/s ICL-ROTEM (ISRAEL)

13. M/s ICL-Rotem, in brief, has contended as follows:

- Rotem Amfert Negev Limited (producer and exporter of Food Grade Phosphoric Acid) is wholly owned subsidiary of Israel Chemicals Limited, Israel ("ICI.") and both the entities are collectively referred to as ICL-Rotem.
- M/s GACL does not have requisite technology to produce Food Grade Phosphoric Acid and can produce only Technical Grade Phosphoric Acid.
- During the POI, even with the 100% capacity utilization, domestic demand would not have been met and imports were a necessity. Howsoever, the demand for food grade cannot be taken care by M/s GACL as it does not produce food grade.
- In the event of confidentiality, ICL-Rotem is unable to comment upon other factors related to data of M/s GACL. The data pertaining to capacity and production is claimed confidential by Authority inspite of its declaration in petition by M/s GACL.

Submissions made by M/s Canberra Chemicals

14. M/s Canberra Chemicals, in brief, has contended as follows:

- M/s GACL has confirmed in writing that it will not be possible for M/s GACL to supply food grade Phosphoric acid. Technical grade contains fluoride and lead, which are poisonous.
- M/s GACL statement that food grade and technical grade is same is baseless.
- They are a micro scale industry and therefore it is very difficult for them to use Advance license mechanism for exports. Moreover, they also supply to indigenous industries as well.

Submissions made by M/s Sudeep Pharma Ltd.

15. M/s Sudeep Pharma Ltd., in brief, has contended as follows:

- As their product is being used by pharma and food industries, they have to use only Food Grade of Phosphoric acid.
- M/s GACL is not manufacturing Food grade phosphoric acid.
- Imposition of anti-dumping duty will increase their production costs. For their finished product, DI calcium Phosphate, anti-dumping duty is not applicable and hence they will be adversely impacted.

Submissions made by M/s Chemetall Rai India

16. M/s Chemetall Rai India, in brief, has contended as follows:

- Unlike other investigations, M/s Solaris Chemtech is not part of the domestic industry in this investigation. The data of M/s Solaris has been kept out of present investigation since M/s Solaris was out of production due to plant shutdown. M/s Solaris has been for quite some years facing this problem of plant shutdown on account one or the other internal problems i.e., be it workmen strike, shortage of power or otherwise.
- Food grade and technical grade are two separate articles and the scope of investigation should be restricted to technical grade only. Technical Grade and Food Grade – Phosphoric Acid has different technical and chemical specifications and are used by different industries as per the suitability of their end products. one cannot be used as substitute of the other.

Submissions made by Nandesari Industries Association

17. The Association, in brief, has contended as follows:

- The Association in brief, has contended that there is no one in India to supply food grade phosphoric acid and that M/s GACL does not supply it; hence its members have no alternative but to import it.

Examination by the Authority

18. The Authority has accepted M/s ICL-Rotem's response as a Group entity for the purposes of this investigation.

19. As regards the contentions that M/s GACL does not have requisite technology to produce Food Grade Phosphoric Acid and can produce only Technical Grade Phosphoric Acid; the Authority notes that M/s PCCPL does manufacture food grade quality of the PUC and has reputed clientele for supplying the same. Besides, M/s ICL-Rotem in its response has

acknowledged that it has exported food grade quality of the PUC as technical grade as well to India during the POI and thus has directly competed with the technical grade of the Like Article manufactured by the domestic industry.

20. As regards the contention that during the POI, even with the 100% capacity utilization, domestic demand would not have been met and imports were a necessity and that the demand for food grade cannot be taken care by M/s GACL as it does not produce food grade: the Authority notes that AD Rules & Regulations do not require that the domestic industry must be able to meet the domestic demand before seeking redressal of injury caused to it on account of dumping.
21. The Authority has reflected the data pertaining to capacity and production as per the Non-confidential version of the submissions made by the domestic producers in the relevant sections of these findings.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND DOMESTIC LIKE ARTICLE

22. The product under consideration is '*Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)*'. Phosphoric Acid is an inorganic chemical used for the production of sodium phosphate, calcium phosphate, magnesium phosphate, ammonium phosphate, etc. The subject goods are also being used in pharmaceutical applications, beverages, seed processing, sugar juice clarification and sugar refining, food phosphate manufacturing etc.
23. Though Phosphoric Acid is classified under sub-heading no. 28092010 in the Customs Tariff Act but there is no dedicated Customs' classification for the product under consideration. The Customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.

Submissions made by M/s Yeou FA Chemical Co. Ltd, Taiwan

24. The company in its declaration filed with the Authority, inter alia, claimed that their process of production of the subject goods is a Dry Method which is different from the domestic industry's Wet Method and that they have patented their Phosphoric Acid purification process and thus their cost structure is incomparable to that of the domestic industry. It has also been contended that the subject goods should be categorized into different market segments as per the user's application. It has been further contended that they are not listed as a known exporter of the subject goods according to the application and stated that they will provide the relevant information if required by the Designated Authority.

Submissions made by M/s ICL- Rotem

25. M/s ICL- Rotem, in brief, has contended as follows:
- M/s GACL produces only Technical Grade Phosphoric Acid AND does not produce Food Grade Phosphoric Acid, whereas ICL-Rotem produces only Food Grade Phosphoric acid and does not produce Technical Grade Phosphoric Acid.

- Different grades of Phosphoric Acid are not 'like product', hence the scope of "product under consideration" should be limited to the grade of Phosphoric Acid actually produced by M/s GACL (during the POI). The Authority has incorrectly treated the "Food Grade" Phosphoric Acid and "Technical Grade" Phosphoric Acid as "like product". Food grade phosphoric acid is totally different in technical specifications, capability, functionality and end use (application) from the technical grade phosphoric acid produced by M/s GACL. The Domestic Industry has misled the Authority by not presenting the complete facts about the difference in grades of phosphoric acid (as produced by M/s GACL and as imported from M/s ICL-Rotem) and by not highlighting the difference in functions, usage, application, market and consumers of both the grades of phosphoric acid.
- The quality, manufacturing process and technology of producing food grade phosphoric acid by M/s ICL-Rotem is better than M/s GACL's technical grade phosphoric acid; then also the cost of production of food grade phosphoric acid by M/s ICL-Rotem is much lower than M/s GACL's technical grade phosphoric acid.

Submissions made by M/s Chemetall Rai India

26. M/s Chemetall Rai India, in brief, has contended as follows:

- Food grade and technical grade are two separate articles and the scope of investigation should be restricted to technical grade only. Technical Grade and Food Grade – Phosphoric Acid has different technical and chemical specification and are used by different industries as per the suitability of their end products. one cannot be used for substitute of the other. The contention of the Petitioner that the subject good is to be classified as Phosphoric Acid only instead of Phosphoric Acid – Technical Grade and Phosphoric Acid – Food Grade is not legally or factually tenable. The petitioner is trying to twist and present the submission of the exporter that it is a producer of only Food Grade – Phosphoric Acid to mean that the goods exported by the exporter has been made to user of technical grade – phosphoric acid only. While maximum share of Food Grade – Phosphoric Acid exported to India has been exported to/imported by the user of Food Grade – Phosphoric Acid user only and only a miniscule portion of the same has been imported by the users of technical grade phosphoric Acid that too on account of frequent shut down by one of the major producer of Phosphoric Acid or on account of non-supply of goods of requisite specification. The petitioner is producing Technical Grade – Phosphoric Acid only and does not have capability to produce Food Grade. The users of food grade phosphoric acid has repeatedly sought supply of food grade – phosphoric acid from the petitioner's company but company turned them away on account of their inability to supply the same.

Technical Grade Phosphoric Acid produced by the petitioner company cannot be used in pharmaceutical, edible oil extraction or food processing industries and for customers (in food processing industries etc.) whose requirement is specifically with respect to Food Grade Phosphoric Acid. Phosphoric Acid produced by Petitioner has very high fluoride content. Import of Food Grade – Phosphoric Acid has resulted as a matter of compulsion rather than as a matter of option, on account of non-availability of Food Grade in domestic market. M/s Solaris one of the major producers has been intermittently going on and off the production thereby leaving the users of phosphoric acid in a state of quandary. The user industry in order to maintain its production and delivery schedule has been forced to import the same from the subject countries. The export figures and statistic presented by the exporter clearly belies the claim of the petitioner that the imports of food grade were in fact intended for applications where technical grade were being used. There are three producers of Phosphoric Acid in India.

- Even if it is assumed that M/s Solaris is a producer of food grade phosphoric acid in India, it has neither joined as a petitioner in this investigation nor has supported the same. Hence, any submissions made by the petitioner on behalf of M/s Solaris are legally untenable. With respect to M/s PCCPL, the company has merely supported the petition of the petitioner company but has not shared its information with respect to all the 15 economic indices except information pertaining to sales that too without break-up of Food Grade and Technical Grade. In the absence of its production capacity, production and profitability etc. no arguments could be advance in respect of M/s PCCPL. As per the averments made by the petitioner it is clear that M/s PCCPL is not a producer of Phosphoric Acid but procures the same from M/s GACL. Credentials of M/s PCCPL as a producer of phosphoric acid are itself doubtful on the basis of sales information alone which is also showing increasing trend and no injury analysis could be made in favour of the contentions of the petitioner. Keeping in view of the above mentioned facts and circumstance, the Authority is requested not to treat the food grade and technical grade – phosphoric acid as one and same but two distinct goods and exclude food grade phosphoric acid from the purview of present investigation and duty net.

Submissions made by the Domestic industry

27. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- The Applicant has claimed that there is no known significant difference in the subject goods produced by the Indian industry and the subject goods exported from the subject countries. The subject goods produced by the Indian industry and imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

- Product under consideration is 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)'. Even though producers of phosphoric acid world over broadly follow either of the two paths, viz. the wet process or the dry process but the technology and production process of the two are comparable to the best of their knowledge.
- Food Grade Phosphoric Acid is nothing but purified form of Technical Grade Phosphoric Acid. Only additional purification process is required for conversion of Technical Grade Phosphoric Acid into Food Grade Phosphoric Acid in which only steam is used.
- M/s GACL produces technical grade whereas food grade is produced in India by M/s Solaris Chemtech and M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Limited. M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Limited has furnished complete information to the Authority which has been considered by the Authority in the preliminary determination.

Examination by the Authority

28. With regard to like articles, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under: -

"like article " means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

29. As regards the submissions filed by M/s Yeou FA Chemical Co. Ltd, Taiwan, the same were perused and it was found that the company has simply filed certain sheets detailing the export sales and domestic sales records without bothering to file the exporter questionnaire's response as per the format prescribed. In response to their submissions, the Authority vide its letter dated 6th April, 2011, *inter alia*, communicated to M/s Yeou FA Chemical Co. Ltd that they were expected to file the Exporter Questionnaire's response as per the prescribed format in order to substantiate their claim that they were not dumping the subject goods into India. A copy of the questionnaire was enclosed and it was clarified that the same could also be downloaded from www.commerce.nic.in website. It was clarified vide this letter that in the absence of requisite information/ data, the Authority would be constrained to record its findings on the basis of facts available to it in terms of Rule 6(8) of the Anti-Dumping Rules.
30. The Authority notes that M/s Yeou FA Chemical Co. Ltd failed to provide the requisite information/data inspite of the above clarification. As the company has failed to substantiate its claims and did not submit its response as per the prescribed format; the Authority is constrained to proceed on the basis of 'facts available' on record in terms of the AD Rules.
31. As regards the contentions that M/s GACL produces only Technical Grade Phosphoric Acid and does not produce Food Grade Phosphoric Acid, whereas M/s ICL-Rotem produces only food grade phosphoric acid and does not produce Technical Grade Phosphoric Acid; the Authority notes that M/s PCCPL does manufacture food grade quality of the PUC and has

reputed clientele for supplying the same. Besides, M/s ICL-Rotem in its response has acknowledged that it has exported food grade quality of the PUC as technical grade as well to India during the POI and thus has directly competed with the technical grade of the Like Article manufactured by the domestic industry.

32. As regards the contentions that different grades of Phosphoric Acid are not 'like product'; the Authority notes that the PUC in the instant matter was clearly defined at the stage of initiation of this investigation as 'Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' and as per Rule 2(d) of the AD Rules the domestic industry does manufacture the Like Article. Besides as noted above, M/s PCCPL does manufacture food grade quality of the PUC. Further, M/s ICL-Rotem in its response has acknowledged that it has exported food grade quality of the PUC as technical grade as well to India during the POI and thus has directly competed with the technical grade of the Like Article manufactured by the domestic industry.
33. As regards the contentions that the quality, manufacturing process and technology of producing Food Grade Phosphoric Acid by M/s ICL-Rotem is better than GACL's Technical Grade Phosphoric Acid; then also the cost of production of food grade phosphoric acid by ICL-Rotem is much lower than M/s GACL's technical grade phosphoric acid; the Authority notes that in order to arrive at fair comparison, both dumping margins and injury margins have been determined on grade-wise basis to the extent feasible. As regards lower cost of production of ICL-Rotem, the same has been duly considered while determining their dumping margin.
34. After considering the information on record, the Authority is of the view that there are primarily two grades of the subject goods, namely food grade and technical grade which are exported from the subject countries and further notes that the two grades are being produced by the Indian industry. It is further noted that the differences in the manufacturing processes would not tantamount to different subject goods. Any adjustment demonstrating to have impact on the prices have been allowed as per the claims made and verified by the Authority in terms of the AD Rules. It is also noted that the two grades of the subject goods produced by the Indian industry are comparable to the imported subject goods in terms of chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. They are technically and commercially substitutable. It is also noted that at times food grade has also substituted the technical grade, as per the acknowledgement of the M/s ICL-Rotem.
35. Thus, the Authority is of the view that the subject goods produced by the domestic industry is like article to the product under consideration in accordance with the AD Rules.

F. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

Submissions made by M/s ICL-ROTEM (ISRAEL)

36. M/s ICL- Rotem, in brief, has contended as follows:
 - M/s GACL is a related party to ICL as it has a contract with the group company for technology and knowhow. Also, the company restricts/controls the production of technical grade phosphoric acid of M/s GACL.
 - No declaration is made by M/s PCCPL regarding non-importation of goods, which is a mandatory procedural requirement. Therefore, its support letter should be rejected.

Without the support of M/s PCCPL, M/s GACL would not amount to 50% share in total Indian production.

Submissions made by M/s Chemetall Rai India

37. M/s Chemetall Rai India, in brief, has contended as follows:

- As investigation was initiated on the basis of the petition filed by M/s GACL and M/s GACL does not produce food grade; hence there is no *locus standi* to file a petition or seek imposition of duty on an article which is not produced by it. The standing of the petitioner being a producer of Technical Grade Phosphoric Acid cannot be extended to include food grade – phosphoric acid. It is denied that M/s PCCPL has submitted information with respect to all injury parameters. The only information as evidently available from the petition as well as Preliminary Findings is related to the sales figures. M/s PCCPL has not filed any information in the prescribed format to enable any injury determination on the basis of M/s PCCPL. Hence, the standing of the petitioner to file a petition for seeking imposition of AD duty is limited to technical grade – phosphoric acid and the same cannot be presumed to cover food grade – phosphoric acid as well.

Submissions made by the Domestic industry

38. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- M/s GACL has not signed any agreement with IMI (ICL's Group Company). Even if it is assumed that M/s GACL is related to IMI, in any case, there is no relationship between M/s GACL and M/s ICL in view of absence of legal and operational control. Purchase of technology by one party from other party in any case is a business between the two parties and does not lead to legal relationships within the meaning of Rule 2(b).
- Application has been filed by M/s. Gujarat Alkalis & Chemicals Limited, Baroda on behalf of the domestic industry and has been supported by M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd. Applicant accounts for a major proportion of the domestic production. Further, the production of the Applicant along with the supporter is more than 50% of the Indian production.
- On initiation, the Designated Authority is required to call information from other interested parties, including other domestic producers. In such a case, if information has been provided to the Designated Authority, the same cannot be rejected. Therefore, PCCPL's response cannot be rejected.

Examination by the Authority

39. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under: -

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers only"

40. The Authority notes that it had written to all the domestic producers to file the requisite information/data as per the AD Rules. In response thereto, while M/s Solaris Chemtech has not responded but M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd. submitted the information/data which has been verified and considered in this investigation.
41. The Authority notes that M/s PCCPL has filed its declaration stating that no importation of the product under consideration was made by it during the POI and the injury period. Notwithstanding this fact, there is no requirement under the AD Rules and regulations that domestic industry must account for 50% share in total Indian production, before seeking redressal of injury caused to it on account of dumping.
42. M/s PCCPL has also submitted information with respect to the injury parameters and the company does produce food grade of the subject goods as well. Thus, any argument that the investigation be restricted to technical grade of phosphoric acid is not tenable, being not based on facts.
43. As regards M/s GACL's contract with the ICL's group company for technology and knowhow; the Authority notes that same would not debar M/s GACL for being considered as domestic industry in terms of Rule 2(b). There is apparently no legal and operational control of ICL's group company over M/s GACL; besides, M/s GACL continues to be a major producer of the subject goods in India and has not abdicated its role as a domestic producer. In fact, M/s GACL is the applicant in the instant matter, which has sought redressal of injury caused to it on account of dumping of the subject goods.
44. The application has been filed by M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Limited, Baroda on behalf of the domestic industry and has been supported by M/s Punjab Chemicals & Crop Protection Ltd. As per information available on record, the Applicant accounts for about 45 % of the total Indian production. The production of the Applicant along with the supporter is more than 50% of the Indian production.
45. Thus, the application satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules and the Applicant along with the supporter is being treated as 'domestic industry' within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules.

G. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

Normal value

Submissions made by M/s ICL-ROTEM (ISRAEL)

46. M/s ICL-Rotem, in brief, has contended as follows:
 - It submitted all relevant information pertaining to domestic sales and cost of production as and when desired by Authority. It may be incorrect to allege that M/s ICL-Rotem has not provided relevant information. The Authority has not accorded reasons for not relying upon the appendices as submitted by M/s ICL.
 - The normal value cannot be determined on the basis of the cost of production for manufacturing in India. The international prices for HCL cannot be accorded to the Normal value for Israel as M/s ICL does not use HCL.

- The differences in manufacturing process have to be taken into account and accordingly incorporated in the determination of landed value for Israel. Further, the Normal value should be calculated separately for food grade and technical grade phosphoric acid. The Authority should have calculated the Normal value, price undercutting for technical grade considering the volume of imports for each grade of phosphoric acid.

Submissions made by M/s Chemetall Rai India

47. M/s Chemetall Rai India, in brief, has contended as follows:

- Petitioner has made a bald statement that the reasonable efforts were made by it to information/evidence of prices of subject goods in domestic market of subject countries. However, no evidence of such exercise was filed by the petitioner to substantiate the same. The exporters from both subject countries have responded to the exporter questionnaire response in the form and format prescribed by the Authority. The best available information with respect to the subject countries in general and responding exporters in particular are contained therein. Hence, the Authority is requested to use the same to the extent feasible especially with respect to raw materials cost, consumption norms and conversion costs.

Submissions made by the domestic industry

48. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- The domestic industry has estimated separate dumping margin for food and technical form. Thereafter, weighted average dumping margin has been determined considering associated weights. Dumping margin so calculated, is not only significant, but also substantial.
- The exporter did not provide relevant information despite being asked by the Authority within the stipulated time. The Authority has noted specific finding on this aspect.
- Regarding non use of HCL by the exporter, it may be noted that, as pointed out by the Authority in the Preliminary Finding, the company did not furnish complete information. Authority has therefore, proceeded on the basis of best information available.
- Duty is determined as lower of dumping margin and injury margin and not undercutting. Higher undercutting may be due to lower export price; however, dumping margin may be lower than the injury margin due to lower Normal value in the said market.

Examination by the Authority

49. As regards the contention that M/s ICL-Rotem had submitted all relevant information pertaining to domestic sales and cost of production as and when desired by Authority; the Authority draws attention to the Preliminary findings, where it has been specifically recorded that the company had not provided data in the relevant Appendixes to enable the Authority to carry out an appropriate ordinary course of trade test. Accordingly, the company was requested to furnish the requisite information/data vide a deficiency letter. It was also noted that despite providing an opportunity; the company did not provide the relevant information within the stipulated time. Therefore, the Authority was not able to determine the Normal value on the basis the company's domestic sales and was constrained to do so, on the basis of 'facts available' in terms of the AD Rules.

50. As regards the claim that the Normal value cannot be determined on the basis of the cost of production for manufacturing in India; the Authority notes that it was not able to determine the Normal value on the basis the company's domestic sales and was constrained to determine the same on the basis of 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules for the purposes of determining the preliminary findings.
51. As regards the contention that the differences in manufacturing process have to be taken into account and accordingly incorporated in the determination of landed value for Israel; the Authority notes that AD Rules & Regulations do not require that any difference in manufacturing processes have to be taken into account for the purposes of determination of landed value. However, in order to have a fair comparison for determination of injury margins, the landed values have been compared with the relevant NIP on a grade-wise basis. Further, the normal values and price undercutting have been determined separately for Food Grade and Technical Grades.
52. As regards the contention that the Applicant has made a bald statement that the reasonable efforts were made by it to information/evidence of prices of the subject goods in domestic market of subject countries and that no evidence of such exercise was filed by the petitioner to substantiate the same; the contention is not correct. Besides, only one exporter from Israel has cooperated in this investigation and none of the exporters from Taiwan has responded to the Authority by filing the exporter's questionnaire response in the form and format as prescribed. Notwithstanding the same, the best available information available on record has been used for the non-cooperating exporters/producers.

General methodology

53. The Authority has noted that there have been significant variations in the prices of major raw-materials during the POI; hence, the determination of the Normal values, Export prices and consequent Dumping margins have been undertaken based on a month-wise analysis. Besides, as noted above, the analysis has been undertaken considering the differences in grades with the subject goods, to the extent feasible.

Determination of Normal value in respect of Co-operative Exporters / Producers from Israel and Taiwan

54. The Authority sent questionnaire to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. However, only M/s Israel Chemical Limited-Rotem Amfert Negev Limited, Israel has filed its exporter's questionnaire response in the instant matter.

M/s Israel Chemical Limited Rotem Amfert Negev Limited, Israel

55. The questionnaire response submitted by the company was perused. It has been stated that the company produces only food grade phosphoric acid and that in case there is a demand for technical grade; the same is met by supplying the food grade as technical grade. It has been further stated that while the goods produced and sold in the home market and goods exported to India are identical but there is a difference in their concentration level. It was noted that the company had not provided data in the relevant Appendices, particularly Appendix 8B, to enable the Authority to carry out an appropriate ordinary course of trade test. Accordingly, the company was requested to furnish the requisite information/data vide a deficiency letter.

56. It is, however, noted that despite providing an opportunity; the company has not provided the relevant information within the stipulated time. Even during the on-the spot verification, the company could not provide satisfactory information as regards its fixed expenses. Therefore, the Authority is not able to carry out an appropriate ordinary course of trade test and thus is unable to determine the Normal value on the basis the company's domestic sales and is constrained to do so, on the basis of 'facts available' in terms of the AD Rules. For this purpose, variable costs of M/s Rotem Amfert Negev Limited namely; raw-materials and utilities have been considered. However, considering that the company could not submit the relevant documents during the on-the spot verification, other elements for determining the Normal value have been adopted on the basis of best information available on record. However, actual profit realized by the company has been adopted for this purpose.

Determination of Normal value in respect of Non-Co-operative Exporters / Producers

57. The Authority notes that no other exporter/producer from Israel and Taiwan has responded to the exporter's questionnaire. Therefore, the Normal values in their cases has been determined on the basis of 'facts available'. The Normal Values have accordingly been constructed on the basis of best information available. While in case of Israel, the Normal value for the co-operative exporter has been adopted which work out as US\$ ***. But for Taiwan, the same has been constructed considering international prices of raw materials namely Rock Phosphate and Hydrogen Peroxide; consumption norms and conversion costs as per best information available on record and a profit margin of 5% has been added to the costs so arrived, to determine the constructed Normal value, which work out as US\$ ***.

EXPORT PRICES

Export price for the responding exporters

M/s Israel Chemicals Limited, Israel through M/s Rotem Amfert Negev Ltd.

58. The Authority examined whether the export prices in respect of responding exporters could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. It is noted that the company has exported *** MT of the subject goods to India during the POI. The adjustments on account of inland freight, oversea freight, local expenses, commission, storage, packing cost, marine insurance, ICL fees, credit costs, credit insurance, bank charges and packing costs were noted during the course of on-the-spot verification. Certain corrections were made to the claims made by the company as per the documents shown during the verification process and the same as verified have been accepted. Besides, it was noted that the company does not get the VAT refund; hence, adjustment on this account has also been made to the Export price. Thus, the net export price so determined works out as US\$ ***/MT.

Determination of Export Price in respect of Non-Co-operative Exporters/Producers

59. Since no other response has been received from any other producer/exporter of the subject goods; the Authority has determined the Export price as per 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The data has been collated as per the information available on record. Accordingly, net export price in respect of the other producers/exporters from

Israel has been worked out as US \$ ***/ MT. Further, net export price in respect of the producers/exporters from Taiwan has been worked out as US \$ ***/MT.

DUMPING MARGIN

60. Considering the Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

| Sr. No. | Country | Producer | Exporter | Normal Value | Net Export Price | Dumping Margin | In US\$/MT |
|---------|---------|--------------------------------|------------------------------|--------------|------------------|----------------|--------------------------|
| | | | | | | | Dumping Margin % (Range) |
| 1. | Israel | M/s Rotem Amfert Negev Ltd. | M/s Israel Chemicals Limited | *** | *** | *** | 25-40 |
| 2. | Israel | All other exporters/ producers | | *** | *** | *** | 30-45 |
| 3. | Taiwan | All exporters/ producers | | *** | *** | *** | 15-30 |

H. INJURY AND CAUSAL LINK

61. The Authority has noted that there have been significant variations in the prices of major raw-materials during the POI; hence, the injury analysis has been undertaken by considering the data on a month-wise basis, to the extent feasible. Besides, while doing so the differences in grades within the subject goods have been duly considered.

Submissions made by M/s ICL-ROTEM (ISRAËL)

62. M/s ICL-Rotem, in brief, has contended as follows:
- M/s GACL produces technical grade phosphoric acid after importing Rock Phosphate from Jordan. The performance of M/s GACL has been affected due to the one source or channel for the procurement of raw materials. On the contrary M/s ICL has never faced with any such difficulty. M/s GACL had difficulties in procuring the raw materials (Rock phosphate) which is not the case with M/s ICL-Rotem.

- Cumulative assessment of effect of imports with respect to food grade phosphoric acid is highly inappropriate.
- The Authority has calculated lower range of price undercutting for Israel howsoever the Authority has assessed incorrectly the injury caused to the domestic industry.
- It has been contended that GACL has conceded the impact of recession in the year 2008-09 while assessing its performance for the year and the same should be rejected. M/s GACL has claimed in its annual report (2008-09) that 'during the year 2008-09 the company has achieved a high operational efficiency of all the plants and highest ever sales' with respect to Phosphoric Acid.
- If the imported product is of a different grade from the one produced in India; then the imported product is not substitutable by the product produced in India. The imported product is also not in commercial competition with the domestically produced product and thus it causes no material injury to the domestically produced product and that there cannot be a causal link between the imported product and the injury, if any, experienced by the domestic industry. Food Grade Phosphoric Acid cannot be used to calculate injury to M/s GACL as it does not produce food grade phosphoric acid. The majority of exports to India are of food grade phosphoric acid, which would not have affected the performance of the domestic industry. Further, if the dumped imports do not cause injury to the domestic industry imposition of anti-dumping duty is not warranted as it only increases the cost to the Indian importers without affording any protection to the Indian manufacturers. Furthermore, in the absence of injury and causal link imposition of anti-dumping duty is not permissible.
- The end consumers will be over burdened by the imposition of ADD when they are already facing inflation in the light of depreciation of INR. Any move to impose ADD on the subject goods would deprive the end user industry from cost effective products therefore instead of domestic injury, they would suffer from ADD. Newly set up industries/factories in India which require only Food Grade Phosphoric Acid for production of their products may not be able to sustain themselves considering that they will have to import the duty levied Food Grade Phosphoric Acid from ICL-Rotem.
- As the import of food grade phosphoric acid from Israel Chemicals Limited and/ or Rotem Amfert Negev Limited (Israel) causes no material injury to the Domestic Industry that produces only Technical Grade Phosphoric Acid and that there cannot be a causal link between the import of Food Grade Phosphoric Acid from Israel and the injury, if any, experienced by the Domestic Industry; therefore no anti-dumping duty should be imposed on imports of Phosphoric Acid from Israel Chemicals Limited and/ or Rotem Amfert Negev Limited, Israel.
- Further, the production capacity is restricted for M/s GACL. Therefore non-attribution analysis is not accorded appropriately. There cannot be a claim for volume injury because the rated production of M/s GACL is limited/ controlled in terms of the contract with M/s

IMI TAMI (a group company of ICL), which license agreement is for production of technical grade phosphoric acid only.

- The petitioner has filed information inflated data / contradictory to its own claims and has misled the Authority and therefore the Investigation should be terminated; it may be held that food grade phosphoric acid are not subject to the proposed (recommended) anti-dumping duty.
- M/s GACL's export sales have increased from 4 MT in 2008-2009 to 49 MT during the period of investigation. The said figures point towards the fact that M/s GACL is more inclined in exporting the subject product to other countries.
- One product segment cannot be protected at the cost of another.
- Food Grade Phosphoric Acid is already subjected to a basic duty of 2.5% and a total duty of 17.98%.
- There is no decrease in market share of M/s GACL's Technical Grade Phosphoric Acid due to import of M/s ICL-Rotem's Food Grade Phosphoric Acid. The decline in sales is not due to the Food Grade Phosphoric Acid exported by M/s ICL-Rotem.
- There is misrepresentation regarding threat of the injury, which is on account of misleading capacity details of the ICL-Rotem. There is no threat of injury to domestic industry on account of export of Food Grade Phosphoric Acid by ICL-Rotem.
- Domestic industry is trying to create cartel concerning the product.
- The annualized domestic sales of M/s GACL when compared with the permissible limits in the contract amounts to 82% utilization. Therefore, the submissions of domestic industry with respect to capacity utilisation (of 74%) are to mislead the Authority. M/s GACL has made contradictory declaration in its petition, proforma and annual report with regard to the performance in production and sales. A close look at the data with respect to capacity, production, domestic sales and total sales of M/s GACL filed under Proforma IV A along with the petition evidences that M/s GACL is claiming to make more domestic sales (in terms of quantity) than even the claimed capacity that it has to produce Phosphoric Acid from April 2006 to June 2010. Furthermore, total sales of M/s GACL are consequently not only higher than the production of M/s GACL, but also the capacity of M/s GACL. In light of the above, the injury claimed by M/s GACL with respect to production, capacity utilization and sales (by import of food grade phosphoric acid) is baseless. Data pertaining to sales by M/s PCCPL is incorrect and misleading. The information submitted by M/s GACL and M/s PCCPL is much lower than that assessed by the Authority.

Submissions made by M/s Chemetall Rai India

63. M/s Chemetall Rai India, in brief, has contended as follows:

- Injury to Petitioner if any has been on account of non-availability of rock phosphate. The petitioner is importing Rock Phosphate at far higher price as compared to M/s Solaris Chemtech. It is precisely the same reason, which enables M/s Solaris to price its phosphoric acid below the price of petitioner company. The prices of M/s Solaris Chemtech are much lower than the prices of M/s GACL. The comparison of landed value of subject goods from subject country with sales price of Solaris would show that the landed value of imported phosphoric acid is higher than the sales price of phosphoric acid by M/s Solaris. Hence, any price injury occurring to M/s GACL cannot be attributed to imported goods since the imported goods are mainly food grade – phosphoric acid which is not produced by the petitioner. The imported goods are also mainly imported by the users of food grade – phosphoric acid which requires application of food grade for their end products manufacturing. Moreover the prices of M/s Solaris Chemtech being lower are setting the benchmark pricing for competition in India.
- The petitioner is taking into consideration all types of phosphoric acid for the purpose of injury analysis regardless of the fact that it is a producer of technical grade phosphoric acid only. In the absence of classification of volumes of import and its end user, it cannot be concluded that the imported subject goods are in direct competition with the phosphoric acid manufactured by the petitioner. No injury has been caused to the petitioner as M/s GACL is the producer of technical grade phosphoric acid only while as per the information disclosed by the responding exporter, majority of imports are that of food grade phosphoric by the user of food grade phosphoric acid for the purpose of undertaking manufacturing/production operation in the pharmaceutical and food processing industries. The claims of the petitioner that the products manufactured by the producers from the subject countries and the products manufactured by the petitioner has comparable properties as the evidence presented on record by the various interested parties completely belies the claim of the petitioner. It is denied that there are common parties who are resorting to use of the imported subject goods from various sources and the goods produced by the petitioner. No such evidence has been brought on record by the petitioner to establish such a bald claim made by the petitioner. The averment made by the petitioner that the exporters from the subject countries and domestic industry have sold the product in the same periods to the same set of customers is again devoid of merits and is not supported by any corroborating evidence. As per the material brought on record, the material produced by the petitioner or for that matter even M/s PCCPL is not conducive for the purpose of use in pharmaceutical applications. The contention of the petitioner that the import volume has increased significantly is wrong and denied. Due regard is warranted with respect to nature of material, volume and its users. The majority of imports constitute imports of food grade phosphoric acid by the user of food grade phosphoric acid for its application in manufacture of goods requiring phosphoric acid having least amount of impurities and other imperfections such as high level of fluorine etc.

- Out of two major producers of the subject goods in India i.e., M/s GACL and M/s Solaris, the other producer of the subject goods has been struggling to maintain the operations of the company, thereby leading to supply disruption. The users of the phosphoric acid in general and food grade phosphoric acid in particular have to depend of the import of the subject goods in India. Importation of phosphoric acid is directly linked to shutdown/suspension of the production by M/s Solaris. The non-supply and non-availability of subject goods has not only disturbed the delivery schedule of the user industry but has also at times resulted in forced shut-down on account of non-availability of raw material. M/s GACL is taking advantage of the situation due to shutdown of M/s Solaris and has increased its price. In order to overcome such hurdles and frequent hardship, the user industry including responding users are left with no other option but to rely on the imports of phosphoric acid from abroad.
- There is no price effect or suppression/depression as the import of the subject goods are not directly in competition with the phosphoric acid produced by the petitioner company, there can be no adverse price effect of the same on the performance of petitioner company.
- The economic parameters presented by the petitioner are with respect to technical grade only. Since the imports of subject goods are not directly in competition with the goods, there is no injury on account of imported goods. There is import of food grade phosphoric acid and the petitioner company is producing technical grade phosphoric acid. M/s PCCPL has neither given its credentials nor provided its data. The imported goods are not competing with the technical grade produced by the petitioner company.
- M/s GACL is not the producing food grade- phosphoric acid but the prices of M/s GACL are higher than the phosphoric acid produced and sold by Solaris. It is submitted that the prices of the M/s GACL are much higher than the prices of phosphoric Acid sold by M/s Solaris. Moreover M/s GACL has increased its prices in the month of October 2011 by an increase of approximately 32% within a short period of 3 months. The prices are expected to further go up once the preliminary AD duty comes into effect. The AD duty being recommended in fixed terms will further push the prices of phosphoric acid to enable petitioner seek unreasonably higher returns instead of reasonable profits.
- Duty, if recommended should be on reference price basis, particularly as devaluation of Indian Rupee has increased the protection level of the petitioner. The fixation of AD duty on reference prices is warranted keeping in view the following:
 - Petitioner is not a producer of Food Grade Phosphoric Acid.
 - M/s Solaris i.e., the other major producer of phosphoric acid having nearly 50% production capacity has been time and again suspended its production on account of its internal problems thereby leaving user industry in dire straits, who have to necessarily depend on import of phosphoric Acid especially Food Grade.
 - The fixation of AD in fixed terms will allow extortion of super profits on the part of the petitioner as the prices will be fixed keeping in view the quantum

of duty rather than reasonable returns on investment. The fixed anti-dumping duties being enjoyed by the Indian industry have been built into their price, thus enabling them to enjoy unreasonably high margins at the cost of the user industries.

- De-valuation of Rupee has further increased the protection level for the petitioner as the imports have become costlier.
- Injury to the petitioner has been due to non-availability of rock-phosphate. The petitioner has been importing rock-phosphate at much higher prices as compared to M/s Solaris.
- The effect of wage increase has not been properly examined. The increase in wages has led to decrease in productivity and has led to decline in profitability of the petitioner.

Submissions made by the domestic industry

64. The following submissions, in brief, have been made by the domestic industry:-

- Even when the imports of the subject goods from the subject countries appeared for the first time in 2008-09, the volumes increased significantly in the POI. Imports have increased significantly in relation to production, total imports and consumption in India. The share of imports from the subject countries, which was Nil in the base year, went up by 17.41% in the POI.
- Imports are undercutting the prices of the domestic industry. The price undercutting is leading to price depression much beyond the decline in the cost of production and preventing the price increase that would have occurred in the absence of dumping.
- Performance of the domestic industry has declined in terms of production, sales, capacity utilization, market share, profits, return on investment, cash flow and inventories in the POI when the imports are showing a significant increase. Employment and wages have not shown decline. This is due to the fact that petitioner is a multi product company and employment and wages are not solely dependent on the subject goods performance.
- The domestic industry was in the process of recovering from past effects of dumping; but the recovery has been prevented by the fresh dumping of the product. The industry was earlier faced with fresh dumping from Korea. The industry is now faced with fresh dumping from the subject countries. Performance of the domestic industry was expected to improve after imposition of the anti dumping duty on imports from China PR & Korea RP. Performance in terms of price parameters did improve briefly in 2008-09; but the same has deteriorated once again in 2009-10.
- The deterioration in the performance during the current period is material and quite significant.

Other Issues

- There is no material on record to establish that the imposition of anti dumping duty on food grade will severely affect the interests of consumers in this segment. The averment is a mere statement and lacks substantiation.
- Petition has been filed by M/s GACL. Hence, petition contains data of M/s GACL. Whereas M/s PCCPL has furnished data subsequent to the initiation of the investigation. Figures given in the preliminary finding are for domestic industry as a whole. Therefore, data submitted in the petition and the data given in the PF ought to be different.
- There are no efforts to include M/s Solaris Chemtech. The opposing parties have given wrong statement that M/s Solaris is closed and not in production, which was opposed by the company and company in its letter to representative of domestic industry confirmed that the company is producing product regularly.
- Increase in the consumption of food grade phosphoric acid is not in food application. Food grade phosphoric acid is being consumed where the consumers were earlier using technical grade phosphoric acid. The responding exporter has admitted that it has supplied food grade phosphoric acid to those customers who were using technical grade phosphoric acid. Thus, the increase in food grade phosphoric acid is not because of increase in the requirement of food grade phosphoric acid. It is because of availability of food grade phosphoric acid at the prices close to technical grade phosphoric acid, thus substituting the market of technical phosphoric acid.
- M/s PCCPL has in fact made a declaration with regard to import in its authorization letter dated 05-05-2011 as is available with the Authority.
- M/s PCCPL's information has been incorporated in the preliminary finding and M/s PCCPL does not publish separate information on capacity, production etc for product concerned, hence, the information is not available in public domain. Therefore, the Authority rightly kept the information confidential.

Examination by the Authority

65. As regards the contention with respect to M/s GACL produces technical grade phosphoric acid after importing Rock Phosphate from Jordan and that the performance of M/s GACL has been affected due to the one source or channel for the procurement of raw materials; the Authority notes that the contention has not been substantiated while advancing the argument by M/s ICL-Rotem. In any case, the differences in procurement of raw-material has been duly considered while computing the company's Normal value and consequent dumping margin.
66. As regards the contention with respect to cumulative assessment of effect of imports with respect to food grade phosphoric acid; the Authority notes that it has undertaken cumulative analysis in terms of the AD Rules on the subject. Besides, the AD Rules also permit the Authority to assess the effect of the dumped imports in relation to the

production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, if separate identification of that production is not possible.

67. As regards the contention with respect to calculation of price undercutting; the Authority notes that the same has been assessed properly on grade-wise basis.
68. As regards the contention that inflated data / contradictory information has been filed before the Authority; the Authority notes that the injury analysis has been undertaken based on the compilation of the data submitted by M/s GACL and M/s PCCPL, which has also been verified during the on-site verification visits.
69. As regards the contention relating to the production capacity of M/s GACL is restricted and the claim for volume injury is unsustainable because of the rated production of M/s GACL is limited/ controlled in terms of the contract with IMI TAMI; the Authority notes that M/s GACL has licensed/installed capacity of PUC but has been able to utilize the same only to extent of 78%. Hence, the contention made relating to volume injury is devoid of any merit.
70. As regards the contention relating to import of food grade phosphoric acid from M/s Israel Chemicals Limited and/ or M/s Rotem Amfert Negev Limited (Israel) causes no material injury to the domestic industry; the Authority notes that M/s PCCPL does manufacture food grade quality of the PUC and has reputed clientele for supplying the same. Besides, M/s ICL-Rotem in its response has acknowledged that it has exported food grade quality of the PUC as technical grade as well to India during the POI and thus has directly competed with the technical grade of the Like Article manufactured by the domestic industry. Thus, the contention that the domestic industry produces only technical grade phosphoric acid and there cannot be a causal link between the import of food grade phosphoric acid from Israel and the injury, if any, experienced by the domestic industry is devoid of any merit.
71. As regards the contention that M/s GACL has conceded the impact of recession in the year 2008-09 while assessing its performance for the year; it is noted that the POI in the instant matter is a latter period, in respect of which the injury has been analysed. Further, there should not be any grievance if M/s GACL has achieved a high operational efficiency; with respect to sales, the observation again relates to a period prior to the POI in the instant matter.
72. As regards the contention relating to end consumers will be over burdened by the imposition of Anti-dumping duty; the Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market. Imposition of anti-dumping measures would not restrict fair imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. Besides, it is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the

subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. As regards the industries/factories in India which require only food grade phosphoric acid for production of their products, while they may continue to import from the subject countries including from M/s ICL-Rotem after paying the anti-dumping duty or choose to procure the same from any other source including M/s PCCPL.

73. As regards the contention that if the imported product is of a different grade from the one produced in India and that the imported product is not substitutable by the product produced in India; the Authority notes that food grade quality of the PUC is indeed being manufactured in India by M/s PCCPL; and hence, the imported product is in commercial competition with the domestically produced product. It thus causes material injury to the domestically produced product on account of dumping practices, as may be seen from relevant sections of these findings.
74. As regards the contention that M/s GACL's export sales have increased from 4 MT in 2008-2009 to 49 MT during the POI; the Authority notes that exports of about 0.2% of the installed capacity does not reflect that M/s GACL is more inclined in exporting the subject product to other countries.
75. As regards the contention that one product segment cannot be protected at the cost of another, the Authority notes that it is a settled principle that an anti-dumping investigation is undertaken for determination of dumping and consequent injury in relation to a specified product imported from specified sources and not in relation to product segments.
76. As regards the contention that food grade phosphoric acid is already subjected to a basic Customs duty of 2.5% and a total duty of 17.98%; the Authority notes that the intent and purposes of the two Customs duty and Anti-dumping duty are distinct and different. The latter seeks to redress the 'injury' caused to the domestic industry on account of dumping practices.
77. As regards the contention that M/s GACL's claim in its annual report (2008-09) that 'during the year 2008-09 the company has achieved a high operational efficiency of all the plants and highest ever sales' with respect to Phosphoric Acid; the Authority notes that the said claim is in respect of a period preceding the POI, whereas the injury analysis has been undertaken in the context of the POI over the injury period.
78. As regards the contention that there is no decrease in market share of M/s GACL's technical grade phosphoric acid due to import of M/s ICL-Rotem's food grade

phosphoric acid; the Authority notes that M/s ICL-Rotem's contention is not tenable as the company in its own response has acknowledged that that in case there is a demand in India for technical grade; the same is met by the company by supplying the food grade as technical grade.

79. As regards the allegation that the Domestic industry is trying to create cartel concerning the product; the Authority notes that M/s ICL-Rotem has not substantiated the allegation while advancing the same. Besides, this Authority is not the right forum raise the issue as practices such as anti-competitive behaviour are addressed by other specialized bodies.
80. As regards the contention that there is no threat of injury to Domestic Industry on account of export of food grade phosphoric acid by ICL-Rotem; the Authority notes that the domestic industry has suffered material injury on account of dumping; therefore, the issue of threat of materials injury has not been further examined.
81. As regards the contention that out of two major producers of the subject goods in India i.e., M/s GACL and M/s Solaris, the other producer of the subject goods has been struggling to maintain the operations of the company and that non-supply and non-availability of subject goods has not only disturbed the delivery schedule of the user industry; the Authority notes that the contention has not been substantiated. M/s Solaris has not furnished the data, despite the fact they were requested to do so. Besides, the Authority had requested M/s Chemetall Rai India to provide evidence substantiating the contention. In response thereto, M/s Chemetall Rai India has enclosed a letter dated 8th October 2010 of M/s Solaris stating that they have suspended their operation for the time being. The Authority, however, notes that a perusal of the letter shows that the operations have been suspended post-POI viz . in October 2010 , whereas the POI for which injury has been examined over the injury period is 1st April 2009 to 30th June 2010; and hence, the contention is not relevant in the context of present injury analysis.
82. As regards the contention that injury to M/s GACL, if any, has been on account of non-availability of Rock Phosphate and that it is importing Rock Phosphate at far higher price as compared to M/s Solaris; the Authority notes that the contention has not been substantiated by M/s Chemetall Rai India. The Authority had requested M/s Chemetall Rai India to provide evidence substantiating the contention but the same has not been received.
83. As regards the contention that the duty, if recommended, should be on reference price basis; the Authority notes that it would recommend the measure on merits considering the facts available on record.
84. As regards the contention that the annualized domestic sales of M/s GACL when compared with the permissible limits in the contract amounts to 82% utilization; the Authority notes that the contention is devoid of any merit as the said figures are for both the domestic producers that had submitted that data viz. M/s GACL and M/s PCCPL. Besides, the capacity utilisation is evaluated on the basis of the production and not *vis a*

vis the sales. Thus, the Authority has examined and evaluated the injury parameters for the domestic industry viz. M/s GACL and M/s PCCPL, as may be seen from the relevant sections of these findings.

85. As regards the contention that the effect of wage increase has not been properly examined the Authority notes that both the Applicant and as well as the supporting company are multi-product companies and hence it would not be appropriate to determine injury or the absence of it on the basis wages alone. In any case, while undertaking injury analysis no one of these factors as stipulated under the law by itself can necessarily give decisive guidance but the injury has to be examined and evaluated on the basis of totality of these factors.
86. As regards the contention that the petitioner is taking into consideration all types of phosphoric acid for the purpose of injury analysis regardless of the fact that it is a producer of technical grade phosphoric acid only and that in the absence of classification of volumes of import and its end user, it cannot be concluded that the imported subject goods are in direct competition with the phosphoric acid manufactured by the petitioner; the Authority notes that contentions are baseless; as the scope of investigation was set out right at the time of the initiation of this investigation to include Phosphoric Acid of all grades and all concentrations (excluding Agriculture/Fertilizer Grade)' originating in or exported from Israel and Taiwan. It is further noted that the applicant along with the supporter produce both technical grade and food grade of phosphoric acid. Besides, M/s ICL-Rotem has admitted that it is also supplying the food grade phosphoric acid to users of technical grade of phosphoric acid in India, thereby injuring even the producers of technical grade. Assuming for the sake of arguments that foods grade phosphoric acid should be excluded from the scope of this investigation; then such an act would nullify the entire process of investigation as the duty even if levied would easily be circumvented through imports of food grade phosphoric acid by users of technical grade as well, which is already happening.
87. As regards the contention that there is no price effect or suppression/depression as the import of subject goods are not directly in competition with the phosphoric acid produced by the petitioner company and that there can be no adverse price effect of the same on the performance of petitioner company: the Authority notes that the contention is baseless as M/s PCCPL has submitted the data and thus the data filed by M/s GACL and M/s PCCPL has been used to undertake the injury analysis. M/s Solaris did not furnish the data, despite the fact they were requested to do so. In the circumstances, the injury analysis has been undertaken as per the AD Rules and regulations on the subject.
88. As regards the contention that the users of the phosphoric acid in general and food grade phosphoric acid in particular have to depend of the import of the subject goods in India; the Authority notes that the AD measures do not seek to thwart imports at all but only seek to redress injury caused to the domestic industry on account of dumping and thereby ensuring a level playing field to it.

Cumulative assessment

89. Annexure II para (iii) of the AD Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -

- a. the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively accounts for more than seven percent of the import of like article and
- b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

90. The Authority notes that:-

- The subject goods are being dumped into India from a number of countries.
- The margins of dumping from each of the subject countries are more than the *de-minimis* limits prescribed;
- The volume of imports from each of the subject countries is more than the *de-minimis* limits prescribed;
- Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate as the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market, which is evident from the following:-
 - a. The products manufactured by the producers from the subject countries and the products manufactured by the Applicant and the supporter have comparable properties. In other words, goods supplied by various subject countries and by the domestic industry are *inter-se* like articles.
 - b. There are common parties who are resorting to use of the imported subject goods from various sources and the goods produced by the domestic industry. Both, the imported and the domestic subject goods, are being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported products and *inter-se* amongst imported products.
 - c. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the product in the same periods to the same set of customers. The sales channels are comparable.
 - d. The volume of imports from each of the subject countries is significant.

91. In view of the above, the Authority considers that it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries.
92. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
93. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the AD Rules.
- A) Volume Effects of Dumped Imports:

Demand and market share

94. Demand of the product in the Countries has been assessed as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources.

| Particulars | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) | POI (Annualised) |
|--|------|---------|---------|---------|-------------------------------|------------------|
| Imports - as per IBIS data | | | | | | |
| Volume (MT) | | | | | | |
| Israel | MT | Nil | Nil | Nil | 9243 | 7394 |
| Taiwan | MT | Nil | Nil | 233 | 4776 | 3821 |
| Country Attracting Duty | MT | 4150 | 17877 | 12935 | 9797 | 7838 |
| Other Countries | MT | 429 | 252 | 842 | 1177 | 942 |
| Total Imports | MT | 4579 | 18129 | 14010 | 24993 | 19995 |
| Applicant domestic industry along with | MT | 27679 | 30292 | 22353 | | 22876 |

| | | | | | | |
|------------------------------|----|-------|-------|-------|-------|-------|
| supporting domestic producer | | | | | 28595 | |
| Other domestic producers | MT | 29332 | 27954 | 23765 | 26937 | 21550 |
| Total | MT | 57011 | 58246 | 46118 | 55532 | 44426 |
| Total Demand | MT | 61590 | 76375 | 60128 | 80505 | 64421 |

95. It is noted that demand for the product has significantly increased in the 2007-08 period as compared to the base year and then went down in 2008-09 period and has increased again thereafter in the POI. The demand, however, increased in the POI as compared to the base year.

Import volumes and market share

96. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.
97. The Authority requested the office of DGCI&S for the relevant import details as regards the subject goods but the same has not yet been received. The Applicant has provided information with regard to imports of the subject goods into India based on IBIS data for 2006-07, 2007-08, 2008-09 and POI periods. Thus, the volume of imports reported by IBIS has been adopted. Further, a response form one producer/exporter from Israel has been received by the Authority. The data available on record has thus been collated and compiled to determine the total volume of the subject goods imported into India.
- a) It is seen that the imports of the subject goods from the subject countries have increased significantly during the POI:

| Particulars | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI(April 2009 to June 2010) | POI (Annualised) |
|----------------------------|------|---------|---------|---------|------------------------------|------------------|
| Imports - as per IBIS data | | | | | | |
| Volume (MT) | | | | | | |

| | | | | | | |
|-------------------------|----|------|-------|-------|-------|-------|
| Israel | MT | Nil | Nil | Nil | 9243 | 7394 |
| Taiwan | MT | Nil | Nil | 233 | 4776 | 3821 |
| Country Attracting Duty | MT | 4150 | 17877 | 12935 | 9797 | 7838 |
| Other Countries | MT | 429 | 252 | 342 | 1177 | 942 |
| Total Imports | MT | 4579 | 18129 | 14010 | 24993 | 19995 |

- b) Imports from the subject countries have increased in relation to production and consumption in India as compared to the base year.

| | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) |
|---|------|---------|---------|---------|-------------------------------|
| Dumped imports in relation to Indian production | % | 0 | 0 | 0.48 | 25.10 |
| Dumped imports in relation to demand in India | % | 0 | 0 | 0.38 | 16.89 |

- c) While market share of the subject countries has increased; the share of Indian producers has declined.

| Market Share in Demand | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) |
|--|---|---------|---------|---------|-------------------------------|
| Petitioners | % | 43.78 | 37.97 | 36.06 | 33.88 |
| Supporters | % | 1.16 | 1.69 | 1.12 | 1.64 |
| Other Indian producers | % | 47.62 | 36.60 | 39.52 | 33.46 |
| Subject countries | % | - | - | 0.39 | 17.41 |
| Countries attracting anti-dumping duties | % | 6.74 | 23.41 | 21.51 | 12.17 |
| Other Countries | | 0.70 | 0.33 | 1.40 | 1.44 |
| Total | % | 100 | 100 | 100 | 100 |

98. It is seen from the above table that volume of import of the subject goods from the subject countries has increased significantly; whereas the share of domestic industry has decreased over the injury period. The share of imports from the subject countries, which was Nil in the base year, went up by 17.41% in the POI.

Price effect of imports

99. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. It is seen that the landed value of imports of the subject goods are significantly below the net selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting. The position is as follows.

| | Unit | Israel | Taiwan |
|-----------------------|-----------|--------|--------|
| Net Sales Realization | Rs./MT | *** | *** |
| Landed Value | Rs./MT | *** | *** |
| Price Undercutting | Rs./MT | *** | *** |
| Price Undercutting | (%) | *** | *** |
| Price Undercutting | Range (%) | 90-100 | 15-25 |

100. A perusal of the data in respect of the cost of sales and the net selling price shows that the domestic industry has apparently not suffered from any price suppression/ depression, if the data of the POI is compared vis a vis the base year data. However, if the cost of sales and net selling price are seen vis a vis 2008-09 period, there appears to be a case of significant price depression during the POI, as it is noted that the cost of sales dropped by 23%; whereas the net selling price dropped by about 29%.

| | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI(April 2009 to June 2010) |
|-------------------|--------|---------|---------|---------|------------------------------|
| Cost of Sales | Rs./MT | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Index | 100 | 99.72 | 189 | 146 |
| Net Selling Price | Rs./MT | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Index | 100 | 114 | 225 | 159 |

101. The other injury parameters relating to the domestic industry are as follows:

Sales volumes

102. The sales volumes of the domestic industry were analyzed over the injury period as follows:

| Domestic Sales volume (MT) | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) | POI (Annualised) |
|---|------|---------|---------|---------|-------------------------------|------------------|
| Applicant domestic industry | MT | 26965 | 28997 | 21682 | 27273 | 21818 |
| Supporting domestic producer | MT | 714 | 1295 | 671 | 1322 | 1058 |
| Applicant domestic industry along with supporting domestic producer | MT | 27679 | 30292 | 22353 | 28595 | 22876 |
| Other domestic producers | MT | 29332 | 27954 | 23765 | 26937 | 21550 |
| Total | MT | 57011 | 58246 | 46118 | 55532 | 44426 |

103. The Authority notes that the domestic industry's sales volume have decreased significantly during the POI as compared to the base year; whereas it has marginally improved as compared to the 2008-09 period. The Authority notes that the decline in the sales volume was inspite of increase in the demand for the subject goods in the country over the injury period.

Capacity and Capacity Utilization

| | Capacity | Production | Capacity utilization |
|------------------------------|----------|------------|----------------------|
| Unit | MT | MT | % |
| 2006-07 | 29730 | 26639 | 90 |
| 2007-08 | 29730 | 29564 | 99 |
| 2008-09 | 29730 | 24842 | 84 |
| POI(April 2009 to June 2010) | 37163 | 27371 | 74 |
| POI (Annualised) | 29730 | 21889 | 74 |

104. The Authority notes that while capacity has remained constant throughout the injury period; the production of the Applicant domestic industry increased in the 2007-08 period as compared to the base year; but has subsequently fallen significantly. Capacity utilisation has dropped from 90% in the base year to 74% in the POI. The domestic industry has contended the positive trend in the 2007-08 period was because of the levy of anti-dumping duty concerning imports of the subject goods from China PR.
105. The Authority notes that ordinarily the production and the sales of the domestic industry should have increased with the increase in demand of the subject goods in India; but it has shown a decline instead. It is seen that the production of the applicant domestic industry declined by 18 % during the period of investigation as compared to the base year; whereas its sales have declined by 17 %. Apparently, the domestic industry has not been able to utilize its production capacities, and its utilization is at lowest level during the period of investigation.

Factors affecting prices:

106. The Authority notes that during the POI, imports are undercutting the domestic industry's selling prices.

| | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) |
|--|-------|---------|---------|---------|-------------------------------|
| Cost to make & sell | Rs\MT | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Index | 100 | 99 | 189 | 146 |
| Net Selling price | Rs\MT | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Index | 100 | 114 | 225 | 159 |
| Profit/(loss) | Rs\MT | (***) | (***) | *** | (***) |
| Trend | Index | (100) | (4) | 49 | (56) |
| Landed value of dumped import - Israel | Rs\MT | | | | *** |
| Landed value of dumped import - Taiwan | Rs\MT | | | | *** |

107. It is observed that the landed value of imports of the subject goods is significantly below the net selling price of the domestic industry during the POI, thus causing significantly price undercutting. A perusal of data further shows that in comparison to the base year,

the domestic industry' net selling prices increased more than the increase in its cost of sales. However, the domestic industry has claimed that this positive trend in the 2007-08 and 2008-09 was because of some check on dumping by way of imposing anti dumping duty concerning imports of the subject goods from China PR and Korea RP.

Profit/Loss, return on investment and cash profits

108. The position with regard to Profit/Loss, return on investment and cash profits is as follows:

| | | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI (April 2009 to June 2010) | POI Annualised |
|----------------------|-----------|---------|---------|---------|-------------------------------|----------------|
| Profit/(loss) | Rs./lakhs | (***) | (***) | *** | (***) | (***) |
| Trend | Index | (100) | (4) | 40 | (58) | (47) |
| Return on Investment | % | (***) | *** | *** | (***) | (***) |
| Trend | Index | (100) | 16 | 70 | (45) | (45) |
| Cash profit | Rs. Lakhs | (***) | *** | *** | *** | *** |
| Tend | Index | (100) | 132 | 246 | 37 | 30 |

109. It is seen that the domestic industry was incurring huge losses during the base year 2006-07. The situation in this respect improved a little, as the losses reduced significantly during 2007-08 period. Its performance further improved as it earned profits during the year 2008-09 period. But the performance worsened significantly thereafter during the POI, as heavy losses were incurred by it during the POI. However, the losses to domestic industry have reduced substantially from Rs. *** lakhs during the base year to Rs. *** lakh on annualized basis during the period of investigation. Return on investment and cash profits have followed the same trend as that of profitability. This improvement too has been alluded to by the domestic industry to the levy of anti-dumping duty on the subject goods vis a vis countries already attracting duties.

Inventories:

110. The data relating to inventories shows as follows:

| | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI(April 2009 to June 2010) |
|---------------|------|---------|---------|---------|------------------------------|
| Average Stock | Mt | *** | *** | *** | *** |

| | | | | | |
|--------------|---------|-----|----|----|-----|
| <i>Trend</i> | Indexed | 100 | 43 | 97 | 134 |
|--------------|---------|-----|----|----|-----|

111. It is noted that inventories have increased in the POI as compared to the base year. Apparently the domestic industry is not able to sell its produce completely resulting in increase in inventories, despite increase in the demand.

Employment, wages and productivity:

112. The data relating to employment, wages and productivity is as follows:

| | Unit | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | POI(April2009-June10) | POI Annualised |
|-------------------------------|---------|---------|---------|---------|-----------------------|----------------|
| Number of employees- | Nos. | *** | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Indexed | 100 | 106 | 102 | 113 | 113 |
| Wages- | Rs.Lacs | *** | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Indexed | 100 | 119 | 127 | 253 | 202 |
| Wages per unit of production- | Rs./MT | *** | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Indexed | 100 | 107 | 137 | 246 | 246 |
| Productivity per employee- | MT | *** | *** | *** | *** | *** |
| Trend | Indexed | 100 | 105 | 90 | 73 | 73 |

113. It is seen that the number of employees marginally increased during the injury period. Wages per unit of production increased significantly during the POI as compared to the base year; whereas the productivity per employee showed a declining trend during the same period. Besides, it is seen that total wages paid showed an increasing trend. It is, however, noted that both M/s GACL and M/s PCCPL are multi-product companies. As employment and wages are not solely dependent on the subject goods performance, they cannot be considered to have caused any significant impact on the performance of the companies so far as the subject goods are concerned.

Dumping Margin:

114. It is observed from the section pertaining to Dumping Margin above that dumping margins in respect of the subject countries are significantly positive.

Growth:

115. It is noted that the growth of the domestic industry shows a declining trend and has become negative in the POI as compared to the preceding year.

Ability to raise funds:

116. The Authority notes that the applicant is a multi-product company; hence its ability to raise funds cannot be fairly evaluated on the basis of its performance of the subject goods.

Conclusion on material injury:

117. The demand of the subject goods has increased from 100 (Index) in base year to 105 (Index) in POI, i.e., increase by 5%. During the same period, the domestic sales have declined by 17%; thus the domestic industry has not been able to take advantage of the increase in demand of the subject goods in the Indian market.
118. It is seen that the imports have increased significantly in absolute terms and in relation to production & consumption in India. The imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry. As a result, of the significant increase in imports and price difference between the imported and domestic product, the performance of the domestic industry has deteriorated in terms of parameters such as production, sales volumes, capacity utilization and market share during the POI in comparison to the base year. However, during the same period loss to the domestic industry has come down and cash profit and return on investment also follows the same trend. The improvement on some of the parameters has been alluded to by the domestic industry to the levy of anti-dumping measures concerning imports of the subject goods from countries already attracting the duties.
119. The above analysis shows that the domestic industry has suffered material injury.

I. CAUSAL LINK

120. As per the AD Rules, the Authority is, *inter alia*, obligated to also examine any known factors other than the dumped imports, which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors are not attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry.
121. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It is noted that:

344 4712-14

- a. Imports from Third Countries: - The Authority notes that imports from third countries other than those already attracting anti-dumping duties are negligible and thus could not have caused injury to the domestic industry.
 - b. Contraction in Demand: - The Authority notes that there is no contraction in the demand over the injury period. On the contrary, overall demand for the subject goods has shown significant positive growth during the POI as compared to the base year.
 - c. Pattern of consumption: - No significant change in the pattern of consumption has come to the knowledge of the Authority, nor any interested party has made any submission in this regard.
 - d. Conditions of competition: - The investigation so far has not shown that conditions of competition or trade restrictive practices are responsible for the claimed injury to the domestic industry.
 - e. Developments in technology: - The investigation so far has not shown that there was any significant change in technology, which could have caused injury to the domestic industry.
 - f. Export performance of the domestic industry: - The price and profitability in the domestic and export market has been segregated by the Authority for the purpose of present injury assessment. Therefore, the analysis on injury is not misrepresentative due to possible inclusion of export performance.
122. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters indicate that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.
- The imports of the subject goods from the subject countries are available at prices lower than domestic industry. Apparently, the consumers are switching over to imports as consequence thereof, thus leading to loss of market share for the Indian producers in general and domestic industry in particular.
 - The domestic industry has lost sales volumes. Its market share has declined, whereas that of imports from the subject countries has increased.
 - As a consequence of decline in the market share of the domestic industry, production & capacity utilization of the domestic industry deteriorated significantly. Deterioration in these parameters is apparently due to the presence of the dumped imports.
 - The dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry. There is a case of significant price-depression as well, if its net selling prices are seen *vis a vis* the preceding year. Besides, the domestic industry's performance in terms of profits, return on investment and cash flow is far from satisfactory. In fact its

performance has significantly deteriorated, if analysed *vis a vis* its performance during the preceding period.

123. The Authority is thus of the view that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

Magnitude of injury and injury margin:

124. The Authority has determined non-injurious prices of different grades of the subject goods for the domestic industry taking into account the respective cost of production of the domestic industry. The non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject goods to determine the injury margins. The injury margins have been worked out as follows:

| Producer/Exporter | IM US\$ per MT | IM% - Range |
|---|----------------|-------------|
| ICL | *** | 55-70 |
| All other exporters/ producers from Israel | *** | 60-75 |
| All exporters/producers from Taiwan | *** | 30-45 |

J. CONCLUSIONS:

125. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:
- The product under consideration has been exported to India from the subject countries below associated normal values, thus resulting in dumping of the subject goods from the subject countries.
 - The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods.
 - The material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports of the subject goods from the subject countries.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

126. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate 'injury' caused to the domestic industry by the unfair trade practices of 'dumping' so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not

restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers.

127. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury caused to the domestic industry. On the contrary, imposition of the anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

L. RECOMMENDATIONS

128. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Act and the AD Rules and having established definitively positive dumping margins concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries and as well as material injury thereof to the domestic industry caused by such dumped imports; the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset the dumping and 'injury' in the instant matter. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duties concerning imports of the subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.
129. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed concerning all imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty table

| S. No. | Heading/ Subheading | Description of goods | Countries of Origin | Countries of Exports | Producer | Exporter | Duty Amount In US \$ per MT |
|--------|------------------------|-----------------------------------|---------------------|----------------------|------------------|------------------------------|-----------------------------|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) | (8) |
| 1 | 2809-2010 | Phosphoric Acid of all grades and | Israel | Israel | M/s Rotem Amfert | M/S Israel Chemicals Limited | 174.06 |

| | | concentrations (excluding Agriculture/ Fertiliser Grade) | | | Negev. Ltd. | | |
|---|------|--|---|--------------------------------|---|-----|--------|
| 2 | -do- | -do- | Israel | Israel | Any combination of producer & exporter except at Sr. No.1 | | 194.51 |
| 3 | -do- | -do- | Any country other than countries attracting Anti- dumping duty | Israel | Any | Any | 194.51 |
| 4 | -do- | -do- | Israel | Any other than Israel | Any | Any | 194.51 |
| 5 | -do- | -do- | Taiwan | Taiwan | Any | Any | 116.45 |
| 6 | -do- | -do- | Any country other than countries attracting Anti- dumping duty | Taiwan | Any | Any | 116.45 |
| 7 | -do- | -do- | Taiwan | Any other than Taiwan | Any | Any | 116.45 |

M. APPELLATE PROCEDURE

130. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority